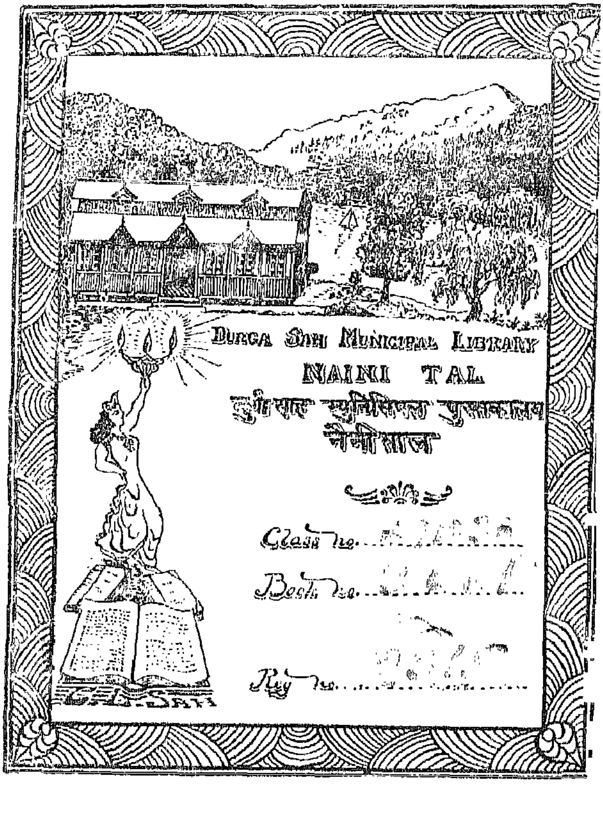

DURGA SAH MUNICIPAL LIBRARY
NAINI TAL
दुर्गासाह म्युनिसिपल पुस्तकालय
नैनीताल
Class no.
Book no.
Reg no.

प्रायश्चित

प्रायश्चित

(मोपासां की १४ श्रेष्ठ कहानियों का संग्रह)

अनुवादिका

सन्तोष गार्गी

आत्माराम एण्ड संस

पुस्तक प्रकाशक तथा विक्रेता

काश्मीरी गेट - दिल्ली

रामलाल पुरी
आत्माराम एण्ड संस,
काश्मीरी गेट, दिल्ली,

प्रथम संस्करण
मूल्य १।।।)

मुद्रक:
यूनिवर्सिटी ट्यूटोरियल प्रेस
काश्मीरी गेट, दिल्ली

एक दो मोटी बातें

एक-दो मोटी-मोटी बातें

जब से मानव-जीवन उगा उसकी कहानी लोग तब से ही कहते और लिखते चले आ रहे हैं। उसके विकास के साथ उसके चित्रण-कला का भी विकास हुआ परन्तु अपनी कहानी कहते-कहते मनुष्य ने कभी अपने स्तर से नीचे खिसक कर, पशुओं की गाथा गूँथ डाली, तो कभी उससे ऊँचे उड़ कर देवताओं की दास्तान धुन डाली। उसके इस साहित्यिक प्रयास में उसके बुद्धि बल और उसकी कल्पना शक्ति का कुछ ऐसा संगम हुआ कि उससे नैतिकता प्रचारक और आचरण-सुधारक कथानक का ही अधिकतर जन्म हुआ। क्या उस घोर सनातन यूनान में और क्या इस घोर प्राचीन भारत में, एक ही कैंडे की हवा बही और उसके झोंकों में जिस वस्तु की बहुत बहार थी वह थी कृत्यों और उनके परिणामों की असाधारणता तथा विचित्रता। पुरातन भारतीय साहित्य के सहारे आधुनिक सिनेमा ने, अगणित नर नारियों का मनोरंजन किया और अतुलनीय सम्पत्ति बटोरी। उसकी इतनी खोज तथा लूट के बाद भी पुरानी गाथाओं में इतनी सामग्री भरी पड़ी है कि उस भंडार से अब भी बहुत कुछ माल निकाला जा सकता है। परन्तु वह माल जिस ढब का है उससे आज की गंभीर और घनी मानसिक पिपासाएँ तथा बिभुक्षाएँ बुझ नहीं सकतीं।

आधुनिक-काल में—उसमें मैं केवल बीसवीं शताब्दी ही की नहीं किन्तु उन्नीसवीं शताब्दी की भी गणना करता हूँ—लोगों

ने ऐसे साहित्यिक दर्पण की माँग की जिसमें कि वो अपनी कर्म शक्ति और भावना गति तथा दोनों गतियों का गुत्थमगुत्था और साथ ही प्रवाह का स्पष्ट चित्र देख सकें। उनकी इस माँग की योरुप के सिद्धहस्त कलाकारों ने, जिनको मनोवैज्ञानिक भूल भुलैयों में गहरी पैठ थी और जिनकी लेखनी से प्रतिभा की मूसलाधार वृष्टि होती थी, अच्छी तरह पूर्ति की। इस पूर्ति का अर्थ था साहित्यिक क्षेत्र में वास्तविकता युग का पूर्णोदय। शब्दों के सहारे जीवन की विविध झाँकियां लोगों के सम्मुख प्रस्तुत करते समय, इन कलाकारों का उद्देश्य ना तो उनको, दैविक शक्तियों की चर्चाओं द्वारा, बादल-घर में ला बिठाने का होता था, न बुरे भले की धार्मिक छान बीन द्वारा, सीख की छुट्टी देने का। वे तो यदि कहीं कभी पशुओं के हृदय, मस्तिष्क और शरीर की हरकतों का उल्लेख करते थे, तो वहाँ भी हूबहू-वर्णन के आदर्श से च्युत नहीं होते थे। उन्होंने जिस साहित्य का सृजन किया वह संसार की प्राण-सी-प्यारी निधि है, इसलिए न कि उसमें उसकी आत्मा के असंख्य प्रतिबिम्ब हैं। इस ढंग के साहित्य का हिन्द में भी अभाव नहीं है, क्योंकि, अंगरेज़ी जैसा प्रशस्त माध्यम पाकर, उसकी लहर इस देश में धूम से आई और उसने राष्ट्र-भाषा हिन्दी के साथ ही कई प्रांतीय भाषाओं को सारगर्भित कर दिया। यहाँ अनेक ऐसे उपन्यास रचयिताओं और गल्पलेखकों का जन्म और उत्थान हुआ जिन्होंने भारतीय जीवन की बारिकियों और विडम्बनाओं, उलझनों और विषमताओं के दिव्य चित्र खींच डाले। परन्तु न तो ऐसे चित्रों का हमारे यहाँ ऐसा बाहुल्य है जैसा कि पश्चिम में दृष्टि गोचर होता है; न उनके

बनाने वालों की ऐसी क्षमता दरसाता है जैसी योरुपियन साहित्य से फूट-फूट पड़ती है।

आखिर ऐसे साहित्याचार्यों का घर तो योरुप में ही है। कहने को उस महाद्वीप के प्रायः सभी मुख्य भागों में और ब्रिटिश द्वीप में भी, उपन्यास और गल्प लेखन कला परिपक्वता और प्रखरता की चोटी पर पहुँच चुकी है। परन्तु रूसी और फ्रांसीसी भाषाओं के आँचल में तो अद्भुत रत्न हैं जो अपनी लाखों रश्मियों द्वारा जीवन के लाखों पन्नों पर रहस्यभेदी प्रकाश डालते हैं। मोपासां, जिन की कुछ अनुपम और-अमूल्य कहानियों का हिन्दी अनुवाद श्रीमती संतोष गार्गी ने इस पुस्तक के पन्नों में बड़ी सरलता और सुन्दरता से गूँथा है, फ्रांस क्या, संसार के अमर गल्प-लेखक-सम्राटों की पंक्ति में प्रतिष्ठित हैं उन के गल्पों को पढ़ कर हिन्दी पाठक सहज ही में यह अनुमान कर सकेंगे कि ताल-तलैयों तथा सागर-महासागर के तैराकों तथा डुबकीमारों की कला और संचय - शक्ति में कितना अंतर होता है। मोपासां, मोपासां ही था - दूसरा मोपासां न हुआ न होगा। महाशय मोपासां जिस चतुरता से निम्नतम समाज के मन में घुस जाते थे उसी पटुता से वे उच्चतम समाज की आत्मा में धँस जाते थे और वहाँ से ऐसी भेद - कौड़ियाँ लाकर लोगों के सामने रख देते थे कि लोग दाँतों तले उँगली रख कर स्तब्ध होजाते थे। गहन विषय की गहनता को सरल भाषा में प्रगट करके सरल बना देना मोपांसा का ही काम था। श्रीमती संतोष गार्गी ने मोपांसा की भाषा की रवानगी और प्रगल्भता को विघ्नबाधाओं से बचाते हुए, उसकी सादगी जिस प्रकार बहुत कुछ निष्कलंक रखी है, वह स्तुत्य है परन्तु भाषा की

ख़ूबी तो केवल माध्यम की ख़ूबी है। स्वाद लेने वाला गूदा तो मोपासां रचित चित्र है। जीवन, जन्म और मरण इन दो बिंदुओं के बीच वाली, कोई सीधी रेखा नहीं है। वह टेढ़ी-मेढ़ी, पतली-मोटी रेखा है वह भी अटूट नहीं। कभी-कभी तो वह भद्दी भोंड़ी होने के साथ ही अत्यन्त टूटी फूटी होती हैं। मोपासां ने उन कइयों का हृदयस्पंदक; हृदय ग्राही और हृदय विदारक रूप खींचा है। अपनी प्रेयसी से उत्पन्न अपने पुत्र की अपने हाथों ही हत्या—ऐसा भी इस मनोरम संसार में होता है। अपनी सुन्दर स्त्री से अकारण इतनी इर्ष्या कि वह खोज कर झूँठमूठ अपने ऊपर लांछन लगा ले और पति को महीनों संदेह की भट्टी में भूने-यह रीति भी विवाहित जीवन में बरती जाती है। अपनी न्याय प्रियता के लिए विख्यात न्यायाधीश यकायक जगी हिंसक मनोवृत्ति से प्रेरित होकर, पहले एक नन्हा पक्षी मारता है, फिर एक कोमल बच्चा और फिर एक हट्टा कट्टा मल्लाह। उसके इन रोमाँचकारी, जघन्य कृत्यों का तब तक किसी को कुछ पता नहीं चलता, जब तक कि उसके मेज़ से रहस्योद्घाटनी डायरी नहीं प्राप्त होती। इसी प्रकार एक विधवा—वह भी वृद्धा विधवा—जिसको लोग दूध की धुली साध्वी समझते हैं पैसे दे दे कर अपनी काम वासना तृप्त करती है। परन्तु सत्य का लोगों को तब ज्ञान होता है जब उसके भृत्य-प्रेमियो में खटपट हो जाती है। कोई भोली भाली ग्रामीण लड़की, भुलावे में पड़ कर,कहीं आत्म सम्पर्ण कर देती है; जिसका दुष्परिणाम यह होता है कि वह एक भयानक विकृत संतान की जननी बनती है। उसे वह सरकस वालों के हाथ बेच देती है। फिर तो ऐसी ही संतानोत्पत्ति उसके उदर पोषण की विधि बन

जाती है। मोपासां महोदय की विशेषता ही यह है कि वह जीवन को हरा ही हरा और उज्ज्वल ही उज्ज्वल समझने और कहने वाले भुलक्कड़ों और बुझक्कड़ों का भ्रम और दर्प दूर करते हैं। उनके वरदान को हिन्दी पाठकों के लिए सुलभ बनाने का प्रयत्नकर के श्रीमती संतोष गार्गी ने सचमुच बड़े पुण्य का काम किया है।

सम्पादक 'टाईमज ऑफ़ इन्डिया' जंगबहादुरसिंह

जूलाई १६, १६५०

मोपासां का परिचय

पहलेपहल मैंने मोपासां की कहानियाँ सन् १९४४ में पढ़ीं-और तभी मैं इस महान कलाकार की कृतियों से परिचित हुई। जब मैंने 'एकाकीपन' और 'पागल की डायरी' जैसीकहानियां पढ़ीं, तो मेरे मन में इनका हिन्दी में अनुवाद करने की एक तीव्र लालसा उत्पन्न हुई-जिसे रोकना मेरे लिए अपनी भावनाओं के प्रति अन्याय करना था

समय बीता! मैंने देखा कि इनकी कहानियों के अनुवाद के कई संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं- परन्तु फिर भी अनेकों ऐसी उत्कृष्ट कहानियाँ थीं जिनका अनुवाद नहीं हुआ था। उन्हीं में से मैंने ये १४ प्रतिनिधि कहानियाँ इस संग्रह में गुंफित की हैं।

मोपासां के विस्तृत विचारों की गहराई, सूक्ष्म ग्रहण शक्ति की महत्ता तथा मानव मन की गहराईयों को कुरेदने के अद्भुत साहस ने मेरे मन में उनके वैयक्तिक तथा पारिवारिक जीवन के विषय में कुछ जानने की इच्छा उत्पन्न की और उनके जन्म के विषय में जानने से पूर्व मैंने उनके पागल होकर मरने की कथा पढ़ी। स्वयं उनका अंत भी उनकी कुछ कहानियों के पात्रों के अन्त की नाईं ही भयानक, कठोर तथा शोकजनक था। प्रकृति का कितना बड़ा हास था! वह व्यक्ति-जिसने मानव-समाज के रहस्यों की वास्तविकता के इतने सजीव और वास्तविक चित्र खींचे-स्वयं अपने जीवन की पहेली को सुलझाने में असमर्थ-पागल के रूप में स्वर्ग सिधारा!

गाए.डी. मोपासां सन् १८५० में नारमंडी में, मिरोमैसलिन, चैटयू में उत्पन्न हुए। पिता की ओर से इनका खानदान परम्परा से धनी तथा सम्पन्न था—परन्तु दिवाला निकल जाने के कारण इनके पिता की स्थिति साधारण थी। इनकी माता मध्यम श्रेणी के परिवार से थीं जिनमें कलात्मक लगाव था। गाए के व्यक्तित्व में स्वभाव की चंचलता, भावों की कोमलता, विश्लेषक की सूक्ष्म ग्राह्यता और कवि के सौन्दर्योपासन के चित्रण का विचित्र मिश्रण था।

इनके पिता बड़े विलास प्रिय थे।-और माता एक स्वप्नद्रष्टा थीं जो निरन्तर अपने उस कवि भाई की स्मृति में खोई रहतीं—जिसका साहित्यिक जीवन अकाल मृत्यु के कारण पूर्णतया प्रस्फुटित न हो सका था। अपने भाई को आदर्शरूप में सामने रख, वे अपने पति के विकृत व्यक्तित्व पर दयात्मक दृष्टि से देखती थीं। उनका एक-मात्र आश्रय यही आशा थी कि गाए बड़ा होकर एक महापुरुष बनेगा।

मोपासां बड़े भावुक थे। उद्विग्नता तथा बेचैनी की अवस्था में उन्हें समुद्र तट पर विशेष शान्ति मिलती। समुद्र उनके लिए प्रकृति के उल्लास तथा प्रचण्डता का स्वरूप था। शाम के धुंधलके में दो कुत्तों को साथ लिये वे सागर तट की गुफाओं के आस पास घूमते रहते और चांदनी रातों में मछलियां पकड़ने के लिए जाते हुए धीवरों के साथ हो लेते।

गांव के उत्सवों पर ग्रामीण युवतियों के साथ नाचने और सराय में बैठे जान या अनजान, किसी भी व्यक्ति के साथ दो टुकड़े पनीर और साइडर* पीने में उन्हें विशेष आनन्द मिलता था।

एक प्रकार की शराब

समुद्री डाकूओं के साथ टीलों पर खड़े हो, दूरबीन द्वारा दूर क्षितिज तक फैले सागर के रमणीय दृश्य देखना, उन्हें अत्यन्त प्रिय था। एक जगह उन्होंने लिखा भी है, "मेरी नसों में समुद्री डाकूओं का खून है। वसंत की सुहावनी प्रातः में अनजान टापूओं के लिए नाव छोड़ देने से अधिक मेरे लिए कोई आनन्द नहीं।" परन्तु आह! सौन्दर्य और कलात्मक प्रदेशों को पार करते हुए अन्त में उनकी नाव उन्माद के टापू पर जा लगी।

इनकी माता ने इन्हेंसुधारने के लिए यीटोट में पादरियों के शिक्षणालय में भेज दिया। परन्तु इनकी उस ओर रुचि न थी—और शीघ्र ही निरन्तर शिक्षणालय के नियम भंग करने के अपराध में इन्हें वहाँ से निकाल दिया गया!

तब ये कानून की शिक्षा पाने के लिए दाखिल हुए—वहाँ किसी न किसी तरह परीक्षाओं में पास होते गए, परन्तु उन्हीं दिनों—१८७० मे जर्मनों ने सीडान के रास्ते से फ्राँस पर आक्रमण कर दिया—और ये फ्राँसीसी सेना के रसद विभाग में भर्ती हो गए। सैनिक जीवन से ये बहुत निराश हुए। जब फ्राँसीसी सेनायें पराजित हो पीछे हटने लगीं तो मोपासाँ शोपनहार पढ़ने, प्रेम कवितायें लिखने और जर्मनों से बदला लेने की कल्पनाओं में तल्लीन रहने लगे।

युद्ध समाप्त होने पर ये नौकरी की तलाश में पैरिस गए और वहाँ समुद्री विभाग में क्लर्क भर्ती होगए। वहाँ ये ब्रह्माण्ड के दूसरे किनारे पर उड़ती हुई चिंगारी की नाईं जन समूह के मध्य में रहते हुए भी—एकाकी रहने लगे। उस जीवन के विषय में उन्होंने लिखा है ——,,

"हम सब एक रेगिस्तान में विचरण कर रहे हैं। यहाँ कोई एक दूसरे को नहीं समझता।"

"नहीं, कोई किसी को नहीं समझता—मनुष्य कुछ ही कहे, कुछ ही करे,—कोई दूसरा व्यक्ति उसे समझ नहीं सकता। पृथ्वी को क्या पता कि उन सितारों में—जो ब्रह्माण्ड के उस पार एक आग की चिन्गारी की तरह उड़ जाते हैं—क्या हो रहा है। हम तो केवल उनकी क्षणिक चमक ही देख सकते हैं। असीमता में खोये—अन्य अथाह सितरों के विषय में ही ज़रा सोचो तो'''जो परस्पर इतने निकट हैं कि वे एक ही पूर्ण आकार में दिखाई देते हैं—मानो वे एक ही शरीर में अनेक अणुकणिकायें हों— परन्तु फिर भी वे एकाकी ही तो हैं।

"इस प्रकार हर एक व्यक्ति यह नहीं जान पाता कि दूसरे के दिल में क्या विचार हैं, उसे क्या दुख है! हम सितारों से भी अधिक—एक दूसरे से दूर हैं—और उनसे कहीं अधिक एकाकी हैं'''क्योंकि विचारधारा अगाध है—अगम्य है।"

रात को मैदानों में घूमते हुए, गैस लैम्पों के मध्यम प्रकाश में वे राह जाते लोगों के चेहरों की ओर आँखें गाड़-गाड़ कर देखते—कि शायद कोई परिचित मिल जाय-अपने जैसी कोई आत्मा मिल जाय-परन्तु वे निराश हो जाते। उनकी एकमात्र साथिन सीन नदी थी। धूलीवेला, सायंकाल, इतवार-अथवा एकाकीपन के लम्बे घंटों में, नदी में ऊपर से नीचे और नीचे से ऊपर की ओर नाव चलाने से उन्हें विशेष आनन्द मिलता था!

एक जगह उन्होंने लिखा है—"मैं नाव खेवता हूँ और नहाता हूँ, नहाता हूँ और नाव खेवता हूँ। चूहे और मेंढ़क रात को किसी

भी समय मेरी नाव की लालटेन देखने के इतने अभ्यस्त हो गए हैं कि मुझे नमस्कार करने के लिए वे पानी से ऊपर निकल आते हैं। मैं अपनी बड़ी नाव को ऐसे ही सहज स्वाभाविक ढंग से चलाता हूँ जैसे कोई दूसरा डोंगी चलाता है और बोलिवर्ड के मेरे मित्र-नाविक, आधी रात के समय मुझे 'रम' का गिलास मांगते देख चकितहो उठते हैं। "

इन्हीं दिनों ये मैडम बोवेरी के रचयिता गसटव फ़्लोबर्ट से मिले। इस उपन्यास के कारण फ़्लाबर्ट पर मुकद्दमा चल रहा था—और वे एक प्रतिबंधित जीव की नाईं रह रहे थे-जिसे कोई छूना तक नहीं चाहता। परन्तु वे इसकी तनिक भी परवाह न कर, जीवन के कपट और बनावटीपन को लगातार अपने विषैले तीरों से छेदते जा रहे थे।

सात वर्ष तक निरन्तर हर इतवार मोपासां अपनी कवितायें, नाटक और कहानियाँ इस धुंधले नेत्रों वाले लेखक के पास लाते रहे—और जब तक सफल लेखक न बन गए, उन्हें निर्दयतापूर्वक फाड़ते चले गए! फ़्लाबर्ट ने ही उन्हें साहित्य सफलता का यह नियम सिखाया—"गौर से देखो" उन्होंने कहा, "और गौर से देखते ही चले जाओ।"

फ़्लाबर्ट की अचानक मृत्यु पर गाए को बहुत दुःख हुआ। जीवन की नश्वरता और क्षणभंगुरता को देख उनका दिल कांप उठा। परन्तु इन असह्य मानसिक वेदनाओं और निराशाजनक भावों के बावजूद प्रकृति की ओर उनका एक स्वाभाविक लगाव था। उन्होंने अपने एक लेख में लिखा है—"मैं आकाश को एक पक्षी की तरह, जंगल को शेर की तरह, छट्टानों को पहाड़ी मृग की तरह, हरि-हरि

गहरी घास को घोड़े की नाईं और स्वच्छ पानी को मछली की नाईं प्यार करता हूँ। मुझमें जानवरों की सी मूल प्रकृतियां हैं और तुच्छ जीवों की कुछ अनुभूतियां तथा इच्छायें हैं। मैं पशुओं और पक्षियों की तरह संसार को प्यार करता हूँ —तुम मानवों की तरह नहीं!"

अपने दफ़्तर के साथियों को वे अश्लील कहानियाँ सुनाते, निसंकोच वासना सम्बन्धी मज़ाक करते और पार्टीयों में स्त्रियों को द्विभाषी मज़ाक करते—जिससे पैरिस निवासी उन्हें "अश्लील युवक" कहने लगे। वे बहुत निर्लज्ज थे – और प्रतिभाशाली भी। इसी प्रतिभा के कारण उन्हें कई कठिनाईयों का सामना करना पड़ा।

एक बार एक परोलीतारी चित्रकार के स्टूडियों में इन्होंने एक ऐसा नाटक खेला, जिससे सभ्य पैरिस निवासी इनसे डर कर भागने लगे। इसी प्रकार एक अश्लील कविता छपवाने के कारण पुलिस ने उनका न्यायालय में स्वागत किया।

तीव्र कल्पनाओं से धीरे-धीरे उनका मानसिक विकार बढ़ने लगा। कई बार उनके सिर में ज़ोर का दर्द होने लगता जिससे छुटकारा पाने के लिए वे शीतऋतु के हिमवत ठंडे पानी में गोते लगाते। शीतऋतु में उनकी उद्विग्नता और सिर दर्द और भी बढ़ जाते थे। एक बार उन्होंने अपनी स्नेहमयी माता को लिखा,—"दिसम्बर से मुझे भय लगता है ...... यह काला मास है — मनहूस और दुर्घटनाओं-भरा! — दफ़्तर में हमें लैम्प मिल गए हैं — एक महीने तक सेंकने को आग भी मिला करेगी। इन दिनों जब मैं अपनी मेज़ पर बैठा, सामने एकाकी जलते हुए निराश लैम्प की ओर देखता हूँ तो

मुझे इतना दुःख होता है कि समझ नहीं आता क्या करूँ, किधर जाऊँ ? "

अब शीशे में अपनी आँखें देख उनका मन बेचैन हो उठता। उनका मुखाकार क्षीण पड़ता जा रहा था, मानों उनकी आँखें अपने ही किसी नियमानुसार लगातार मुँह को खाये जा रही हों। प्रातः जब वे शीशे के सामने शेव करने लगते तो उनकी आँखों और शीशे के बीच एक धुंधलापन सा छा जाता — और वे अपने पीड़ित मस्तक को हाथों में थाम लेते। तब उन्हें बोध होने लगा कि वे ही संसार की हर वस्तु को कण-कण करके क्यों देखते हैं ? क्या किसी को सन्देह न हुआ कि धीरे-धीरे उनके अपने मन के अणु ही बिखरते चले जा रहे हैं ? उनकी चेतन विचार धारायें अचेतनता में विलीन हो गईं और उनके विचारों का कण-कण लोप होने से पूर्व अपने साथी को दीप्यमान करने लगा। विकास की सीढ़ीयां चढ़ते-चढ़ते कला के उच्च शिखर पर खड़े हो, उन्हें मनुष्य का बचपन मानव जाति के विकास की विभिन्न अवस्थायें — और उससे भी दूर — अनन्त की कोख में पड़े सीमित प्राणियों के निरन्तर संघर्ष की झलक दिखाई देने लगी।

तब आटोस्कोपिया के रोग ने उन्हें आघेरा। कई बार उन्हें अपना ही रूप इतना स्पष्ट दिखाई देता कि मानों वे स्वयं को शीशे में देख रहे हों। एक बार जब संध्या के समय वे अपने कमरे में दाखिल हुए, तो उन्हें अपना ही प्रतिरूप कुर्सी पर बैठा, वही, पुस्तक पढ़ता नज़र आया—जो वे जाते समय मेज़ पर छोड़ गए थे। इस घटना को उन्होंने कहानी का रूप दिया, जिसमें अपने प्रतिरूप से ग्रस्त एक पुरुष का चित्रण किया। एक बार जब वे मेज़

पर बैठे लिख रहे थे—तो उनका प्रतिरूप उनके साथ आकर बैठ गया और जो कुछ वे लिखना चाहते थे—उन्हें लिखाने लगा। वे भय से कांप कर चिल्ला उठे—और उस भ्रम को हाथ से धकेलने का प्रयत्न करने लगे।

उनके रक्त में मौत की ठण्डक फैल गई। सर्दी से बचने के लिए वे कांपते हुए आग का आश्रय लेते—यहाँ तक कि ग्रीष्मकाल में भी उनके कमरों में आग जलने लगी। उन्होंने एक छोटी सी समुद्री नौका खरीद ली और उसमें चढ़कर भूमध्यसागर में चक्कर काटते। इन्हीं दिनों अफ्रीका के मरुस्थलों का भी उन्होंने खूब भ्रमण किया। परन्तु जब भी वे जीवन की क्षण भंगुरता के विषय में सोचते तो इनका मन कांप उठता। जब उन्हें मक्खियों का ध्यान आता—जो कुछ ही घंटे जीती हैं; जानवर—जो कुछ वर्ष; और सितारे — जो कुछ शताब्दियाँ ही जीवित रहते हैं—तो वे गहरे विचारों में डूब जाते। और वे प्रायः सोचते कि कीड़े और ब्रह्माण्ड में अन्तर ही क्या है।

इन्हीं दिनों मौत से भयभीत हो उन्हों ने कहा—"अपनी मौत मुझे इतनी निकट नज़र आती है कि मैं उसे अपने हाथों से परे धकेलना चाहता हूँ। चारों ओर मुझे मौत ही मौत दिखाई देती है। मार्ग में रौंदे पड़े कीड़े, वृक्षों से गिरते हुए पत्ते और किसी मित्र के सफ़ेद बाल, मुझे टंकार-टंकार कर कहते हैं — 'इधर देखो!' तब जो कुछ मैं देखता हूँ जो खाता पीता हूँ और जिससे भी प्रेम करता हूँ—धवल चाँदनी, सूर्य की स्निग्ध किरणें विशाल सागर, महान नदियां—और ग्रीष्मकालीन सन्ध्या की सुरभित समीर—सभी नीरस हो जाते हैं।"

धीरे-धीरे उनका मानसिक विकार बढ़ गया। मेज़, कुर्सियां, लैम्प—उन्हें चलते फिरते जानवर लगने लगे। जब वे ज़मीन पर पाँव रखते तो उन्हें वह फुरकती हुई अनुभव होती। एक बार जब उनका नौकर उन्हें खेतों के बीच में से ले जा रहा था तो उन्हें एक बहुत बड़ा क्रास दिखाई दिया, जिसे देख कर मोपासां ने कहा "आह! .फ्रैन्को! ईसा ३३ वर्ष की आयु में ही शहीद हो गए थे—और मैं ४१ वर्ष का होने चला हूँ!"

और अन्त में—नये वर्ष के दिन सन् १८९३ में मोपासाँ ने अपने माथे पर रिवाल्वर सींध, उसका घोड़ा दबा दिया—परन्तु रिवाल्वर खाली था। तब उन्होंने अस्तुरे से अपना गला काट लिया। जब नौकर चिल्लाता हुआ कमरे में आया तो उन्होंने शान्त स्वर में कहा—"देखो, .फ्रैन्को! मैंने अपना गला काट लिया है। यह मेरा पागलपन है।'

और इस प्रकार मानव-समाज के लिए—प्रेम और घृणा, ईर्ष्या और द्वेष, विडम्बना और सामाजिक खोखलेपन तथा मानव मन की रहस्यमयी उलझनों के विषय में कल्पनाओं की एक अमूल्य निधि छोड़ वे सदा के लिए इस संसार से चल बसे।

सन्तोष गार्गी

कहानी सूची

प्रायश्चित

मोनसियर बैडोन लैरिमिन्से के शव के साथ कस्बे के सभी बड़े-बड़े लोग श्मशान भूमि तक गए। मृत्यु के अवसर पर पढ़े गए अन्तिम शब्द हर एक के स्मृति पटल पर अंकित हो गए—"एक माननीय महा आत्मा हमसे बिछुड़ गई है।"

बातचीत के ढंग से, आदर्शों के पालन, आकृति, रहन, सहन, दाढ़ी की सजावट व हैट के कट से, वह सचमुच माननीय जान पड़ता था। नियम के विरुद्ध उसने कभी कोई शब्द नहीं कहा। शिक्षा के दो चार शब्द कहे बिना कभी दान नही दिया, तथा आशीर्वाद देने के लिए ही सदा उसका हाथ ऊपर उठा।

उसके दो बच्चे थे—एक लड़का और एक लड़की। पुत्र कस्बे की पंचायत परिषद में था। कन्या का विवाह एक प्रतिष्ठित वकील, मोनसियर पोयरल डी ला वाल्टे के साथ हो चुका था। अतः अब वह स्वच्छन्दतापूर्ण अमीरों वजीरों के ऊंचे समाज में घूमती फिरती थी।

प्रिय पिता की मृत्यु पर दोनों बच्चों को बहुत रंज हुआ—

दोनों ही बाप को बहुत प्यार करते थे। मृत पिता को दफ़नाने के पश्चात्—वे भरे हुए मन से उसी शून्य घर में वापिस आये, जहाँ उनके पिता स्वर्ग सिधारे थे।

पुत्र—पुत्री, और जंवाई—तीनों ने घर पहुँच, कमरे के किवाड़ बन्द कर लिये और दिवंगत पिता का वसीयतनामा पढ़ने लगे। मरणासन्न पिता ने मरते समय लिफ़ाफ़े पर यह इच्छा लिखी थी, कि वे तीनों उसके शव को श्मशान भूमि में दफ़नाने के बाद वसीयतनामा खोलें।

मोनसियर डी ला वाल्टे, वकील होने के नाते ऐसे कार्यों से परिचित था। उसी ने लिफ़ाफ़ा खोला, और शुष्क स्वर में—जैसे प्रायः वसीयतनामे पढ़े जाते हैं पढ़ने लगा।

"मेरे बच्चो! मेरे प्यारे बच्चो! जब तक मैं तुम्हारे सम्मुख पश्चाताप न कर लेता—मुझे परलोक में भी शान्ति न मिल सकती थी। आज मैं तुम्हारे सम्मुख अपने उस अपराध को स्वीकार करता हूँ, जिसके कारण मेरा जीवन भारमय हो रहा था। मेरे उस अपराध ने, मेरे सारे जीवन को ज़हरीला बना दिया था। हाँ.......... मैं अपराधी हूँ।—मैंने एक भयानक अपराध किया है।

"उस समय मेरी आयु छब्बीस वर्ष की थी कुछ ही समय पहले मुझे पेरिस-बार में बुलाया गया था। अन्य प्रान्तीय युवकों की तरह मैं भी परिचितों, मित्रों तथा सम्बन्धियों के बिना—अकेला ही वहाँ रहने लगा।

"तब मैंने एक मिस्ट्रैस रख ली। कितने ही लोगों को इस शब्द से घृणा है—परन्तु कुछ लोग ऐसे भी हैं जिनके लिए एकाकी जीवन असम्भव है।—मैं भी उन्हीं में से एक हूँ। घर पर अंगीठी

सेंकते हुए एकाकीपन का अनुभव कर मुझे भयानक रंज होता। ऐसा ज्ञान पड़ता मानों पृथ्वी पर मैं अकेला हूँ—बिलकुल अकेला–और धुंधले भय एवं शंकायें मुझे आ घेरतीं। पतली सी वह दीवार जो पड़ोसी के घर को मेरे घर से अलग करती थी—मुझे उससे उतना ही दूर रखती थी जितना मेरी खिड़की की ओट से नज़र आ रहे सितारे। तब मुझे एक ज्वर सा आ घेरता—अधीरता, भय और बेचैनी का बुखार—और मूक दीवारें मुझे भय दिखलातीं। मूकता की बेचैनी हमारे शरीर तक ही सीमित नहीं रहती, आत्मा तक को घेर लेती है।—जब मेरी मेज़ आदि लकड़ी के सामान से किड़-किड़ाहट का शब्द उठता, तो हृदय में एक कंपकपी सी दौड़ जाती—क्योंकि एक दुखदायी स्थान पर हर ध्वनि, हर शब्द—विचित्र सुन पड़ता है।

"इस भयानक सूनेपन में प्रायः असमर्थ हो, घबड़ाते हुए मैं पागल हो—बड़बड़ाने लगता···अर्थहीन शब्द कहता············ क्योंकि मन कोई आवाज़ करना व सुनना चाहता था। ऐसे अवसरों पर मेरी आवाज भी विचित्र हो उठती—और मैं डर जाता। एकाकी स्थान में अपने आप से बातें करना—कितना भयावह है। अपनी ही आवाज़ एकाकी में, किसी दूसरे की आवाज़ ज्ञात पड़ती है······ एक अनजान आवाज़, एक अपरिचित ध्वनि, बिना कारण बोलती हुई—किसी भी प्राणी को सम्बोधित न कर सकती हुई, हवा को चीरती हुई···शून्य में गूंजती हुई आवाज, जिसे सुनने के लिए कोई भी व्यक्ति उपस्थित न हो। क्योंकि कमरे की मूकता में शब्दों के गूंजने से पूर्व ही वक्ता जानता है कि वह क्या कहेगा। जब वही शब्द कमरे की मूकता में प्रतिध्वनित होते हैं···तो केवल उनकी

एक गूंज सुन पड़ती है—वह विचित्र गूंज जो केवल दिमाग ही सुनता है।

"अतः मैंने—एक मिस्ट्रेस रख ली। पैरिस की कम वेतन पाने वाली युवतियों के समान वह भी इतना कम वेतन पाती कि कठिनता से निर्वाह कर पाती थी। वह साधु स्वभाव की एक प्रिय किशोरी थी। उसके मां-बाप पोयसे रहते थे—कभी-कभी उनके पास कुछ दिनों के लिए वह चली आती थी।

"बिना किसी घटना के एक वर्ष तक मैं उसके साथ रहा। सोचा'''जब कोई विवाह योग्य अच्छी लड़की मिली तो इसे छोड़ दूंगा। उस दशा में उसे कुछ मासिक वेतन देने की ठान रखी थी—क्योंकि हमारी श्रेणी के लोगों में यही प्रचलित है कि स्त्री के प्रेम का ऋण चुकाया जाय। यदि कोई स्त्री निर्धन हो तो पैसों से, यदि धनी हो तो उपहारों से।

"परन्तु'''एक दिन'''एक दिन उसने मुझे बताया कि वह गर्भिणी है। सुनकर मैं अवाक रह गया। क्षण भर में ही मैंने देखा '''मेरा समस्त जीवन नाश होता हुआ। वह बंधन की जंजीर''' अब मुझे हर जगह, हर परिचित घर में, स्वयं अपने ही घरेलू जीवन में, वृद्धावस्था में—हर समय साथ-साथ घसीटनी पड़ेगी।

"इस स्त्री की जंजीरें...जिनके साथ इस 'भविष्यवर्ती बच्चे' के कारण मैं जकड़ गया हूँ, जीवन भर मुझे रेंगनी पड़ेगी। इस बच्चे का पालन-पोषण, देख-भाल सब मुझे ही करना होगा।—और फिर सदा के लिए इस बच्चे तथा समस्त संसार की आँखों में धूल झोंकनी पड़ेगी। यह गुप्त बदनामी की बात छिपानी ही चाहिये! इस समाचार से...अनजाने में ही...एक खूनी इच्छा मेरे

अन्तर्मन में उत्पन्न हुई। यह इच्छा—जिसे मैंने कभी व्यक्त न किया। यह इच्छा···किवाड़ों के पीछे छिपे पुरुष के शब्द की नाईं बाहिर निकलना चाहती थी। ओह! संभवतः कोई दुर्घटना हो जाय···! कितने ही इस प्रकार के अभागे शिशु जन्म से पूर्व ही मर जाते हैं।

"परन्तु···मैं यह कदापि नहीं चाहता था कि मेरी प्रेमिका की मृत्यु हो जाय। ग़रीब लड़की···मैं उसे अब भी प्यार करता था··· परन्तु उस दूसरे जीव···भावी नन्हें शिशु की अवश्य जन्म से पूर्व ही मौत चाहता था।

"बच्चा उत्पन्न हुआ अब मेरा छोटा सा ब्रह्मचारी कमरा एक घराना बन गया···एक नकली फ़ैमिली···जिसमें एक नन्हा सा शिशु था। यह एक अस्वाभाविक सी बात थी। बच्चा—अन्य बच्चों की तरह ही था। ···परन्तु मेरे लिए उसे प्यार करना संभव न था। पिता प्रायः बच्चों से देर तक प्यार नहीं कर पाते उनमें बच्चों के प्रति वह स्वाभाविक चाव नहीं होता। उनका प्यार तो आहिस्ते आहिस्ते बढ़ता है और उनकी आत्मायें धीरे-धीरे नवजात शिशुओं की ओर झुकती हैं।

"एक वर्ष और बीत गया। अब मैं अपने छोटे से घर से दूर भागता था। उस घर से—जहाँ अब छोटे-छोटे चिथड़े, टुकड़े, बच्चों के लपेटने के कपड़े और इसी प्रकार की अन्य कई चीज़ें मेज़ों कुर्सियों पर और इधर उधर बिखरी रहती थीं। इसके अतिरिक्त—मैं उस बच्चे की रोने की ध्वनि से दूर भागता था—क्योंकि वह हर समय—कपड़े बदलते समय, नहाते समय और सोते समय रो पड़ता था।

"अब मेरी कुछ लोगों से मित्रता हो गई—और एक मित्र की बैठक में—तुम्हारी माँ से परिचय हुआ। मुझे उससे प्रेम हो गया—और मैं चाहने लगा कि किसी तरह उससे विवाह कर लूं। प्रेम प्रकट कर मैंने उसके सम्मुख विवाह का प्रस्ताव रक्खा—और उसने स्वीकार भी कर लिया।

"अब मैं एक उलझन में फंस गया। मैं सोचने लगा कि अपना यह शिशु होते हुए भी मुझे अपनी प्रेमिका से विवाह करना है। यदि तुम्हारी मां को मैं सत्य बात बता देता तो उससे—जीवन की भावी प्रसन्नता से और सभी सुखों से हाथ धोने पड़ते। क्योंकि उसके मां बाप पुराने विचारों के थे—और मेरी पूर्व घटना को जानकर वे कभी मुझसे उसका सम्बन्ध न करते।

"एक मास मैंने बड़ी कठिनता से अतीव संताप सहते हुए काटा। उस मास में सहस्त्रों भयानक विचार मेरे मन में चक्कर काटते। पुत्र के प्रति दिन प्रति दिन मेरी घृणा बढती चली गई।—क्योंकि वह छोटा सा तुच्छ जीव...वह मांस का नन्हा सा लोथड़ा···मेरे पथ का काँटा था—वह मेरे समस्त जीवन को दो मार्गों में बाँट रहा था और एक ऐसे दुखःदायी जीवन के लिए विवश कर रहा था—जिससे मेरी समस्त स्वच्छ सुन्दर आशाऐं धूल में मिल जायें।

"तभी मेरी पहली प्रेमिका—अर्थात् मिस्ट्रेस की मां बीमार हो गई। और बच्चा मुझे सौंप, वह अपनी मां के पास चली गई।

"दिसम्बर का सर्दी का महीना था। ख़ौफ़नाक—भयानक सर्दी थी। डरावनी रात थी। मेरी स्त्री को गये थोड़ी देर ही हुई थी... उस छोटे से कमरे में मैंने अकेले ही खाना खाया···फिर

आहिस्ते से उस कमरे में पहुँचा जहाँ बच्चा सो रहा था।

"वहाँ आग की अंगीठी के सम्मुख एक आरामकुर्सी पर बैठ गया। बाहर खुश्क बर्फीली हवा चल रही थी—जिससे कभी-कभी खिड़कियाँ खट् खट् कर उठती थीं, मानों सर्दी से कंपकंपा रही हों। मैं उठा,—खिड़की से बाहर झांका—तारे झिल मिलाते हुए जगमगा रहे थे।

"एक महीने पूर्व की स्मृति ने फिर मुझे आ घेरा। जैसे भग-न्दर फोड़ा मांस को कुरेदता है या गहरा विचार मन को; उसी तरह 'वही' विचार मेरे मन को बार-बार कुरेदने लगा। मस्तिष्क, दिमाग व शरीर में यही विचार बार-बार घूमने लगा। एक जंगली जीव की तरह वह मुझे तड़पाने लगा। मैंने दूसरी बातों की ओर ध्यान परिवर्तित करने की चेष्टा की—नयी आशाओं की ओर मन लगाना चाहा—जैसे प्रातः काल होने पर रात की गंदी हवा बाहिर निकालने के लिए मनुष्य खिड़कियां खोल देता है। परन्तु क्षण भर के लिए भी इस भयानक विचार को मैं मन से दूर न कर सका। मेरे पास उस मानसिक व्यथा की व्याख्या के योग्य शब्द भी नहीं। मुझे ऐसा अनुभव होने लगा मानों तीव्र वेदना के दांत मुझे कतर रहे हैं—जिससे मेरी आत्मा और शरीर में एक यथार्थ पीड़ा होने लगी।

"मेरे जीवन का अन्त सा हो गया। कैसे इस उलझन से छुट-कारा पाँऊ ? कैसे अपने विवाह प्रस्ताव को टालूं ?? कैसे अपना दोष स्वीकार करूं ???

"उधर मैं तुम्हारी मां के लिए भी उतावला था—उससे प्रेम करता था—वह प्रेम इस अलंघनीय बाधा को और भी भयावह बना

रहा था।

"मेरे मन में तीव्र क्रोध भभक उठा... उसने मेरे गले को जकड़ लिया। वही क्रोध...पागलपन में परिवर्तित हो गया...पागल...पन? हाँ, वह पागलपन था! उस रात मैं सचमुच पागल हो उठा था।

"बच्चा सो रहा था। मैं उठा—और उसे सोते हुए को देखने लगा। हाँ—यह वही बालक था—अकालोत्पत्ति, तुच्छ शिशु—वह व्यर्थ का जीव, जिसने मुझे निराश वेदना के जीवन के लिए विवश कर रखा था।

"वह मुँह खोले—कम्बलों व गर्म कपड़ों में लिपटा, मेरे पलंग के पास ही बिछे झूले में सो रहा था। उसी बिस्तर के निकट...जहाँ मैं सोने में असमर्थ, बैठा सोच रहा था।

"मैं...वह खून मैं कैसे कर पाया? क्या मैं जानता हूँ?...मुझे किसी दूसरी ही शक्ति ने प्रेरित किया—बाधित किया। किसी बुरी शक्ति ने मुझ पर काबू पा लिया था। अनजाने में ही मुझमें यह लालसा उत्पन्न हो गई थी। मुझे केवल इतना याद है कि मेरा हृदय ज़ोर से धक् धक् करने लगा था—इतनी ज़ोर से—कि वह मुझे दीवार की ओट से मारे जा रहे कुल्हाड़े की ऊँची आवाज़ की नाईं, सुनाई देने लगा। केवल इतना ही याद है—कि मेरा दिल धधक उठा था। तर्क शक्ति व ज्ञान पराजित हो गये थे। मैं भय और भूल-चूक के कड़ुए क्षण व्यतीत कर रहा था—मुझे अपने कार्यों का कुछ बोध न था कि क्या कर रहा हूँ?

"आहिस्ते से मैंने बच्चे के ऊपर से गरम कपड़े उठा दिये—और उन्हें झूले के एक कोने में रख दिया...फिर देखा कि वह...

वह मे···रा···बच्चा बिल्कुल नंगा पड़ा था—परन्तु वह जागा नहीं। तब मैं धीरे से खिड़की के पास पहुँचा—धीरे-धीरे···बहुत ही धीरे—खिड़की के समीप पहुँचा—और···उसे खोल दिया।

"एक ख़ूनी हत्यारे की तरह बर्फ़ीली हवा की आँधी सी कमरे में आई। इतनी तीव्र हवा—कि मैं उसे सहन न कर सका और गिरने लगा। हवा के तेज़ झोंके से दोनों बत्तियां बुझ गईं। मैं खिड़की के पास ही खड़ा रहा···हिलने का साहस करना कठिन था—शायद इसलिए कि पास ही हो रही उस तीव्र घटना को मैं निकटता से अपनी आँखों से देखना न चाहता था। मृत्युसम भया-वह शीत हवा···जो निरन्तर तेज़ी से कमरे में बह रही थी—मेरी कनपटियों को छूती हुई गालों—और हाथों तक पहुँच गई।

"मैं सोचने समझने की शक्ति भी खो बैठा था। तभी अचानक एक खांसी के कश ने मुझे सिर से पांव तक कंपकपा दिया—वह कम्पकपी जो इस समय भी मैं अपने बालों की जड़ों में महसूस कर रहा हूँ। एक जंगली जीव की तरह झपट कर—खिड़की मैंने बन्द कर दी—और घूम कर झूले के सिरहाने आ खड़ा हुआ।

"बच्चा अब भी सो रहा था—वस्त्रहीन। मैंने उसकी टांगों को स्पर्श किया—वे बिलकुल शीत थीं। शीघ्रता से मैंने उसे कपड़े ओढ़ा दिये।

"अचानक मेरा हृदय पसीजा। विचार कोमल हुए। दया, ममता और अभागे जीव के लिए स्नेह उमड़ पड़ा···वही जीव—वही बालक, जिसे अभी-अभी मैं मारना चाहता था। तब मैंने उसके पतले-पतले कोमल बालों का एक दीर्घ चुम्बन लिया—फिर अंगीठी के समीप जा बैठ गया।

"उस अयोग्य क्रिया पर मैं बार-बार सोचने लगा। आश्चर्य हुआ—कि कैसे आत्मा में इस प्रकार की अन्धाधुन्ध आंधियां आती हैं, जो मानव को जीवों की सचेतता तक भुला देती हैं··· जिनके सम्मुख मनुष्य स्वयं पर से काबू भी खो बैठता है और उतावलेपन में इस प्रकार के घात कर बैठता है। वह यह भी नहीं जान पाता कि वह क्या कर रहा है—जैसे जहाज को तूफ़ान या आंधी में कुछ नहीं दीखता।

"बच्चा एक बार फिर खांसा—मेरा हृदय फटने लगा। आह···यदि वह मर गया—तो ?···तो मेरा क्या होगा ?

"मैं उसे देखने के लिए उठा। हाथ में बत्ती लिये—उसकी ओर झुका। धीमा-धीमा श्वास सुनकर फिर विश्वास हो गया। वह तीसरी बार खांसा···मेरे समस्त शरीर में एक सनसनी फैल गई—शीघ्रता से वापिस लौटा—बत्ती मेरे हाथ से गिर पड़ी।

"मोमबत्ती को ज़मीन से उठा, जब मैं सीधा खड़ा हुआ तो—मैंने देखा मेरी कनपटीयां दुःख के पसीने से तर थीं। मुझे गर्म और ठंडे पसीनों की तरेलियां आने लगीं—जैसे भयावह वेदना व यातना का कुछ भाग—जो वास्तव में आग की नाई जलता और हिम की नाई ठंडा होता था—मेरे शरीर के चमड़े व हड्डियों के ढाँचे से बाहर चू रहा था।

"सूर्य निकलने तक मैं झूले के पास बैठा रहा। जब बच्चा कुछ देर मौन रहता—तो मैं अपने भयों को सान्त्वना देता। जब उसके मुँह से एक हलकी सी सांस निकलती तो मैं एकदम दुःखी हो उठता।

"जब वह जागा—तो उसकी आँखें लाल थीं—और गला सूज

रहा था। प्रत्यक्ष था कि वह बीमार है।

"नौकरानी आई—उसे मैंने एक दम डाक्टर बुलाने को भेजा। एक घंटे बाद डाक्टर आया। बच्चे की परीक्षा कर बोला—" 'क्या इसे सर्दी लगी है ?' "

" 'नहीं'''मेरा तो ऐसा ख्याल नहीं, मैं थड़थड़ाया''''एक वृद्ध पुरुष की तरह कांपते हुए'' और पूछा—, क्या हुआ है ? क्या कोई खतरनाक बात हैं ? " 'अभी कुछ कहा नहीं जा सकता," डाक्टर बोला, "मैं शाम को फिर आऊंगा।' "

"वह शाम को फिर आया। मेरा लाल'''सारा दिन गहरी नींद में पड़ा रहा। कभी-कभी बीच-बीच में खांस लेता था। रात को फेफड़ों में सोज़िश हो गई।

"दस दिन तक यही दशा रही। मैं नहीं कह सकता कि उन अनन्त घड़ियों में'''जो सुबह को शाम से और शाम को सुबह से अलग करती हैं—मैंने कितना दुःख सहा।

"वह मर गया''

"और तब से'''उस क्षण से लेकर मैंने एक घंटा भी ऐसा नहीं बिताया जब कि वह विषैली भयानक स्मृति मुझे नोचती न रही हो। वह स्मृति—हर समय मेरी अन्तरात्मा को कतरती, तोड़ती मरोड़ती और उखाड़ती रहती थी। वह स्मृति'''अब तक भी एक क्षुधातुर जंगली जीव की तरह मेरी आत्मा की तह में बंधी है।

"काश ! मैं उस समय पागल ही हो पाता''' !"

मोनसियर पोयरली डी वोटे ने अपनी ऐनक उतारी। वसीयतनामे को पढ़ने के पश्चात् ऐसा करने का उसका अभ्यास ही था।

तीनों के चेहरों पर मुर्दनी छा गई''''और वे एक दूसरे की

ओर टकटकी बांधे देखते ही रह गए।

क्षण भर बाद वकील साहिब ने मूकता भंग करते हुए कहा—"इसे नष्ट कर देना चाहिये।"

बहन भाई ने भी हाँ में हाँ मिलाई। वकील साहब ने मोमबत्ती जलाई। सम्पति दानपत्रों से ध्यान पूर्वक उन पृष्टों को अलग किया जिन पर वह खतरनाक पश्चाताप अंकित था। फिर उन्हें मोमबत्ती की लपट छुआ, अंगीठी में झोंक दिया।

वे तीनों—सफ़ेद कागजों को जलते हुए देखने लगे। क्षण भर में ही वे काग़ज़ राख के ढ़ेर में परिवर्तित हो गए। राख के ढ़ेर में से सफ़ेद-सफ़ेद झाँकते हुए कुछ अक्षर अब भी पढ़े जा सकते थे।

बेटी ने उस पतली सी राख की तह को बड़ी उद्विग्नता से पैर के पंजे से मसल डाला।

कुछ देर तक तीनों बैठे रहे। मानों उन्हें अब भी भय था कि जल कर राख हुआ यह भेद—कहीं आग की चिमनी में से बाहिर न उड़ जाय।

बेबस सौन्दर्य

जून का महीना समाप्त होने वाला था। मैदान पर सूर्य की स्निग्ध किरणें जगमगा रही थीं। शाम के साढ़े पांच बजे के लगभग, दो काले घोड़ों वाली खूबसूरत विक्टोरिया बग्घी एक शानदार हवेली के सामने रुकी।

कामसे डी मसकार्ट सीढ़ियां उतर रही थी। सामने से उसका पति फाटक के समीप लम्बे-लम्बे पग रखता हुआ घर की ओर आ रहा था। क्षण भर वह वहीं रुका—अपनी स्त्री की ओर देखते ही उसका रंग उड़ गया। काउन्टेस चतुर, सुडौल और अद्वितीय सुन्दरी थी। उसका अंडाकार चेहरा, हाथी दाँत जैसा पीताभ रंग, काले-काले बाल और बड़ी-बड़ी भूरी आँखें थीं। काउन्टेस ने इस तरह का भाव जताया मानों उसने अपने पति को आते देखा ही न हो।...और बेपरवाही से गाड़ी पर चढ़ गई।

काउन्टेस के चेहरे पर एक विचित्र शान और गर्व की रेखा अंकित थी जिसे देखकर काउन्ट के मन में पूर्ववत् एक बार पुनः क्रोधपूर्ण ईर्ष्या भभक उठी। काउन्टेस के समीप पहुँच कर वह बोला—"क्या तुम सैर के लिए जा रही हो?"

"आप देख तो रहे हैं।" घृणाभरी निगाहों से उसने उत्तर

दिया। "बोए डी बोलोन को ?"

"संभवत:।"

"क्या मैं तुम्हारे साथ चल सकता हूँ ?"

"आप ही की तो गाड़ी है।"

पत्नी की बातचीत के ढंग से काउन्ट को तनिक भी आश्चर्य नहीं हुआ। वह गाड़ी पर चढ़ गया, और काउन्टेस के समीप बैठते हुए बोला "बोए डी बोलोन, चलो।"

सेवक कोचवान के समीप जा बैठा और घोड़े सदा की तरह जब तक बाहर गली में न पहुँच गए, इधर उधर सिर हिलाते रहे।

पति—पत्नी चुपचाप पास-पास बैठे थे। वह सोच रहा था कि बात आरम्भ कैसे की जाय—परन्तु काउन्टेस ऐसी तीव्र और पैनी दृष्टि से देख रही थी कि उसे कुछ बोलने का साहस ही न होता था। अन्त में किसी तरह, समझ कर उसने काउन्टेस के हाथ के दस्ताने का अपने हाथ से स्पर्श किया—परन्तु काउन्टेस ने घृणा से अपनी बाँह खींच ली। शासक और अत्याचारी प्रवृत्ति का होते हुए भी काउन्ट सोच में ही डूबा रहा। फिर कुछ सोचकर बोला:—

"गैबरीले।"

"क्यों ? क्या कहते हो ?"

"आज····आ···ज तुम बहुत ही सुन्दर लग रही हो।"

वह बिना उत्तर दिये, चिढ़ी हुई महारानी की तरह बग्घी में अध लेटी सी पड़ी रही।

उस समय वे शैम्पेज़ एलिसीज़ से गुज़र कर आर्क डी ट्रायम्फ़े की ओर बढ़ रहे थे।

सामने लम्बे रास्ते के अन्त पर एक महान यादगार की बड़ी-बड़ी ऊँची मेहराबें, आकाश की लाली का स्पर्श करती हुई दिखाई दे रही थीं। सूर्य उनपर अपनी अन्तिम किरणें बिखेरता हुआ—उसी ओर नीचे उतरता जान पड़ता था।

सूर्य की झिलमिलाती रश्मियाँ कभी घोड़ों के चाँदी के साज़ों पर और कभी गाड़ी के लैम्पों के शीशों पर अठखेलियां करती हुई—एक चमक सी पैदा कर जाती थीं।

गाड़ियों का दोहरा प्रवाह शहर और बोएज़ की ओर चल रहा था। काउन्ट कहता चला जा रहा था—"गैबरीले। मेरी प्रिय गैबरीले।"

क्रोध को रोकने में असमर्थ चिढ़ी हुई आवाज़ में वह बोली:—"ओह! मुझपर मेहरबानी करो-मुझे मत बुलाओ! पलभर शान्ति से बैठने तो दो। क्या अब मुझे अपनी गाड़ी में भी अकेली बैठने की आज्ञा नहीं?"

काउन्ट ने ऐसा प्रकट किया, मानों उसने कुछ सुना ही नहीं और कहने लगा—"तुम कभी भी इतनी सुन्दर न दिखाई दी थी—जितनी आज!"

इसपर धैर्यहीन हो, क्रोध को उगलती हुई वह बोली—"यह तुम्हारी भूल है। मैं कसम खाकर कहती हूँ कि मेरा इस प्रकार तुम्हारे साथ देर तक निर्वाह होना सम्भव नहीं।"

काउन्ट घबड़ा कर जड़वत् हो गया। फिर उसकी हिंसात्मक आत्मा भभक उठी और वह चिल्लाया:—

"तुम्हारा अभिप्राय क्या है?" बोलने के ढंग से वह प्रेमी नहीं—प्रत्युत कठोर स्वामी जान पड़ता था।

वह धीमे स्वर में बोली—ताकि पहियों की गड़गड़ ध्वनि में से गुज़रते हुए शब्द नौकरों तक न पहुँच पावें।—"आह...मेरा अभिप्राय क्या है? तुम जानना चाहते हो...कि मेरा...अभि...प्राय क्या है? आज मैं तुम्हें खूब पहिचान रही हूँ। तुम सब कुछ सुनना चाहते हो?"

"हाँ, कहो। क्या कहती हो?"

"जब से मैं तुम्हारी स्वार्थपरता का लक्ष्य बनी हूँ, तबसे मेरे हृदय पर जो कुछ गुज़री है—वह सब कह दूँ क्या?...बोलो...सुनोगे?—है सुनने की क्षमता?" आश्चर्य और क्रोध से दाँत पीसते हुए काउन्ट बड़बड़ाया—"हाँ, बताओ। सब कुछ बताओ।"

काउन्ट एक आकर्षक युवक था। लम्बा-ऊंचा बड़ी बड़ी लाल दाढ़ी, चौड़ी छाती, पूर्णतया सांसारिक पुरुष ज्ञात पड़ता था। समाज में वह एक अच्छा पति और पिता माना जाता था। अब,...जबसे वे दोनों पति-पत्नी चले थे...काउन्टेस ने पहली बार अपने पति की ओर देखा और उसके चेहरे पर आँखें गाड़ती हुई बोली:—

"आह!...आज तुम कुछ अप्रिय बातें सुनोगे। तुम्हें मालूम होना चाहिये कि इस समय मैं हर बात के लिए तैय्यार हूँ। मुझे किसी का भय नहीं—और तुम्हारा तो सब से कम।"

वह भी उसकी आँखों में आँखें डाले बैठा था। क्रोध से काँपते हुए धीमी आवाज़ में बोला:—

"पगली कहीं की।"

"नहीं मैं पागल नहीं हूँ।—परन्तु अब मैं घृणास्पद मातृत्व का दंड न भोगूंगी—जो कि तुम गत ग्यारह वर्ष से निरन्तर मुझ पर लाद रहे हो। अब मैं समाज में अपना उचित स्थान लेना

चाहती हूँ ।—जैसाकि प्राणी मात्र का अधिकार है—और मेरा भी—अधिकार है ।"

वह अचानक पीला पड़ गया'''और लड़खड़ाते हुए स्वर में बोला :— "मैंने तुम्हें समझा नहीं'''"

"ओह'''हां'''तुम मुझे खूब समझ रहे हो ।—मेरी अन्तिम सन्तान हुए तीन मास-व्यतीत हो चुके हैं'''और क्योंकि अब भी मैं सुन्दर हूँ'''आकर्षक हूँ'''क्योंकि अभी तक तुम्हारे समस्त प्रयत्न और प्रहार, मेरे सुडौल अंगों को नष्ट भ्रष्ट करने में असफल रहे हैं'''जैसाकि तुमने अभी-अभी अनुभव भी किया । अब तुम सोचते हो कि'''कि एक और सन्तान उत्पन्न करने का समय हो गया है ।"

"तुम क्या बेवकूफ़ी की बातें कर रही हो ।"

"नहीं नहीं'''बेवकूफ़ मैं नहीं । इस समय मेरी आयु तीस वर्ष की है । हमारा विवाह हुए ग्यारह वर्ष बीत चुके हैं'''और मैं सात बच्चों की मां भी बन चुकी हूँ । अब तुम आशा करते हो कि यह उत्पत्ति का काम इसी प्रकार दस वर्ष और चलता रहे'''फिर तुम्हें ईर्ष्या करने की आवश्यकता न रहेगी ।"

काउन्ट उसकी कलाई को पकड़ कर, ज़ोर से दबाते हुए बोला—"मैं तुम्हें अधिक देर तक इस तरह की बहकी-बहकी बातें न करने दूंगा ।"

"और मैं-मैं तुम्हें अन्त तक सब कुछ कहूँगी । जब तक मैं सब कुछ कह न दूं—कहती ही जाऊंगी । यदि तुमने मुझे बीच ही में रोकना चाहा, तो मैं चिल्ला दूंगी—जिससे आगे बैठे-दोनों नौकर सुन लें । आज सब कुछ कहने के लिए ही मैंने तुम्हें अपने

साथ आने की अनुमति दी है। ये गवाह होंगे—जो तुम्हें मेरी बात सुनने और आपे में रहने के लिए विवश रक्खेंगे। इसलिए अब जो कुछ भी मैं कहना चाहती हूँ, ध्यान से सुनो। मुझे तुमसे घृणा है—उस घृणा को तुमसे छिपाने का मैंने कभी भी प्रयत्न नहीं किया। मुझे झूठ बोलना अच्छा नहीं लगता।—तुमने मेरी इच्छा के विरुद्ध मुझसे विवाह किया। मेरे माता पिता की आर्थिक स्थिति उस समय शोचनीय थी। तुमने उन्हें विवाह के लिए विवश किया। उन्होंने भी मेरी इच्छा के विरुद्ध, मेरी अश्रुधारा की अवहेलना कर—तुम्हारे साथ मुझे इस अटूट बन्धन में बाँध दिया—आखिर तुम धनी थे न।

"इस तरह तुमने मुझे खरीदा। जब मैं तुम्हारे बंधन में आ गई'''तुम्हारी साथिन बनी, तुम्हारी जीवन-साथिन बनी''' तुम्हारी पत्नी बनी'''तब मैं तुम्हें अपनाने को प्रस्तुत थी, तुम्हारे दबाव व धमकियों को भूलने के लिए भी तैयार थी। जहां तक संभव था तुमसे स्नेह करने को भी तैयार थी—मैं सोचती थी कि मुझे एक अच्छी पत्नी होना चाहिए, परन्तु तभी तुम मुझसे ईर्ष्या करने लगे। ऐसी तीव्र ईर्ष्या'''जो आज तक कभी किसी ने न की हो—एक दूत की सी तुच्छ और नीच ईर्ष्या—जो मेरे लिए भी उतनी ही अपमानजनक थी जितनी स्वयं तुम्हारे लिए। अभी मेरा विवाह हुए आठ ही मास हुए थे'''जब तुम हर प्रकार के विश्वासघात की आशंका करने लगे—यहां तक कि तुमने स्पष्ट तौर पर मुझसे कह भी दिया'''कितनी अपमानजनक थी तुम्हारी वह नीचता।"

"क्योंकि तुम मेरे सौन्दर्य को बिगाड़ नहीं सकते थे'''वह सौन्दर्य'''जो लोगों को आकर्षक जान पड़ता था'''जिसके कारण

मुझे ड्राइंगरूमों में निमन्त्रण मिलते, समाचार-पत्रों में पैरिस की सर्व सुन्दर युवती कहा जाता—तुमने पूर्णतया यत्न किया कि मेरे प्रशंसक मुझ से दूर रहें। तुमने मुझे निरन्तर घृणात्मक मातृत्व का जीवन व्यतीत करने के लिए विवश किया। उस समय तक—जब बच्चे पैदा करते-करते मैं इतनी कुरूप हो जाऊँ कि लोग मुझसे घृणा करें। ओह—इसे अस्वीकार मत करो। कुछ समय तक मैं यह जान न सकी। परन्तु फिर मैंने अनुमान कर ही लिया तुमने अभिमानपूर्वक अपनी बहन से भी यह बताया—उसने सब कुछ मुझे बता दिया—क्योंकि वह मुझे प्यार करती है और तुम्हारी गंवारू असभ्यता से घृणा।

"आह"...याद करो, भूतकाल में तुमने मुझसे कैसा बर्ताव किया है! गत ११ वर्षों से मुझे किस प्रकार समाज और मित्रों से दूर रखकर तुमने केवल बच्चों की माता बनने के लिए विवश रखा है। और—जब तुम मुझसे तंग आ जाते थे—तो मुझे देश में खेती और मैदानों के बीच अपने गांव के मकान में भेज देते थे। फिर जब मैं उतनी ही स्वस्थ, सुन्दर और मनमोहक होकर वापिस लौटती—तो पुनः प्रशंसक मेरी प्रशंसा करते और मैं आशा करती कि शायद अब मैं एक अमीर और समाज में सम्मानित स्त्री की तरह रह सकूँ, पर तुम्हें फिर ईर्ष्या होती—फिर वही दुष्ट एवं घृणास्पद लालसा जो इस समय भी तुम पर काबू पाये है। वह इच्छा—केवल मुझ पर काबू पाने की ही नहीं—मैं उस इच्छा के विरुद्ध विरोध भी न करती—परन्तु यह इच्छा है मुझे कुरूप और भद्दा बनाने की।

"फिर वह तुच्छ और रहस्यपूर्ण घटना हुई जो बहुत देर बाद मैं

समझ सकी । (तुम्हारे विचारों और कार्यों के निरीक्षण से मेरी अब और भी तीव्र दृष्टि हो गई है ।)

"तब तुम अपने बच्चों से प्रेम करने लगे—और वे तुम्हारे जीवन का आश्रय बन गए । तुम्हें उनसे स्नेह हो गया—और मुझ से द्वेष एवं घृणा । तुम्हारे तुच्छ भय—उस समय मेरे शरीर के सौष्ठव और सुडौलता को नष्ट होते देख तुष्ट होते चले गए ।

"—कितनी बार मैंने तुम्हें उस प्रसन्नता का अनुभव करते देखा है ! मैंने तुम्हारे नेत्रों में प्रसन्नता की झलक देखी और समझ गई । तुम अपने बच्चों से प्यार करते थे"'इसलिए नहीं कि वे तुम्हारे अपने ख़ून से बने थे—बल्कि इसलिए कि वे मुझपर मेरे यौवन पर, मेरी सुन्दरता पर, मेरी दिव्य मनोहरता पर—और उस प्रशंसा पर, जो मेरी अनुपस्थिति में की जाती थी—तुम्हारी विजय के चिन्ह थे । तुम्हें अपनी सन्तान पर गर्व है । शान-शौकत से उन्हें दिखाते फिरते हो, बोए डी बोलोन की सैर कराते और मोन्ट मोरैन्स्टी पर खच्चरों की सवारी कराते हो । मैटनी सिनमों में ले जाते हो—ताकि लोग उनके मध्य तुम्हें देखकर कहें—"कि कैसा दयालु आदर्श पिता है यह ।" और बार-बार ये"'

काउन्ट ने काउन्टेस की कलाई असभ्य कठोरता पूर्वक पकड़ ली और इतने जोर से दबाया कि वह दर्द से चीख-सी-पड़ी । फिर वह गुनगुनाते हुए आहिस्ते से कहने लगा—"मैं अपने बच्चों से प्यार करता हूँ—सुनती हो ! जो तुमने अभी-अभी मुझपर आरोप लगाये वे एक माँ के मुँह से शोभा नहीं देते । पर—तुम मेरी हो"'मैं जब चाहूँ और जो चाहूँ तुमसे ले सकता हूँ ।—कानून मेरी ओर है ।"

वह अपने मज़बूत हाथ के कठोर दबाव से उसकी अंगुलियाँ पीस देना चाहता था—और वह दर्द से लाल—पीली होती हुई, व्यर्थ में ही उस पापी से उन्हें छुड़ाने का प्रयास कर रही थी। दुःख और पीड़ा से उसकी सांस रुंध गई और आँखों में आँसू छलक आये।

"देखा, मैं शक्तिशाली हूँ—और तुम्हारा स्वामी।" उसने कहा।

जब उसने हाथ को ज़रा ढीला किया, तो काउन्टेस ने पूछा—"क्या तुम्हारा ख़्याल है कि मैं एक धर्मात्मा स्त्री हूँ ?"

काउन्ट को उसके प्रश्न पर आश्चर्य हुआ और वह बड़-बड़ाया—"हां…"

क्या तुम सोचते हो कि जिस तख़्ते पर ईसा की मूर्ति पड़ी है, उसके समीप यदि मैं शपथ खाकर कुछ बताऊँ—तो वह झूठ हो सकता है ?"

"नहीं।"

"क्या तुम मेरे साथ किसी चर्च तक चलोगे ?"

"क्यों ?"

"वहां पहुँचते ही तुम जान जाओगे—चलोगे ?"

"अगर तुम्हारी यही इच्छा है, तो चलो।"

उसने ऊँची आवाज़ में कहा—"फ़िलिप।" कोचवान ने घोड़े से आँखें हटाये बिना ही, ज़रा झुककर अपनी स्वामिनी की ओर कान कर दिये, जो कह रही थी—"सेन्ट फ़िलिप डी रोले की ओर चलो।"

विक्टोरिया गाड़ी जो बोग डी बोलोन तक पहुँच गई थी,

वापिस पैरिस आ गई।

शेष रास्ते में पति-पत्नी चुप ही रहे। गाड़ी जब चर्च के बाहर रुकी तो काउन्टेस जल्दी से उतरी और भीतर चली गई। काउन्ट ने भी उसका अनुकरण किया। वह रास्ते में रुके बिना "कोयर स्करीन" तक पहुँच गई। वहाँ पहुँच कुर्सी पर घुटनों के बल बैठ, हाथों में मुँह छिपा लिया। उसने देर तक प्रार्थना की। पीछे खड़ा काउन्ट देख रहा था कि वह रो रही है। कुछ देर वह रोती रही""जैसे कोई तीव्र दुःख के कारण सिसक रही हो। उसका शरीर लहरों की नाई काँप रहा था—हाथों की अंगुलियों में छिपे मुँह से आहभरी सिसकियाँ निकल रही थीं।

काउन्ट ने जब देखा कि काफी देर हो रही है—तो उसने अपनी पत्नी के कंधों पर हाथ रखा। उस स्पर्श से वह आपे में आई—मानों पहले वह जल गई हो।—वह उठी, और उठते ही सीधा काउन्ट की आँखों में झाँका।

"जो मैं तुम से कहना चाहती हूँ—वह यह है—मुझे किसी का भय नहीं—जो चाहे कर लो—यदि इच्छा हो तो बेशक मार डालो। हमारे बच्चों में से एक—केवल एक बच्चा तुम्हारा नहीं है—यह मैं परमात्मा के सम्मुख, (जो मेरे शब्द सुन रहा है) शपथ लेकर कहती हूँ। तुम्हारे पुरुषत्व की कठोरता, दासता तथा बच्चे उत्पन्न करने की निरन्तर गति से बदला लेने का केवल यही एक ढंग मुझे प्राप्त था। मेरा प्रेमी कौन था।"""यह तुम कभी नहीं जान सकते। तुम प्रत्येक परिचित व्यक्ति पर सन्देह करो"""फिर भी ढूंढ न सकोगे। मैंने स्वयं ही अपने आप को उसे सौंपा—बिना प्रेम और प्रसन्नता के—केवल तुम्हें धोखा देने के लिए...और

उसने भी मुझे माँ बनाया। वह कौन सा बच्चा है?—यह तुम जान न सकोगे।—मेरे सात बच्चे हैं, ढूंढने का यत्न करो, पर ढूंढ न पाओगे। मैं तुम्हें यह बात बाद में बताना चाहती थी; क्योंकि जब तक धोखा देकर बदला लेने के लिए बताया न जाय—तब तक तो बदला लिया ही न गया। तुमने आज ही मुझे ऐसी स्थिति में डाल दिया कि मैं बताने पर विवश हो गई।—जो कुछ मैं कहना चाहती थी—कह चुकी।"

चर्च के खुले दरवाजों से वह बाहर निकली। उसे आशा थी कि बिल्कुल काउन्ट उसके पीछे भागता हुआ आवेगा—और उसे धक्के से जमीन पर गिरा देगा। पर उसने कोई भी ध्वनि न सुनी—और वह गाड़ी पर आ पहुँची। व्यथा से घिरी, भय से हांपती और कांपती हुई वह गाड़ी पर चढ़ गई और कोचवान से बोली—'घर चलो।'

घोड़े सरपट दौड़ने लगे।

(२)

काउन्टेस अपने कमरे में बैठी खाने के समय की इस प्रकार प्रतीक्षा कर रही थी—जैसे हत्यारा मौत के घंटे की प्रतीक्षा करता है। उसका पति क्या करेगा? क्या वह घर वापिस लौट आया है? वह पति···जो क्रोधी, मनमौजी और अत्याचारी है—जो किसी भी अत्याचार के लिए प्रस्तुत है···वह—वह उस समय क्या सोच रहा होगा? उसने क्या निश्चय किया होगा?

घर भर में मृत्यु के समान नीरवता छाई हुई थी। वह निरन्तर घड़ी पर टकटकी बांधे देख रही थी। उसकी दासी आई—और सांयकाल के लिए उसके कपड़े बदल चली गई। आठ बजे। एक-

दम दरवाज़े पर दो खटके हुए —और रसोइये ने दरवाज़ा खोलते हुए सूचना दी—"खाना तैय्यार है, मेम साहब।"

"काउन्ट आ गए क्या ?"

"जी हाँ, वे खाने के कमरे में ही हैं।"

कुछ क्षण के लिए उसने सोचा कि रिवाल्वर साथ लेती चले। वह रिवाल्वर—जो कुछ देर पूर्व, दिमाग में चक्कर काटती हुई, उस दुर्घटना की आशंका कर, वह ख़रीद लाई थी। पुनः उसे विचार आया कि—सभी बच्चे उसी कमरे में होंगे अतः—वह नमक, चटनी और अचार आदि की बोतलें लेकर ही चल पड़ी। उसके पहुँचते ही, काउन्ट शिष्टाचार प्रदर्शित करने के लिए कुर्सी से उठा, वे दोनों एक दूसरे के सम्मुख ज़रा झुके—और फिर बैठ गए। तीनों लड़के अपने अध्यापक, एबे मार्टिन के साथ दांई ओर और तीनों लड़कियां अध्यापिका, मिस स्मिथ के साथ बांई ओर बैठ गईं। सब से छोटा बच्चा, जो अभी केवल तीन मास का था—ऊपर के जीने पर अपनी नर्स के पास था।

ऐब ने प्रार्थना की, जैसा कि जब बाहर से कोई अतिथि न होता, तो वह किया करता था। (किसी अतिथि की उपस्थिति में बच्चे माता-पिता के साथ भोजन न करते थे) फिर उन्होंने भोजन प्रारंभ किया।

अतीव उत्तेजित चित्तवृत्ति होने के कारण काउन्टेस निगाहें नीची किये बैठी थी। काउन्ट कभी तीनों लड़कों और कभी तीनों लड़कियों की ओर गौर से देख रहा था। एक अनिश्चित शंकित दुःखी ढंग से वह—एक बच्चे से दूसरे पर अपनी निगाहें दौड़ा रहा था। अचानक जब उसने प्याला मेज़ पर रखना चाहा तो वह गिर पड़ा और

मदिरा मेज़पोश पर गिर गई। प्याले के गिरने की ध्वनि सुन काउन्टेस अपनी कुर्सी से उठी—और जब से वे दोनों खाने की मेज़ पर बैठे थे, पहली बार एक दूसरे की ओर देखा। इसके बाद, इच्छा के विरुद्ध, बहुत शीघ्रता से, पिस्तौल के निशाने के समान वेग से-दोनों एक दूसरे की ओर देखने लगे।—यद्यपि हर निगाह उन दोनों ही कि नसों में क्रोध का संचार कर रही थी।

एबे सोच रहा था कि व्याकुलता का कारण अवश्य है—जो वह समझ नहीं रहा। उसने बातचीत शुरू करने के लिए कई विषयों का आश्रय लिया—परन्तु उसके सब प्रयत्न निरर्थक सिद्ध हुए और उसे कोई विषय न सूझा—वह एक शब्द भी मुंह से न निकाल सका। काउन्टेस ने नारी-सुलभ चतुरता और कौशल से दो-तीन बार उसे उत्तर देना चाहा—पर दे न सकी। चित्त की व्यालकुना के कारण, उसे कोई शब्द ही न सूझ रहे थे।—और उस बड़े कमरे की नीरवता में—जहां तश्तरियों, चाकुओं, छुरियों और कांटों की धीमी ध्वनि के अतिरिक्त—कोई शब्द न सुनाई दे रहे थे—उसे अपनी आवाज़ से ही डर लगने लगा।

अचानक काउन्ट ने आगे की ओर झुकते हुए कहा, "यहां—अपने बच्चोंके बीच तुम शपथ खाओ कि जो तुमने अभी-अभी मुझसे कहा, सत्य है।"

नसों में खौलती हुई घृणा ने काउन्टेस को चौकन्ना कर दिया। जिस दृढ़ता से उसने काउन्ट की निगाहों का उत्तर दिया था-उसी दृढ़ता से उसके प्रश्न का उत्तर देते हुए उसने अपने दोनों हाथ ऊपर उठाए। दायां हाथ-लड़कों की ओर, और बायाँ—लड़कियों की ओर। फिर निशंक, दृढ़ एवं स्थिर ध्वनि में बोली,

"अपने बच्चों को सिर की कसम, जो मैंने तुमसे कहा वह सत्य है।"

वह उठा—और क्रोध को उगलते हुए मेज़ पर पड़ा रूमाल फ़ेंक दिया। तेज़ी से उठने के कारण, कुर्सी पीछे दीवार से टकरा गई—बिना कुछ कहे सुने वह बाहर निकल गया।

काउन्टेस ने एक गंभीर आह भरी—मानों वह उसकी पहली विजय थी, और गंभीर मुद्रा धारण कर बोली—"जो तुम्हारे पिता ने अभी-अभी कहा, उस पर ध्यान मत देना, मेरे बच्चो। कुछ समय से वे बहुत उद्विग्न हैं—पर कुछ दिनों में ठीक हो जावेंगे।"

फिर वह एबे और मिस स्मिथ के साथ बातें करने लगी। कोमल, प्रिय शब्द—माता के वे कोमल प्यार के शब्द जो बच्चों के नन्हे नन्हे दिलों से जा लगते हैं—उसने अपने बच्चों से कहे।

खाना समाप्त होते ही, बच्चों के आगे आगे वह ड्राइंग रूम में पहुँची। वहाँ वह बड़े बच्चों से बातें करती रही, और जब उनका सोने का समय हो गया, तो उसने उन सब का चुम्बन किया।—फिर अकेली अपने कमरे में चली गई।

वहाँ वह प्रतीक्षा करती रही।—उसको दृढ़ विश्वास था कि काउन्ट अवश्य आवेगा। उसके बच्चे अपने कमरों में चले गए थे—और अब वह अपने शयन गृह में अकेली थी, अतः उसने काउन्ट से अपनी रक्षा का उपाया सोचा—और भरी हुई पिस्तोल, जो कुछ दिन पहले वह खरीद लाई थी, उसने अपनी जेब में डाल ली। घंटे बीतते चले गये—घड़ियाल खड़के।—परन्तु घर में चुप्पी छाई हुई थी। बाहर सड़क पर, पूर्ववत् बग्घियों के आने जाने की गड़ गड़ ध्वनि आ रही थी। वह आवाज़—पर्दों से ढकी, बन्द खिड़कियों में से आने के कारण बहुत मन्द पड़ जाती थी।

बल संचय कर, दृढ़ हो, वह प्रतीक्षा करती रही। अब उसे काउन्ट का भय न था—वह हर कठिन स्थिति का सामना करने के लिए प्रस्तुत थी!

अब वह विजेता थी। काउन्ट को निरन्तर, जीवन के पल-पल में दुःखी रखने का उपाय उसने ढूंढ निकाला था।

प्रातः की प्रथम किरणें पर्दे के एक कोने में से दिखाई दीं—पर काउन्ट अभी तक नहीं आया था! अब उसे विश्वास हो गया—कि अब वह न आवेगा। किवाड़ भीतर से बन्द कर, उसने ताला लगा लिया। फिर भी आत्म-रक्षा का प्रबन्ध करने के पश्चात वह बिस्तर पर जा पड़ी...और वहां नेत्र खोले, पड़ी, सोचती रही...कुछ-कुछ समझती हुई। परन्तु अभी तक वह यह निश्चय न कर पाई थी कि अब वह आकर क्या करेगा!

उसकी सहचरी चाय के साथ ही साथ, उसके पति द्वारा भेजा गया एक लिफ़ाफ़ा भी लाई। उसके भीतर पड़े पुर्जे में लिखा था कि वह एक लम्बी यात्रा पर जा रहा है और नीचे नोट में लिखा था कि वह ख़र्च के लिए जितने रुपये चाहे, वकील से लेती रहे।

(३)

ओपेरा पर "राबर्ट डैविल" नाटक के दो दृश्यों के बीच की बात है। स्टाल पर हैट पहने कुछ पुरुष खड़े थे। उनकी वासकटें बहुत नीची थीं—इतनी नीची कि उनमें से उनके अग्रभाग के सफ़ेद कमीज़ और उन पर लगे सोने तथा कीमती पत्थरों के स्टड़ तक चमक रहे थे। वे सिनेमा घर के बाक्सों—की ओर देख रहे थे...जहाँ नीचे-नीचे पहनावे पहने, हीरों तथा अन्य नगों वाले भूषणों से सुसज्जित स्त्रियां पुष्पों की तरह खिली बैठी थीं। जहाँ

वाद्यों की झंकार और लोगों की बातचीत की पृष्ठभूमि में—उनके चेहरों की सौम्यता और कंधों की सफ़ेदी चमक रही थी।

दो मित्र—आरकेस्ट्राट की ओर पीठ किये—सौन्दर्य की उन कलाओं को जांचने की दृष्टि से देख रहे थे—उस सच्ची और झूठी सुन्दरता की ओर—उस हीरे-जवाहरात विलास और बनावटीपन की सुन्दरता की ओर—जो सारे सिनेमा-घर पर छाई हुई थी।

रोगर डी सालनिज़ ने अपने साथी बर्नड ग्रैन्डिन से कहा:—"ज़रा देखो तो! अभी तक कामसे डी मसकार्ट कितनी सुन्दर तथा आकर्षक है।"

आयु में बड़े, मित्र ने उत्तर में, ओपेरा के शीशों में से सामने बैठी—उस लम्बी सी स्त्री की ओर नेत्र घुमाये। अब भी वह कमसिन जान पड़ती थी। और उसका अद्‌भुत सौन्दर्य सब ओर से लोगों की निगाहें अपनी ओर आकर्षित कर रहा था।

उसका पीला-सा श्वेत रंग, हाथी-दांत की तरह सुशोभित हो रहा था'''जिससे वह एक सौन्दर्य की प्रतिमा जान पड़ती थी। उसके काले-काले बालों पर एक छोटा सा हीरे का ताज, प्रकाश की रेखा की नाईं चमक रहा था।

जब वह कुछ देर तक लगातार उसकी ओर देखता रहा, तो बर्नड ग्रैन्डिन ने मज़ाक के स्वर में कहा—"अब भी उसे सुन्दर कहा जाता है।"

"तुम्हारे विचार में उसकी आयु क्या होगी?"

"ठहरो—मैं तुम्हें सही-सही बताऊं। जब वह एक छोटी सी बच्ची थी, तभी से मैं, उसे जानता हूँ। मैंने उसे समाज में प्रवेश करते देखा—तब वह बालिका ही थी। वह'''अब'''लगभग'''

तीस···अड़तीस वर्ष की है।"

"असंभव! यह तो हो ही नहीं सकता।"

"मुझे पूरा पता है।"

"वह तो पच्चीस वर्ष की जान पड़ती है।"

"उसके सात बच्चे हैं—सात।"

"इस बात पर विश्वास करना तो और भी कठिन है।"

"और उससे भी अधिक दुर्भाग्य की बात है कि सातों ही बच्चे जिन्दा हैं···क्योंकि वह एक अच्छी माँ है। मैं कई बार उनके घर जाता हूँ—जो एक शान्त और प्रिय घर है, जहाँ मनुष्य समाज के बीच घरेलू सुख-शांति का अनुभव कर सकता है।"

"कैसी विचित्र बात है। और इसके विषय में कभी अफ़वाहें नहीं फैली?"

"नहीं—कभी नहीं।"

"इसका पति कैसा है? वह भी अजीब जान पड़ता है।"

"हाँ···और नहीं। संभवतः इन दोनों के बीच इन दिनों कोई झगड़ा हो गया है—ऐसा घरेलू झगड़ा, जिसका हम सन्देह कर सकते हैं—परन्तु ठीक तरह से जान नहीं सकते—केवल अनुमान ही लगाया जा सकता है।"

"वह क्या?"

"मुझे उसके विषय में ठीक तरह कुछ पता नहीं। मसकार्ट स्वयं अब एक अतीव तीखा जीवन बिता रहा है—एक आदर्श पिता होते हुए भी। जब तक वह एक अच्छा पति था उसका मिज़ाज बहुत तेज़ और चिड़चिड़ा था।—और बहुत शीघ्र रुष्ट हो जाता था। परन्तु जब से वह अपना वर्तमान जंगली जीवन

व्यतीत कर रहा है--वह बहुत बदल गया है। परन्तु इससे यह अनुमान लगाया जाता है कि उसे कोई महान् दुःख है,...कष्ट का कीड़ा उसे कहीं कुरेद रहा है--क्योंकि उसकी आयु भी काफी हो चुकी है।"

इसपर फिर दोनों मित्र गंभीरता से कुछ देर तक उन गुप्त अनजान दुःखों के विषय में वार्तालाप करते रहे--जो घरों में परस्पर स्वभाव की प्रतिकूलता के कारण उपस्थित हो जाते हैं। कि अब रोगर डी सालनिज़, जो अब मैडम डी मसकार्ट को दूरबीन से देख रहा था, बोला, "अविश्वसनीय जान पड़ता है कि इस स्त्री के सात बच्चे हुये होंगे।"

'हां--ग्यारह वर्ष के अवकाश में--उसके बाद जब वह तीस वर्ष की थी तो उसने और सन्तान उत्पन्न करने से इन्कार कर दिया। जिससे वह सामाजिक जीवन में कुछ भाग ले--और उसके चेहरे से जान पड़ता है कि अभी कई वर्ष तक वह भाग ले सकती है।"

"अभागी स्त्रियां।"

"तुम्हें उनपर दया क्यों आती है?"

"क्यों? आह मित्र, ज़रा सोचो तो! ऐसी स्त्री के लिए ग्यारह वर्ष लगातार मातृत्व का भार?--कितना नारकीय जीवन है? उसका सम्पूर्ण यौवन समस्त सौन्दर्य--सफलता की समस्त आशायें, सम्पूर्ण सुखमय जीवन की काव्यात्मक अभिलाषायें निरन्तर प्रसव के कारण तबाह हो गईं।

"यह उत्पति का कार्य--जो एक साधारण स्त्री को बच्चे पैदा करने की एक मशीन बना देता है। क्या कोई जानता है कि

उसके पति ने क्यों और कैसे इस प्रकार के साथी को विशेषकर जब कि वह उसे कठोरतापूर्वक सात बार मां बना चुका था, एक दम छोड़ दिया—और बुरी औरतों के पीछे भागने लगा ?"

ब्रैन्डिन बोला:—"हां, दोस्त, संभवतः इसीलिए कि बढ़ते हुए घराने का खर्च भी बढ़ रहा था।"

तभी पर्दा तीसरे दृश्य के लिए उठा—और वे पीछे मुड़े, अपनी हैटें उतारीं और बैठ गए।

(४)

काउन्ट डी मसकार्ट और उसकी पत्नी ओपेरा से घर की ओर जा रही गाड़ी में चुपचाप बैठे थे। अचानक काउन्ट ने मूकता भंग करते हुए कहा—"गैब्रीले ! क्या तुम यह नहीं सोचती कि यह सिलसिला काफ़ी देर चल चुका है ?"

"क्या ?"

"वह कठोर दंड—जो तुम गत छः वर्षों से मुझे दे रही हो ?"

"तुम क्या चाहते हो ? मैंने तो कुछ नहीं किया।"

"तो मुझे बताओ—वह कौन सा बच्चा है ?"

"नहीं—कभी नहीं—मैं नहीं बता सकती।"

"ज़रा सोचो तो सही। मैं अपने बच्चों की ओर देख भी नहीं सकता'''अपने ईर्द गिर्द उनकी उपस्थिति सहन नहीं कर सकता—जब तक मेरे दिल से संदेह का यह भार हट नहीं जाता। मुझे बताओ—वह कौन सा बच्चा है ?—मैं शपथ खाकर कहता हूँ कि—मैं तुम्हें क्षमा कर दूंगा'''और 'उस बच्चे' के साथ भी अन्य बच्चों सा ही व्यवहार रखूंगा।"

"मुझे यह बतलाने का अधिकार नहीं।"

"क्या तुम देख नहीं पाई कि अब और अधिक देर तक मैं ऐसा जीवन नहीं काट सकता ...! यह चिंता जो मुझे थका रही है...यह प्रश्न, जो मैं प्रतिपल अपने आप से पूछा करता हूँ ! यह प्रश्न—जो बच्चों की ओर देखने का साहस करते ही, मुझे आ सताता है—यह प्रश्न...यह प्रश्न मुझे पागल बना रहा है।"

"अच्छा...तो तुम्हें काफ़ी दुःख पहुँच चुका है?" काउन्टेस बोली ! "काफ़ी से कहीं अधिक ! क्या उस दुःख को सहे बिना, मैं तुम्हारे साथ रहने का भय सह सकता था ?—और उससे भी अधिक वह भय—उसे जानने और अनुभव करने की तीव्र यातना... कि इन सब में से एक बच्चा ऐसा है...जो मेरे अन्य बच्चों से भी प्यार करने में बाधक है। वह बच्चा मेरा नहीं...पर इन बच्चों में कौन सा वह एक बच्चा है ?—मैं पहचान नहीं सकता !"

"अच्छा, तो तुम यथार्थता बहुत दुःख भोग चुके हो," काउन्टेस ने अपना उत्तर फिर दोहराया।

काउन्ट ने दुःख से दबी आवाज़ में उत्तर दिया—"हां, क्या मैं तुम से रोज नहीं कहता कि यह प्रश्न मुझे असह्य यातना दे रहा है ? क्या मैं तुम से और इन बच्चों से प्रेम किये बिना इतना समय इस घर में रह सकता था ? ओह...तुमने मुझसे घृणा का व्यवहार किया है । अपने दिल का सारा प्रेम मैंने अपने बच्चों को दिया...यह तो तुम जानती ही हो ! मैं एक पुराने ढंग का पिता हूँ...जैसे कि तुम्हारे लिए—पुराने स्कूल का एक पति था। मैं ऐसा पुरुष हूँ—जो अपनी स्वभाविक पशुबुद्धि पर चलता रहा हो...एक प्राचीन काल का पुरुष। हां...मैं स्वीकार करता हूँ कि तुमने मुझे ईर्ष्यालु बना दिया ...क्योंकि तुम एक दूसरी और

भिन्न पीढ़ी की स्त्री हो···तुम्हारी आत्मा मुझ से भिन्न है···आवश्यकतायें भी भिन्न हैं। आह···जो बातें तुमने मुझे कहीं, उन्हें मैं कभी भी भूल नहीं सकता। परन्तु उस दिन से मैंने तुम्हारे विषय में चिन्ता करना छोड़ दिया। मैंने तुम्हारी हत्या नहीं की—क्यों?—क्योंकि यदि मैं तुम्हारी हत्या कर देता, तो मैं कभी भी यह न जान सकता था कि हमारे बच्चों में से कौन सा बच्चा मेरा नहीं है। मैंने प्रतीक्षा की···परन्तु उससे कहीं अधिक दुःख पा रहा हूँ···तुम शायद उसका अनुमान भी नहीं लगा सकतीं! अब···अ···ब मैं उनसे प्रेम करने का साहस नहीं करता···संभवतः दो बड़े बच्चों के अतिरिक्त। अब तो मैं किसी भी बच्चे की ओर देखने का, बुलाने का या चुम्बन लेने का भी साहस खो बैठा हूँ! उन्हें अपनी जांघ पर बिठा तक नहीं सकता क्योंकि एकदम एक ही प्रश्न दिमाग में उमड़ता है—"क्या यह वही बच्चा है?" गत छः वर्ष से निरन्तर तुमसे मेरा शिष्ट व्यवहार रहा है। मुझे सच-सच बता दो···और मैं शपथ लेकर कहता हूँ कि मैं कोई कठोर बात न करूंगा।

काउन्ट को ऐसा लगा, मानों गाड़ी के गहन अन्धकार के बीच में से भी वह देख पाया है कि काउन्टेस का हृदय पसीज गया है। और अब उसे निश्चय हो गया कि वह बोलेगी···बता देगी···सब भेद खोल देगी। फिर वह बोला: "मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ···तुम्हारी मिन्नत करता हूँ मुझे बता दो···"

"मेरा दोष इतना बड़ा है···जिसका तुम स्वप्न में भी अन्दाज़ नहीं लगा सकते।" वह बोली, "परन्तु निरन्तर मातृत्व के उस जीवन को सहन करते जाना भी असंभव था···तुम्हें अपने सम्पर्क

से दूर भगाने का मेरे पास केवल एक ही साधन था। मैं ईश्वर के सम्मुख झूठ बोली"'और अपने बच्चों के सिर पर हाथ रखकर भी झूठ बोली"'मैंने तुम्हें कभी भी धोखा नहीं दिया"'कभी नहीं।"

अन्धकार में काउन्ट ने उसकी बांह पकड़ ली और जैसे उस भयानक दिन"'जब वे बोए डी बोलोन की ओर जा रहे थे"'उस दिन की तरह ज़ोर से उसका हाथ दबाया और टूटे फूटे शब्दों में बोला—"क्या तुम सच कह रही हो?"

"बिल्कुल सच।"

"परन्तु" दुःख से पागलों की तरह रंजित हो वह बोला—"अब मुझे ऐसे संशय होंगे"'जिनका कोई अन्त नहीं। तुमने कब झूठ कहा"'पिछली बार या अब? अब इस समय मैं तुम्हारा कैसे विश्वास करूँ?"'ऐसी बात कहने के बाद कोई पुरुष अपनी स्त्री का विश्वास ही कैसे कर सकता है? मैं कभी भी नहीं जान पाऊँगा"'कि मैं क्या सोचूँ? क्या समझूँ? इससे कहीं अधिक अच्छा होता यदि तुम कह देतीं—'वह जेक्स है'"'या 'जीने' है।"

गाड़ी घर के खुले मैदान की ओर चली और जब सीढ़ियों के पास रुकी, तो काउन्ट पहले उतरा और पूर्ववत् सहायता देने के लिए अपनी पत्नी की ओर हाथ बढ़ाया"'और वे दोनों साथ-साथ सीढ़ियाँ चढ़े। छत पर पहुँचने पर, काउन्ट बोला:—"क्या मैं कुछ देर और तुम्हारे साथ बातें कर सकता हूँ?"

"अवश्य" काउन्टेस ने उत्तर दिया।

वे एक छोटे से गोल कमरे में गए। नौकर को आश्चर्य हुआ।"'.ख़ैर उसने बत्ती जला दी। नौकर के जाने के बाद, जब

वे दोनों अकेले रह गए, तो काउन्ट बोला—"मैं सच बात कैसे जान सकता हूँ ?"'सैकड़ों बार मैंने तुम्हें यह बात बतलाने के लिए प्रार्थना की"'परन्तु तुम चुप, अथाह, अभेद्य; अटल और निर्दय बनी रहीं"'और अब आज तुम कहती हो"'कि उस दिन तुम झूठ बोली थीं। पूरे छः वर्ष तुमने मुझे ऐसी बात पर विश्वास करने दिया ! नहीं"'तुम इस समय झूठ कह रही हो। मैं यह नहीं जानता क्यों ?"'शायद मुझपर दया के कारण। पर तुम—झूठ कहती हो।"

निष्कपट भाव से विश्वास दिलाते हुए काउन्टेस ने कहा, "यदि मैं ऐसा न करती—अर्थात् उस दिन चर्च में झूठी शपथ न लेती"'तो पिछले छः वर्षों में शायद चार बच्चे और पैदा हो जाते।"

"क्या एक माँ ऐसा कह सकती है ?"

"ओह," वह बोली, "जो बच्चे पैदा नहीं हुए"'मैं स्वयं को उनकी माँ नहीं समझती। जो बच्चे हैं, उनकी माता होना और पूरे दिल से प्यार करना ही मेरे लिए पर्याप्त है। मैं सभ्य संसार की—स्त्री हूँ—हम सभी और अधिक देर तक केवल बच्चे पैदा करने की मशीनें न बनी रहेंगी।"

वह उठी। पर काउन्ट ने उसका हाथ खींच लिया। "केवल एक शब्द, गेबरीले ! मुझे सच बता दो।"

"मैं अभी-अभी तुम्हें बता जो चुकी हूँ। मैंने कभी भी तुम्हें धोखा नहीं दिया।"

काउन्ट ने उसके चेहरे की ओर पूर्णतया देखा।—और उसको वह अति सुन्दर दिखाई दी। उसके नेत्र"'शीतल आकाश

जैसे थे। रजनी के तम की नाई काले बालों में हीरों का ताज, आकाश गंगा की तरह झिलमिला रहा था। अचानक उसे अनुभव हुआ कि'''उच्च स्त्री केवल वंश वृद्धि के लिए ही नहीं है'''परन्तु विचित्र एवं गुप्त इच्छाओं का केन्द्र भी है।

पागल की डायरी

वह मर चुका था—न्यायालय का प्रधान धार्मिक सत्यप्रिय मैजिस्ट्रेट। उसका निर्दोष जीवन ,फ्रांस की कचहरियों में कहावत की तरह प्रसिद्ध था। प्रांत के वकील, सभासद् और जज सभी उसकी मृत्यु पर सम्मान प्रदर्शन करने के लिए झुक कर खड़े हो गए। सभी की आँखों के सामने मृत मैजिस्ट्रेट का पीला, पतला सा, दो चमकती हुई आँखों वाला सजीव चेहरा अंकित हो गया।

मैजिस्ट्रेट ने अपना सारा जीवन अपराधों को खोजने और ग़रीबों की रक्षा में ही व्यतीत किया था। ठग और ,ख़ूनी उसे अपना शत्रु समझते थे क्योंकि वह उनकी आत्मा की गहराइयों में से उनके विशेष गुप्त विचारों को पढ़ने की भी सामर्थ्य रखता था।

अब ८२ वर्ष की अवस्था में उसका देहान्त हुआ था। क्रिया-कर्म पर बहुत लोग एकत्रित थे, उन सब पर उसकी मृत्यु का शोक सा छा गया था। लाल पायजामे पहने सिपाही कब्र तक मृतदेह के साथ-साथ गये और सफ़ेद क्रवेट पहने लोगों ने कब्र पर दुःख के आँसू बहाये।

परन्तु ज़रा उन विचित्र पृष्ठों को सुनिये, जो वसीयत पढ़ने वाले अफ़सर ने उसके एक डेस्क में पाये। ये पृष्ठ उस डेस्क में पड़े थे, जिसमें मैजिस्ट्रेट बड़े-बड़े ,ख़ूनी मुकदमों के रिकार्ड रखता

था। उन पृष्ठों का शीर्षक था—'क्यों ?' ?—

२० जून १८५१ :—मैं अभी-अभी कचहरी में क्लोन्डे को मृत्यु दंड देकर लौटा हूँ। इस पुरुष ने अपने पाँचों बच्चों को क्यों मारा ? जीवन में कई बार ऐसे लोग देखने में आते हैं, जिन्हें किसी का ख़ून करने से अतीव आनन्द मिलता है। हाँ"'हत्या करने से सचमुच ही दिल बहलता है। शायद इससे बढ़कर संसार में कोई .खुशी का साधन नहीं ? संभवतः। हाँ"' खाना खाने की नाई क्या .ख़ून करना भी मनुष्य के लिए स्वाभाविक नहीं ? किसी पदार्थ को रचना—और फिर नष्ट कर देना ? रचना और नाश यह दो शब्द ही संसार का इतिहास हैं। सकल संसार की स्थापना इन दो शब्दों तक ही सीमित है। मारना, हत्या करना, अगर नशा नहीं तो क्या है ?

जून २५ :—मानव चलता-फिरता और रहता हुआ एक जीव है। मानव"'मानव है क्या ?"'एक जीवित पदार्थ—जिसमें हिलने डुलने की शक्ति है और उस शक्ति पर इच्छा का शासन है। व्यक्ति प्राणों का एक अणुमात्र है"'जो अनजाने ही पृथ्वी पर आ टपकता है—फिर मनुष्य उसे अपनी इच्छा से तबाह भी कर सकता है। जब यह मर जाता है तो इसका कुछ भी शेष नहीं बचा रहता—सदा के लिए मिट जाता है।

जून २६।—क्यों ?—भला किसी की हत्या करना पाप क्यों समझा जाता है ??—क्यों समझा जाता है ???—बल्कि हत्या तो प्रकृति का नियम ही है। जीव परस्पर हत्या के लिए ही तो जन्म लेते हैं। प्रत्येक जीव अपने निर्वाह के लिए मरता है—और मारने के लिए जीता है। पशु, निरन्तर जीवन-निर्वाह के लिए हनन

करते हैं। मनुष्य अपने पालन-पोषण के लिए मारता है---। क्योंकि आहार के अतिरिक्त मनुष्य अपनी आत्मा की तुष्टि के लिए भी मारता है, इसीलिए उसने आत्म तुष्टि के लिए आखेट और शिकार आदि के खेल रच रखे हैं।

नन्हा-सा बच्चा ढूढ कर कीड़े-मकौड़े, नन्हे-नन्हे पक्षी और छोटे छोटे पशु मार डालता है। परन्तु हमारी दूसरों को कुचलने की अदमनीय इच्छा---संतुष्टि के लिए पशु को मारना ही पर्याप्त नहीं'''इससे पूर्णतया संतुष्टि नहीं होती'''अतः हमें 'मानव' को मारने की भी ज़रूरत महसूस होती है। प्राचीन काल में यह इच्छा मानव-बलि की क्रिया द्वारा संतुष्ट हो जाती थी। परन्तु अब समाज के नियमों के अनुसार, ख़ून करना अपराध समझा जाता है---अब तो क़ातिल को दंड भी भुगतना पड़ता है। परन्तु अभी तक हम दूसरों को मारने की स्वभाविक मनोभावना का दमन करने में असमर्थ हैं, इसीलिए कभी-कभी युद्ध की रचना कर, इस स्वाभाविक इच्छा की तुष्टि करते हैं। युद्ध में एक देश दूसरे देश के विरुद्ध लड़ता है--एक के देशवासी दूसरे देशवासियों को मारने का प्रयत्न करते हैं। अतः युद्ध ख़ून पीने का एक साधन है।--- युद्ध ख़ून की दावत है---जो सेना को पागल बना देती है। स्त्री तथा बच्चे रात को लैम्प की रोशनी के नीचे कौतूहलवश युद्ध में किसी के दले जाने की चंचल कथायें पढ़, मतवाले हो उठते हैं।

युद्ध में मनुष्य जाति का घात करने के लिए चुने गए सैनिकों से क्या हम घृणा करते हैं? नहीं, नहीं कदापि नहीं,---उनकी तो हम पूजा करते हैं। उन्हें तो कंचन तथा हीरे जवाहरातों के चमकीले उपहारों से लादा जाता है। वे अपने सिर पर और छाती

पर आभूषण पहनते हैं। उन्हें तो क्रास, मैडल और पदवियाँ मिलती हैं। वे अपनी वीरता पर अभिमान करते हैं। लोग उनका सम्मान करते हैं, स्त्रियाँ प्रेम करती हैं, जनता प्रशंसा के पुल बाँधती है··· केवल इसीलिए, कि उनका काम मानव-वध करना है? जब वे हत्या के हथियार पहने गलियों में से गुज़रते हैं, तो काले कपड़ों में लिपटे राही ईर्ष्या से उनकी ओर घूरते हैं। प्रकृति ने हत्या करने की इच्छा हर जीव अर्न्तस्थल में कूट-कूट कर भर दी है। हत्या—गौरवमय है—सुन्दर है।

जून ३० :—प्रकृति यौवन का ही आलिङ्गन करती है, अतः हत्या स्वाभाविक इच्छा है। हर अचेतन कार्य में वह पुकार-पुकार कर कहती है, "जल्दी करो, जल्दी, बहुत जल्दी।" जितना ही शीघ्र वह नाश करती है, उतना ही यौवन उमड़ता है।

३ जुलाई :—हत्या···एक सजीव पदार्थ को मारना, कितना सुखमय है? जीते जागते प्राणी में एक छोटा सा सुराख कर, उसमें से रक्त के बहाव का निरीक्षण करना—वह रक्त जो उस व्यक्ति का 'जीवन' था···कितना प्रिय है यह दृश्य। प्राणहीन होने पर वह केवल एक लोथड़ा मात्र ठंडा माँस रह जाता है। अहह-हह—हह।

५ अगस्त :—मैंने अपना समस्त जीवन दूसरों के निर्णय में ही बिताया है। जिन्होंने छुरे से किसी को मारा—उन्हें, उन्हीं के मुँह से निकले शब्दों के आधार पर ही मैंने फाँसी के तख़्ते पर लटकवाया। जिन हत्यारों को मैंने मृत्यु दंड दिया—उन्हीं की तरह यदि मैं भी एक दिन हत्या कर बैठूँ तो किसी को पता ही क्या चलेगा? हाँ···ठीक ही तो है। किसी को क्या पता चलेगा?

१० अगस्त:—भला किसी को क्या पता चलेगा ? यदि मैं किसी ऐसे व्यक्ति को मारूं, जिसकी मृत्यु से मुझे कोई दिलचस्पी नहीं, तो किसी को सन्देह ही कैसे होगा ?

२२ अगस्त:—अब मैं रुक नहीं सकता।···आज मैंने एक छोटे से जीव को मारा है। मेरे नौकर, जीन ने, एक छोटी सी गाने वाली चिड़िया पिंजरे में बन्द कर रखी थी। पिंजरा मेरे दफ़्तर के बाहर लटक रहा था। मैंने नौकर को किसी बहाने बाहर भेज दिया—और स्वयं उस छोटे से पत्ती को पिंजरे में से निकाल, हाथों में जकड़ लिया। मेरा हाथ निरन्तर उसके दिल की धड़कन महसूस कर रहा था···वह गर्म थी। मैंने उसे ज़ोर से दबाया।··· उसका दिल और भी तेज़ी से चलने लगा। अतीव प्रसन्नता का अनुभव करते हुए···मैंने निर्दयतापूर्वक उसका गला घोंट डाला··· परन्तु मेरी रक्त का बहाव देखने की अभिलाषा, पूर्ण न हो सकी।

तब मैंने ना.खून काटने वाली छोटी कैंची उठाई और अहिस्ता से तीन झटकों में उसका गला काट दिया। पत्ती ने चोंच खोली··· परन्तु मैंने उसे मज़बूती से पकड़ रखा था।···अब तो मैं एक पागल कुत्ते को भी वैसे ही पकड़ सकता था।—फिर मैंने उसका टपकता हुआ रक्त देखा।

तब मैंने अनुभवी हत्यारे की तरह कैंची और हाथ धोये, पत्ती पर पानी छिड़का और बाग़ में रसभरी के पौदे के नीचे दबा दिया। अब इस भेद का कभी किसी को पता नहीं चलेगा···और मैं···मैं प्रतिदिन उस पौधे से एक रसभरी तोड़कर, खाया करूँगा। आह—हा—हहा !

मेरा नौकर पत्ती को ग़ायब देखकर चिल्लाने लगा। भला वह

मुझ पर कैसे संदेह कर सकता था ? आह—हा ।

२५ अगस्त:—यह कार्य भी कर चुका—परन्तु वह जीव कितना तुच्छ था । वर्नज़के जंगलों में मैं सैर करने के लिए गया । वहाँ मैंने एक नन्हा सा बालक देखा, जो सड़क के किनारे बैठा, रोटी और मक्खन खा रहा था । जब उसने मुझे जाते देखा, तो बोला, "प्रेसिडेन्ट साहिब, प्रणाम हो।" और मेरे मस्तिष्क में सहसा विचार आया...."क्या मैं इसे मार डालूं ?"

"क्या तुम यहां अकेले ही हो, बेटा" मैंने पूछा ।

"जी हां ।" उसने उत्तर दिया ।

"जंगल भर में--बिल्कुल अकेले ?"

"जी हां, " उसने फिर दोहराया ।

बच्चे को मारने की अदमनीय इच्छा ने मुझे शराब की नाँई उन्मत्त बना दिया । कहीं वह मुझसे भागने का प्रयत्न न करे, इस भय से मैं धीरे-धीरे उसके पास पहुँचा । सहसा मैंने उसका गला घोंट डाला । उसने अपने नन्हें-नन्हें हाथों से मेरी कलाई पकड़ी.... जैसे पक्षी आग में ऐंठता है, ठीक उसी तरह मेरे हाथ में उसका शरीर ऐंठने लगा । उसका मृत शरीर मैंने एक गढ़े में फेंक दिया । और उसमें कूड़ा करकट डालकर ऊपर तक भर दिया ।

घर वापिस लौटने पर मैंने भरपेट खाना खाया । सांय काल को मैं बहुत प्रसन्न और हल्का महसूस कर रहा था-मानों पुनः युवावस्था में पहुंच गया होऊं । परन्तु अभीतक मैंने रक्त का बहाव न देखा था...इसलिये पूर्ण तुष्टि नहीं हुई ।

३१ अगस्तः- बच्चे का शव मिल गया है । अब वे क़ातिल की तलाश में हैं । आह...हा ।

१ सितम्बर :—दो आवारा पकड़े गये हैं। परन्तु उनके विरुद्ध कोई प्रमाण नहीं मिले।

३ सितम्बर:—बच्चे के मां बाप मुझे मिलने आये थे। वे रो रहे थे।

६ अक्तूबर:—अभी तक भेद नहीं खुला। लोगों का विचार है कि किसी आवारा राही ने मार दिया होगा। आह! यदि उसका बहता हुआ .खून देख पाता"'तो कितनी .खुशी होती?

१० अक्तूबर:—एक और घटना हुई। मैं सुबह के नाश्ते के बाद दरिया की ओर घूमने निकला। वहाँ पतले चमकदार बेंत के वृक्ष के नीचे एक मल्लाह सो रहा था। दोपहर का समय था। पास ही आलुओं के खेत में एक तलवार खड़ी थी—मानों उसने जान-बूझ कर मेरे लिए ही रखी हो।

मैंने तलवार के अग्रभाग से मल्लाह का सिर धड़ से अलग कर दिया। उसका रक्त बहने लगा। लाल-लाल बहता हुआ .खून पानी में मिलने लगा। कुछ सोचते हुए—मैं आगे चल पड़ा। यदि मुझे कोई मारते हुए देख लेता तो? नहीं-नहीं—मैं निपुण क़ातिल हूँ।

२५ अक्तूबर:—मल्लाह की हत्या से लोगों में सनसनी फैल गई। उसका भतीजा, जो उसके साथ मछलियां पकड़ता था—दोषी ठहराया गया।

२६ अक्तूबर:—मैजिस्ट्रेट ने मल्लाह के 'भतीजे' को अपराधी ठहराया। शहर में भी लोगों का यही मत है।

२७ अक्तूबर:—भतीजा अपना बचाव चाहता है। उसका बयान है कि उस समय वह शहर में रोटी और पनीर खरीदने गया था। वह शपथ लेकर कहता है कि उसके चाचा का .खून

उसकी अनुपस्थिति में ही हुआ। परन्तु उसके कथन का विश्वास ही कौन करता है ?

२८ अक्तूबर:—अब 'भतीजे' ने अपना दोष स्वीकार कर लिया है। उन लोगों ने उसका सिर इतना घुमा दिया कि वह स्वीकार करता है कि अपने चाचा का ख़ूनी वही है। आह ! निर्णय-कर्ताओ ! तुम धन्य हो।

१५ नवम्बर:—चाचा की जायदाद का उत्तराधिकारी होने के कारण भतीजे के विरुद्ध प्रमाण भी बहुत हैं। सैशन पर मैं ही सभापति बनूंगा।

२५ जनवरी १८५२:—मृत्यु दंड···मैंने अपराधी को मृत्युदंड दिया है···! हां···मैंने ही उसे मौत की सज़ा दी है। एक और ! आह-हा। मैं उसको फांसी के तख़्ते पर लटकते भी देख सकूंगा।

१० मार्च:—वह भी हो गया। आज प्रातः उसे फाँसी पर लटकाया गया। वह बहुत अच्छी तरह मरा। मुझे उसकी मृत्यु पर अति प्रसन्नता हुई। किसी का सिर कटते देख कितना आनन्द आता है।

अब मैं कुछ देर विश्राम करूंगा। हां···अब मैं प्रतीक्षा कर सकता हूँ। इतनी छोटी सी बात पर हो सकता है, कभी पकड़ा भी जाऊं !

उस हस्तलेख में और भी कितने ही पृष्ठ लिखे हुए थे परन्तु और किसी हत्या का वर्णन न था। यह कहनी मनोवैज्ञानिक डाक्टरों को दे दी गई है। वे कहते हैं कि संसार में कई पागल हैं, जिनका किसी को पता भी नहीं चलता। वे पागल इतने ही धूर्त और मूर्ख होते हैं—जितना कि यह राक्षसी मैजिस्ट्रेट।

चाली

एडमिरल डी ला वैली आरामकुर्सी पर ऊँघते हुए एक वृद्धा की सी आवाज़ में बोले—"मेरा एक छोटा सा प्रेम अनुभव है, क्या तुम सुनना चाहोगे ?"

वे आरामकुर्सी की गहराइयों में से अपने अधरों पर निरन्तर शुष्क झुरियों भरी मुसकराहट बिखेरते हुए कह रहे थे। वह मुसकराहट जिसके कारण लोग उन्हें महान् नास्तिक समझते थे।

(१)

"तीस वर्ष की आयु में मैं जहाज़ सेना में लेफ़्टिनेन्ट था। उन दिनों मुझे ज्योतिष-विद्या में खोज के लिए मध्य-भारत भेजा गया। ब्रिटिश सरकार ने मेरे कठिन उद्योग की सिद्धि के लिए समस्त प्रयोगों की व्यवस्था की। कुछ शिष्यों और नौकरों को साथ लेकर मैं उस विस्तृत, विचित्र, आश्चर्यजनक देश में अपने काम में तन-मन से व्यस्त हो गया।

यदि मैं उस यात्रा का पूर्णतया वर्णन करना चाहूँ, तो उसके लिए मुझे कम से कम दस पुस्तकें लिखनी पड़ेंगी। मैं इस अद्भुत विचित्र देश के उन भागों के बीच में से गुज़रा, जहाँ विचित्र नवयुवक राजकुमारों ने मेरी आवभगत और अविश्वसनीय ठाटबाट से मेरा आदर सत्कार किया। दो मास तक मुझे ऐसा अनुभव हुआ, मानों मैं सुन्दर स्वप्न संसार में—काल्पनिक हाथियों की

सवारी कर रहा हूँ। जंगली वनों में मैंने कोमल आभूषणों की नाईं कटे छंटे अनेकों खण्डहर देखे, जो लेस की नाईं सूक्ष्म और पर्वतों की तरह विस्तृत थे। वे कल्पित दैवीय स्मृतियाँ इतनी सुन्दर, सुडौल और आकर्षक हैं कि जैसे पुरुष स्त्री को प्रेम करने लगता है—ठीक उसी तरह वे भी उसकी प्रेम पात्री बन जाती हैं। उन्हें देख, मनुष्य एक शारीरिक इन्द्रियप्रिय प्रेमानन्द का अनुभव करने लगता है। जैसा कि प्रसिद्ध लेखक विक्टर ह्यूगो ने कहा है—"पूरी तरह जागते हुए भी मैं स्वप्न-लोक में विचरण कर रहा था।"

"यात्रा के अन्त में मैं गनहर पहुँचा, जो प्राचीन-काल में मध्य-भारत का प्रसिद्ध कस्बा था, परन्तु अब टूट फूट कर छिन्न-भिन्न हो गया है। एक धनी, स्वेच्छाचारी, स्वतन्त्र, कठोर, निर्दयी परन्तु विशाल हृदय-मदन नामक राजकुमार उसका शासक था। वह पूरी तरह से बना ठना एक यथार्थ पूर्वीय महाराजा था। कोमल परन्तु क्रूर, मधुरभाषी परन्तु खून का प्यासा। निर्दयी था वह। उसमें स्त्री सुलभ कोमलता और दया रहित क्रूरता का एक साथ मिश्रण था।

"यह कस्बा शहर की घाटी के बीच एक छोटी सी झील के किनारे स्थित है। इसकी दीवारें पानी में बनी हुई हैं और देवी देवताओं के मन्दिरों से यह स्थान सब ओर से घिरा हुआ है। दूर से यह कस्बा एक सफ़ेद चिह्न सा नज़र आता है—जितना ही नज़दीक चलते आओ, उतना ही यह चिह्न बड़ा नज़र आने लगता है। धीरे-धीरे बहुत निकट आने पर कलस गुम्बद, मीनार और तीखे शानदार शिखर भी दिखाई देने लगते हैं।

"अभी मैं फाटक के समीप ही था और लगभग एक घंटे में

वहाँ पहुँच सकता था, कि मैंने सिपाहियों से घिरा, शानदार साज शृंगार से सुसज्जित एक हाथी देखा। उसे राजा ने मेरे लिए ही भेजा था। बड़ी धूम-धाम से मुझे महलों में पहुँचाया गया।

"मेरी इच्छा हुई कि कुछ समय एकान्त में लगा कर ख़ूब धूम-धाम से सजधज कर कपड़े पहनूं—परन्तु राजा की बेचैनी के कारण—मैं ऐसा न कर सका। मुझे जल्दी में जैसे कपड़े पहने थे, उन्हीं में जाना पड़ा। राजा शीघ्र ही मुझसे परिचय करने के लिए तथा मेरे विषय में पूछताछ करने के लिए उत्सुक हो रहा था।

"मुझे एक हाल में ले जाया गया। उसके चारों ओर गैल-रियाँ थीं। केसरिया रंग की एक जैसी वर्दी पहने सिपाही बैठे हुए थे और चारों ओर अद्भुत बहुमूल्य पत्थरों के बटनों वाले सभा के कपड़े पहने पुरुष खड़े थे।

"तभी एक डूबते हुए सूर्य के समान चमकते हुए 'ठेले' पर मेरी दृष्टि पड़ी—जो बेंच पर बैठा आराम कर रहा था। बेंच साधारण सा था, जैसा कि प्रायः हमारे बागों में पाया जाता है, परन्तु उसके पिछली ओर सहारे के लिए लकड़ी न लगी हुई थी। यह चमकता हुआ पदार्थ—उस देश का राजा था, जो चुपचाप किनारी के रंग के वस्त्रों से लिपटा मेरी प्रतीक्षा कर रहा था। उसने दस पन्द्रह लाख फ्रैन्क की क़ीमत के हीरे पहन रखे थे। उसके मस्तक पर दिल्ली का प्रसिद्ध तारा चमक रहा था—जो हमेशा मनदौर के नामवर परिहार वंश की सम्पत्ति रहा है। यह राजा भी उसी वंश की सन्तान था।

"उसकी आयु लगभग २५ वर्ष की होगी। शुद्ध हिन्दू घराने का

होते हुए भी उसकी नसों में हबशी रक्त का अंश नज़र आता था। उसकी आंखें मौन, शान्त और धुंधली थीं। अधर मोटे-मोटे, दाढ़ी घुंघराली, मस्तिष्क छोटा और दाँत चमकते हुए, तीक्ष्ण तथा सफ़ेद थे—जिन्हें मुसकराते हुए वह बार-बार प्रदर्शित कर देता था। मुझे आते देख वह उठा और विदेशी स्वागत के ढंग अनुसार हाथ आगे बढ़ाया। हाथ मिलाकर मुझे अपने साथ ही एक ऊंचे बेंच पर बिठा दिया। बेन्च इतने ऊंचे स्तर का था—कि उसपर बैठकर ज़मीन पर पैर न लग सकने के कारण मैं एक कष्ट सा अनुभव कर रहा था…परन्तु फिर भी मैं चुपचाप बैठा रहा।

"आने वाले दिन के लिए उसने चीते के शिकार का प्रस्ताव रक्खा। युद्ध और शिकार उसके दो मुख्य मनोरंजन थे। यहाँ तक कि उसे आश्चर्य होता था कि इन दो चीजों को छोड़ मनुष्य किसी और काम में दिलचस्पी ही कैसे रख सकता है! न जाने क्यों—उसे विश्वास हो गया था कि इतनी दूर से उसे प्रसन्न करने या उसकी दिलचस्पियों में साथ देने के लिए ही मैं उसके पास आया हूँ।

"मुझे भी अपने कार्य की सिद्धी के लिए उसकी सहायता की ज़रूरत थी, अतः मैंने उसकी रुचियों और आदतों की जी भर कर प्रशंसा की। वह मुझसे इतना प्रसन्न हुआ कि उसी समय अपने सिखाये हुए पहलवानों की करामातें दिखाने के लिए बेचैन हो उठा। और मुझे महल के बीच वाले अखाड़े में ले जाया गया।

"उसकी आज्ञा पाकर दो नग्न पुरुष अखाड़े में उपस्थित हुए। उनके दोनों हाथों पर लोहे के पंजे लगे हुए थे। दोनों ने प्रवेश

करते ही, अपने-अपने हाथों पर लगे तेज हथियारों से एक दूसरे पर वार प्रारम्भ कर दिये—जिससे दोनों को गहरे घाव हुए और उनकी काली चमड़ियों में से .खून की धाराएं बहने लगीं।

"देर तक वे उसी दशा में लड़ते रहे। जब तक उन तीक्ष्ण अस्त्रों से दोनों के शरीर क्षत-विक्षत न हो गए—वे परस्पर वार करते ही रहे। उनमें से एक का जबड़ा टूट गया और दूसरे के कान के तीन हिस्से हो गए।

"राजकुमार राक्षसी संतुष्टि का अनुभव करते हुए, अति प्रसन्नता से सुअर की नाईं गड़गड़ाने लगा। उनके वारों के साथ ही साथ, वह ज़ोर-ज़ोर से इशारे करता, हाथों से उनकी नकलें उतारता और निरन्तर चिल्ला-चिल्ला कर कहता:—

"मारो! खूब ज़ोर-ज़ोर से मारो! शाबाश!"

"रक्त से लथपथ हो एक खिलाड़ी मूर्च्छित हो गिर पड़ा, इसलिए उसे उठाकर अखाड़े से ले जाया गया। इस पर राजा ने खेद प्रकट करते हुए दुःख से एक आह भरी कि खेल बहुत शीघ्र समाप्त हो गया।

"इस विषय में मेरे विचार सुनने के लिए उसने मेरी ओर मुंह किया। मुझे उसकी उस राक्षसी प्रसन्नता पर बहुत घृणा हो रही थी—परन्तु उसे छिपाते हुए, मैंने ज़ोर-ज़ोर से उसकी वाहवाही की। फिर उसने नौकरों को आज्ञा दी कि मुझे 'रंगमहल' में ले जाया जाय— जहाँ मेरे ठहरने का प्रबन्ध किया गया था।

"यह रंगमहल राजा के पार्क के सिरे पर बना हुआ था। महल की एक दीवार विहारा की पवित्र झील में बनाई गई थी। यह महल चौरस आकार का था। इसमें कमरों की तीन कतारें थीं—

जिनके स्तम्भों की पंक्तियों पर बहुत सुन्दर कारीगरी का काम किया गया था। हर कोने पर हल्के, बड़े-बड़े और कहीं छोटे-छोटे मीनार थे। किसी कोने पर एक बुर्ज़ था तो किसी पर दो। हर मीनार दूसरे से भिन्न था। सब के सब पूर्वी शिल्पकला रूपी सुन्दर पौदे पर लगे हुए तरह-तरह के फूल जान पड़ते हैं। हर एक के ऊपर अद्भुत छत थी—जो फैशनेबल स्त्रियों की टोपियों की नाईं जान पड़ती थी।

"महल के मध्य में घड़ी के बुर्ज़ के पास एक बड़ा सा गोल गुम्बद बना था—जो सुन्दर स्त्री की छाती की तरह उभड़ा हुआ नज़र आता था।

"सारी इमारत में ऊपर से नीचे तक आकर्षक मनमोहक बुत-तराशी का काम हुआ था। चित्रों में भारतीय आचरण और रस्म रिवाजों का चित्रण—पत्थर पर खुदे हुए कोमल मौन आकारों में चित्रित था।

"कमरे में दानेदार महराबों वाली खिड़कियों के बीच में से रोशनी आती थी। ये खिड़कियाँ बाग की ओर खुलती थीं। कमरे के फ़र्श संगमरमर के बने थे—जिनपर सुलेमानी और अकीक पत्थरों में नाजुक कोमल गुलदस्तों के नमूने बने थे।

"कठिनता से अभी मैं तैयार ही हो पाया था कि दरबार का बड़ा पंडित हरिदास, जो मेरे और राजकुमार के परस्पर एक दूसरे को सन्देश देने के काम पर नियुक्त था, आया और बोला—"महाराज आपके पास आ रहे हैं।"

"केसरी रंग के कपड़ों में लिपटा राजा आ पहुँचा। हाथ मिलाने के बाद वह मुझसे विभिन्न विषयों पर बातें करने लगा...

साथ-साथ उनके विषय में मेरी भी राय पूछ लेता था, जिसे प्रकट करने के लिए मुझे कुछ कठिनाई का सामना करना पड़ता था। फिर उसने मुझे बाग के दूसरे छोर के—जहाँ पहला महल बना था—खंडहर दिखाने की इच्छा प्रकट की।

"वह स्थान पत्थरों का जंगल था—और वानरों का प्रदेश। हमारे वहाँ पहुँचते ही नर वानर हमारी ओर भयानक मुखाकृति बनाकर देखते हुए—दीवारों के साथ-साथ भागने लगे। बन्दरियाँ भी अपने बच्चों को छाती से चिपकाये तीव्र गति से भागने लगीं। राजा खिलखिला पड़ा। मेरा ध्यान उस ओर आकर्षित करने के लिए, ख़ुशी प्रकट करते हुए उसने मेरी बाँह पर ज़ोर से चुटकी काटी। तब हम खण्डहरों के दरमियान बैठ गए। हमारे चारों ओर दीवारों के सिरों पर, ऊँचे अड्डों पर पल्थी मार कर बैठे जानवर—अपने सफ़ेद गलमुच्छों के बीच में से ज़बानें निकाल—हमारी ओर घूंसे दिखा रहे थे।

"जब कुछ देर राजा यह दृश्य देख चुका तो वह उठा और मुझे अपनी बगल में ले, गंभीर स्थिर चाल से चलने लगा। उसने इस बात पर प्रसन्नता प्रकट की कि मेरे वहाँ पहुँचने के पहले ही दिन वह मुझे ऐसे ऐसे अद्भुत दृश्य दिखा सका है। साथ ही साथ बार-बार वह मुझे याद दिला देता था कि मेरे स्वागत के उपलक्ष में अगले दिन शानदार चीते का शिकार होगा।

"पल भर में ही उसने दो-तीन-दस-बीस—उस देश के अनेकों जानवर मार डाले। तेंदुआ, रीछ, हाथी, मृग और मगरमच्छ—मेरा अनुमान है उसने उस देश के लगभग आधे जानवर तो मार ही डाले होंगे। इतने रक्त का बहाव देख मेरा मन विरक्त हो गया

और मुझे उससे बहुत घृणा हुई। इस दृश्य को देखते-देखते मैं थक कर बहुत उकता गया था। यह भी एक विचित्र प्रसन्नता का तरीका था—। मुझे उससे बड़ी घृणा होने लगी।

"कुछ देर बाद जब राजकुमार का वह उत्साह थोड़ा शान्त हुआ—तो मेरी विनीत प्रार्थना पर उसने कुछ देर के लिए—मुझे अपना काम करने के लिए अकेले जाने की आज्ञा दे दी। वह इस बात से प्रसन्न था कि वह मुझे एक अत्यन्त बहुमूल्य उपहार भेजेगा। थोड़ी देर बाद उसने मुझे हीरे जवाहरात, कीमती पत्थर और तरह-तरह के जानवरों की खालें आदि उपहारस्वरूप भेजीं। ये सब उपहार हरिदास के हाथ भेजे गए थे। यद्यपि हरिदास मुझसे बड़ी घृणा करता था—तथापि वे उपहार उसने मेरे सामने इस प्रकार आदर पूर्वक रखे—मानो मैं प्रत्यक्ष सूर्यदेव होऊँ।

"प्रतिदिन नौकरों का समूह, जो-जो खाने राजा के महल में परोसे जाते, सभी का कुछ अंश मेरे लिए लेकर आता था। प्रतिदिन महाराजा बन्दरियों के नाच, बाजीगरों का तमाशा, सैनिकों की जाँच पड़ताल, आदि नित्य नयी चीजें दिखाने में बहुत प्रसन्नता अनुभव करता था। वह बड़े उत्साहपूर्वक अपने देश की करामातें मुझे दिखाता····अतः उनमें दिलचस्पी न दिखाकर मेरे लिए उसे दुःख पहुँचाना या कष्ट करना संभव न था—मैं भी उन्हें देखकर बनावटी प्रसन्नता प्रकट कर देता था।

"जब कभी मुझे कुछ देर के लिए अकेला छोड़ा जाता—तो या तो मैं काम में निमग्न हो जाता या उन बन्दरों को देखने चला जाता, जिनका साथ मुझे राजा के साथ से कहीं अधिक प्रिय था।

"एक दिन घूमने के बाद जब मैं वापिस पहुँचा—तो हरिदास

मेरे महल के दरवाज़े के बाहर बैठा था। उसने मुझे पहेलियाँ डालते हुए बड़े गुप्त ढंग से बताया कि मेरे महल में राजा द्वारा भेजा गया उपहार पहुँचा दिया गया है। और यह भी कहा कि इतनी देर तक वह उपहार न भेज सकने का राजा को बहुत रंज है।

"ये अधूरे गुप्त शब्द कहकर राजदूत मेरे आगे सम्मान प्रदर्शन के लिए झुका—और चला गया।

"जिस प्रकार कबाब बनाने वाले सीखचों में सामन मछलियाँ एक दूसरे के साथ बंधी होती हैं, ठीक उसी तरह जब मैं कमरे में पहुँचा, तो देखा कि छोटी-छोटी कन्यायें दीवार के साथ''परस्पर सिमटी चुपचाप सहमी सी खड़ी हैं। सबसे बड़ी लड़की की आयु लगभग दस वर्ष, और सबसे छोटी की आठ वर्ष होगी। क्षण भर के लिए मेरी समझ में न आया कि ये छोटी-छोटी बालिकायें मेरे कमरे में क्यों खड़ी हैं!—परन्तु फिर मुझे राजा के विचित्र जंगली-पन का ध्यान आया। उसने वे लड़कियाँ मुझे अपने महल से भेजी थीं। वहाँ पर जितनी ही अपरिपक्व कन्या हो, उतनी ही वह कीमती समझी जाती थी।

"कुछ देर के लिए व्याकुल सा हो मैं घबड़ा गया'''और उन बच्चों को देख मुझे अत्यन्त लज्जा अनुभव हुई। वे बच्चे पहले से ही जानते थे—कि मैं उनके साथ क्या व्यवहार करूँगा।

"मुझे कुछ समझ न आया कि मैं उनसे क्या बात करूं! पहले मैंने सोचा कि उन्हें वापिस लौटा दूं। परन्तु राजा का उपहार वापिस भी नहीं भेजा जा सकता था, क्योंकि ऐसा करना, राजा का प्रत्यक्ष अपमान समझा जाता। अतः मैं उन बालिकाओं की सेना को महल में रखने के लिए बाध्य था।

"वे चुपचाप खड़ीं—मेरी ओर आँखें लगाये···मेरी आँखों में से मेरे मनोभाव पढ़ने का प्रयत्न करती हुईं···मेरी आज्ञा की प्रतीक्षा कर रही थीं। मैंने कितनी हास्यप्रद बात की, कि उस प्रसन्नता को तिलांजली दे दी। अन्त में यह सोचकर कि ये सब बालिकायें मुझे अजनबी बेहूदा व्यक्ति समझ रही होंगी···मैंने उनमें से सब से बड़ी लड़की का नाम पूछा।

'चार्ली' उसने उत्तर दिया।

"इस छोटी सी बालिका का नर्म-नर्म कोमल जरा सा हाथी दांत का सा पीला श्वेत रंग था—और सचमुच ही वह मूर्ति की तरह सुन्दर थी। उसके चेहरे का आकार और लम्बी-लम्बी शरीर की आकृति की रेखायें सब मूर्ति के समान मूर्तिवत् परन्तु आकर्षक जान पड़ती थीं।

"मैंने कुछ उसे लज्जित करने तथा कुछ यह जानने के लिए कि वह इस प्रश्न का क्या उत्तर देती है, उससे प्रश्न किया:—

"तुम यहां किसलिए आई हो?"

"अपनी कोमल मधुर आवाज़ में वह बोली:—"मैं केवल आपही की सेवा में नियुक्त हो कर, जो भी मेरे स्वामी चाहें—उसे पूरा करने के लिए ही यहाँ उपस्थित हुई हूँ।"

"प्रत्यक्षतः वह यह सब मेरे अधीन होने के कारण कह रही थी।

"तब मैंने सब से छोटी लड़की से भी वही प्रश्न पूछा। वह एक तीखी तुतली भाषा में बोली—"जो कुछ आप आज्ञा दें—उसी को पूरा करने के लिए मैं आपके सामने खड़ी हूँ, मेरे देव।"

"यह छोटी सी बालिका—चूहे के समान छोटी सी जान पड़ती

थी—वैसे और भी सभी बच्चे उसी तरह छोटे-छोटे थे। अतः मैंने उसे अपनी भुजाओं में उठा लिया—और उसका चुम्बन लिया। अन्य पाँचों बालिकायें यह देख पीछे हटने लगीं, निसंदेह यह सोच कर कि मैंने उनमें से चुनाव करके ही उस बालिका को उठाया है। परन्तु मैंने उन्हें वहीं खड़ा रहने का आदेश दे दिया। फिर भारतीय ढंग से पल्थीमार कर बैठ, उन सब बालिकाओं को मैंने अपने इर्द गिर्द गोलचक्र में बिठा लिया, और उन्हें परियों व फ़रिश्तों की कहानियाँ सुनाने लगा—मैं उनकी भाषा बोलना काफ़ी अच्छी तरह जानता था।

"वे बड़े ध्यानपूर्वक मेरी कहानी सुन रही थीं''' बीच-बीच में कई घटनायें सुन दुःख से अपने हाथ मलतीं और कांप उठती थीं। अभागी बालायें। अब वे भूल चुकी थीं कि उन्हें मेरे पास किस लिये भेजा गया था।

"जब मैं कहानी कह चुका, तो मैंने अपने विश्वसनीय नौकर, लच्मण्या को बुलाया और उसे मिठाईयां, केक और बच्चों के खाने की मीठी गोलियाँ लाने को कहा। सबने भर पेट इतना खाया कि उनमें से एक आध का बीमार हो जाना कोई आश्चर्य की बात न थी। जब मैंने देखा—कि मेरा व्यवहार बड़ा विचित्र रहा है, तो मैंने अपनी उन छोटी-छोटी स्त्रियों को प्रसन्न करने के लिए और खेल बताये।

"एक खेल ख़ूब सफल रहा। मैंने अपनी टांगों का पुल बनाया—और सब से छोटी बच्ची की अध्यक्षता में सब बच्चों को उसके नीचे से भागने को कहा। वे पंक्ति में भागने लगे। अन्त में जब सब से बड़ी कन्या भागती, तो हर बार उसका सिर टांगों से

टकरा जाता क्योंकि वह अपने सिर को अधिक झुकाती न थी। इस खेल से वे सब खुशी के मारे चिल्लाने लगीं। ये छोटी-छोटी खुशी की ध्वनियाँ मेरे विशाल महल की छोटी-छोटी मीनारों से टकराती हुई सारे महल को सजीव सा कर रही थीं।—और उनमें बालपन की सहज स्वभाविक प्रसन्नता, व नवीन स्वच्छ जीवन का संचार कर रही थीं।

"फिर मैंने बड़ी सावधानी और दिलचस्पी से अपनी भोली भाली अविवाहित स्त्रियों अथवा नन्हीं-नन्हीं बालिकाओं के सोने का उचित प्रबन्ध किया। वे चार नौकरानियाँ, जो उन बच्चों की देख रेख के लिए राजकुमार ने भेजी थी—मैंने उन्हें बच्चों के सोने के कमरे के बाहर नियुक्त कर दिया।

"एक सप्ताह तक मैंने इन जीती जागती गुड़ियों के साथ पूर्णतया एक योग्य पिता का सा कर्तव्य पालन किया। हम बहुत बार 'आंख-मचौली' और 'बिल्ली आई! बिल्ली आई!' के खेल खेलते—जिससे वे सब बहुत प्रसन्न होतीं। उन्हें नित नई प्रसन्नता देने के लिए मैं उन्हें हर रोज़ कोई न कोई नया खेल सिखाता।

"अब मेरा महल एक अच्छी नर्सरी सा बन गया था। और मेरी छोटी-छोटी बाल सखियां—नन्हे-नन्हे मानवी पशुओं की नाईं, सुन्दर रेशमी नये-नये सोने और चाँदी से काढ़े हुए कपड़े पहने, लम्बी-लम्बी गैलरीयों और मौन कमरों में ऊपर से नीचे तक इधर-उधर दौड़ती फिरतीं।

"चाली एक बहुत ही मनमोहक, डरपोक तथा कोमल छोटी सी प्रिय बालिका थी। कुछ लजाते हुए⋯कुछ विदेशी आचार-व्यवहार से घबराते हुए, संकोचवश सकुचाते हुए, वह मुझे बेहद प्यार करने

लगी। मैं भी उसे बहुत चाहने लगा था—मानों वह मेरी अपनी बेटी हो।

"शेष पाँचों बालिकायें भी प्रसन्न बलूरों की नाईं महल में इधर उधर दौड़ती खेलती रहती। मेरे राजकुमार के पास मिलने के लिए आने के अतिरिक्त—चाली हर समय मेरे साथ रहती।

"हम दोनों ने उस महल के खण्डहारों में—उन बन्दरों के बीच—जो अब हमारे मित्र बन चुके थे, बड़े आनन्द के दिन बिताये।

"वह मेरे घुटनों के सहारे लेटी-लेटी, चुपचाप शान्त मन से, अपने छोटे से मस्तिष्क में अनेकों बातें सोचा करती या संभव है कि चुपचाप सुन्दर, मनमोहक पैत्रिक ढंग से स्वप्नों में खोये से स्वर्गीय पवित्र मूर्ति का सा चेहरा बनाये मेरी गोद में बिना कुछ सोचे ही प्रेम पूर्वक पड़ी रहती हो।

"एक दिन एक पीतल के बर्तन में मैं बहुत से फल, केक, बिस्कुट और अनेकों ऐसी ऐसी अन्य वस्तुएं लाया। बन्दर हमारे बहुत समीप आने लगे। उनके पीछे-पीछे उनके बच्चे भी आ रहे थे'''जो बन्दरों की अपेक्षा हमारे निकट आने से अधिक भय खाते थे। अन्त में वे सब बन्दर हमारे इर्द गिर्द गोलचक्र में बैठ गए। वे हमारे अधिक समीप आने से डरते थे—इसलिए वहीं बैठे प्रतीक्षा करने लगे कि मैं उन्हें उनके स्थानों पर ही वे सब कोमल खाद्य पदार्थ बांट दूं। फिर एक नर-वानर, जो बाकी सब से अधिक साहसवान था—बार-बार मेरे समीप आता और भिखारी की तरह हाथ पसार देता था। मैं उसके हाथ में कुछ खाद्य रख देता—जो वह जाकर जल्दी से अपनी पत्नी को दे आता था। बाकी सभी

क्रोध और ईर्ष्या से चीखें मारने लगे। और जब तक मैंने हर एक के सामने उसके हिस्से के फल आदि रख न दिये—तब तक उनका चिल्लाना जारी रहा।

"उन खण्डहरों में अधिक आराम महसूस करने के कारण मैं अपने काम करने के अस्त्र और औज़ार आदि भी वहीं ले आया था, ताकि मैं निर्विघ्न अपना काम कर सकूं। .खैर, जब उन वानरों ने पीतल से मढ़े हुए मेरे वैज्ञानिक अस्त्र-शस्त्र देखे तो उन्हें भयानक इन्जन समझ—वे सब के सब दर्दनाक चिल्लाहट करते हुए भाग खड़े हुए।

"प्राय: सांयकाल मैं घर के भीतर ही चाली के साथ किसी गैलरी में बिताता था—जहाँ से विहारा की झील दिखाई देती थी। एक दिन रात के समय हमने चुपचाप आकाश में बहते हुए चाँद को देखा जो पानी की काँपती लहराती लहरों को धवल चाँदनी का दुपट्टा ओढ़ा रहा था। और उसके आगे किनारे पर छोटे-छोटे रेत के मन्दिरों की कतार···जो अकाशधूली की तरह खोदी हुई जान पड़ती थी—और जिसकी परछाई पानी के भीतर उगी सी जान पड़ती थी—उस पर भी खिली हुई मुसकाती चाँदनी खेल रही थी। अपनी छोटी सी स्त्री के विचारशील सिर को दोनों हाथों में लिये मैंने उसकी लम्बी चिकनी भौहों पर, बड़ी-बड़ी प्राचीन भारतीय ढ़ंग की आकर्षक आँखों पर, शान्त स्निग्ध अधरों पर·· जो मेरे चुम्बन के लिए ही खुले थे···देर तक दीर्घ कोमल चुम्बन लिये। तब मुझे एक धुंधली, शक्तिशाली, प्रबल, शायराना हलचल का अनुभव हुआ ··एक ऐसा आवेग, मानों इस लड़की में ही सारी जाति सीमित हो···वह मौलिक जाति—जो सभी जातियों का स्त्रोत है।

"ख़ैर—राजकुमार पहले ही की तरह मुझे उपहारों पर उपहार भेजता रहा। एक दिन उसने एक बड़ा कल्पना से भी परे का नया सा पदार्थ, उपहार रूप में भेजा—जिसे देख चाली बहुत विस्मित हुई। यह पदार्थ केवल एक गत्ते का बक्स था, जिसके ऊपर बाहर की ओर छिलके मढ़े हुए थे—जो किसी भी विदेशी इलाके में समुद्र के पास एक दो पैसों में मिल सकता है। परन्तु उसके बीच एक अमूल्य क़ीमती हीरा जड़ा था—जो कि उस देश में पहली बार पहुँचा था। मैंने उसे मेज़ पर रख दिया, और सोचने लगा कि इस विचित्र नग का बाज़ार में क्या दाम होगा?

"परन्तु चाली उसे देखती-देखती थकती न थी और मुक्त कंठ से बार-बार उसकी प्रशंसा कर रही थी। बार-बार वह मुझ से पूछ लेती थी—"क्या मैं इसे छू सकती हूँ?" जब मैंने उसे अनुमति दे दी, तो उसने उसका ढ़कना उठाया और बड़ी सावधानी से उसे फिर बन्द कर दिया....फिर उसने छिलकों का अपने हाथ से स्पर्श किया—उन दोनों के परस्पर मेल से सचमुच ही उसे एक अतीव शारीरिक सुख का अनुभव हुआ।

"मेरा वैज्ञानिक खोज का काम समाप्त हो गया और मेरे वापिस लौटने का समय भी आ गया। मैं देर तक वापिस जाने के विषय में सोचता रहा। अपनी छोटी सी साथिन के साथ, प्रसन्नता पूर्वक रहता रहा, परन्तु अन्त में वापिस जाने का दिन नियत करना ही पड़ा।

"पन्द्रह दिन के लिए राजकुमार मुझे नये शिकार और कुश्तियाँ आदि दिखाने ले जाता रहा। पन्द्रह दिन के बाद मैंने उसे सूचना दी कि अब और अधिक देर मैं न ठहर सकूंगा। अतः

मैंने उससे जाने के लिए विधिवत् छुट्टी ले ली।

"चाली से मेरी विदा बहुत दर्दनाक थी। वह मेरे साथ पड़ी, मेरी छाती पर सिर रखे—सिसकियां भर-भर कर रो रही थी। मुझे पता न लगता था कि मैं उसे कैसे सान्त्वना दूं। मेरे चुम्बन उसे चुप कराने या ढाढस बंधाने की अपेक्षा और भी रुला रहे थे।

"अचानक मेरे मन में एक विचार आया। मैं उठा और जाकर वह छिलकों वाला बक्स ले आया। बक्स उसके हाथ में थमाते हुए, मैंने स्नेह पूर्वक कहा: "यह तुम्हारे लिए है, तुम ले लो इसे!"

'यह सुन—पहले तो वह कुछ मुसकराई एक स्वभाविक प्रसन्नता उसके चेहरे पर चमक उठी'''एक तीव्र प्रफुल्लता'''जो असंभव स्वप्नों के संभव हो जाने पर मनुष्य अनुभव करता है'''और उसने मुझे ज़ोर से आलिंगन में ले लिया।

"जब मैंने उससे अन्तिम विदा ली—तो उसकी आँखें लाल थीं—और वह ज़ोर-ज़ोर से सिसक रही थी।

"मैंने उसे पैत्रिक चुम्बन दिये, और अपनी शेष छोटी-छोटी पत्नियों को केक आदि भेंट कर, मैं अपने देश के लिए चल पड़ा।

(२)

"दो वर्ष बाद मुझे फिर कार्यवश बम्बई आना पड़ा। क्योंकि मैं वहां की भाषा तथा स्थानों से भली भान्ति परिचित था, इसलिए एक बार फिर मुझे दूसरे किसी काम पर नियुक्त कर भारत भेजा गया।

"जितनी शीघ्रता से वह काम मैं कर सकता था कर दिया और मेरे पास बहुत सा शेष समय बच गया था—अतः मैंने फिर से अपने परिचित मित्र राजा मदन और अपनी प्रिय बालिका चाली को मिलने का विचार किया। मेरा ख्याल था कि इन दो सालों में

चाली बहुत कुछ बदल चुकी होगी।

"राजा ने बड़ी धूमधाम से मेरा स्वागत किया। पहले दिन तो सारा समय मुझे उसके साथ ही रहना पड़ा। रात को जब मैं अकेला रह गया—तो मैंने हरिदास को बुलाया। और इधर-उधर के अनेक प्रश्न पूछने के बाद, उसने पूछा :

" 'क्या तुम जानते हो कि उस छोटी सी बालिका चाली का क्या हुआ, जो राजा ने मुझे भेजी थी ? कहाँ है वह इन दिनों ?"

"वह दुःखी पीड़ित दृष्टि से प्रत्यक्षतः कुछ घबड़ा कर बोला:—

" 'अच्छा होगा कि आप उसके विषय में मुझ से कुछ न पूछें—उसकी बात जाने ही दें।"

" 'क्यों ? वह तो एक प्रिय सुन्दर बालिका थी।'

" 'उसका बुरा हाल हुआ, जनाब।"

" 'क्या कहा ? चाली का ? क्या हाल हुआ ? कहाँ है वह ?

" 'मेरा कहने का अभिप्राय है...कि उसका अन्त बहुत बुरा हुआ।'

" 'बुरा अन्त ? क्या वह मर गई ?"

"जी हाँ। उसने एक बड़ा भयानक काम किया था। "मुझे बड़ा रंज हुआ। और मेरा दिल धड़कने लगा। परन्तु मैं जानना चाहता था कि उसने क्या बुरा काम किया और कैसे उसका अन्त हुआ। अतः मैंने अपनी यह उत्सुकता हरिदास के सम्मुख प्रकट की।'

"हरिदास की घबराहट बढ़ती चली गई। फिर वह गुन गुनाया :—अच्छा होता यदि आप इस विषय की चर्चा ही न करते।'

" 'परन्तु मैं जानना चाहता हूँ !"

" 'उसने चुराकर—'

" 'कौन—चाली ? उसने क्या चुराया ?'

" 'आपकी कोई चीज़ ?"

" 'मेरी ? वह क्या भला ?'

" 'जिस दिन आप गये—उसने आपका वह छोटा सा बक्स—जो राजकुमार ने आपको भेंट दिया था—चुरा लिया। वह उसके हाथों में पाया गया।'

" 'तुम किस बक्स की बात कर रहे हो ?'

" 'वह बक्स, जो छिलकों से मढ़ित था।'

" 'परन्तु वह तो मैंने स्वयं ही उसे दिया था—

" 'हरिदास—जड़वत् हो, मेरी ओर देखने लगा। फिर बोला:—".ख़ैर, उसने सहस्त्रों पवित्र शपथें लीं कि वह बक्स आप ने स्वयं ही उसको भेंट किया था—परन्तु किसी को यह विश्वास ही न हो सकता था कि आप ने राजा का उपहार एक ग़ुलाम को दे दिया होगा ! इसलिए राजा ने उसे दण्ड दिया।"

" 'उसे क्या दण्ड दिया ? क्या व्यवहार हुआ उससे ?'

" 'उसे बोरी में बन्द कर—इस खिड़की में से—इसी कमरे की उस सामने वाली खिड़की से—जहाँ उसने चोरी की थी—झील में फेंक दिया गया।

" 'मुझे जीवन में सब से बड़ा अघात पहुँचा। इशारे से हरिदास को मैंने भेज दिया'''ताकि वहीं वह मेरे आंसू न देख ले। सारी रात मैंने गैलरी में ही बिता दी''''वही गैलरी जहाँ वह छोटी सी बाला मेरी जांघों पर बैठा करती थी'''और वहाँ बैठे २ बोरी में बन्द उस छोटी सी प्रिय बाला के शरीर के स्वप्न लेता रहा'''जिसे दो वर्ष

हुए नीचे दिखाई दे रहे गहरे पनी में डुबो दिया गया था।

"राजा ने बहुत मिन्नत समानत की—बहुत कहा सुना···· परन्तु अगले ही दिन सुबह मैं वहां से वापिस चल पड़ा····जिससे राजा ने दुःख अनुभव किया। मुझे अब तक ऐसा अनुभव होता है कि मैंने चाली के सिवा कभी किसी स्त्री को प्रेम नहीं किया।

प्रतिनिधी

"मैडम बोन्डेराय ?"

"हां—मैडम बोन्डेराय ही।"

"नहीं, नहीं यह कैसे हो सकता है ?"

"मैं कह रहा हूँ, बिल्कुल सही बात है।"

मैडम बोन्डेराय ?—वह वृद्धा, जो लेस वाली टोपी पहनती है ? वह तपस्विनी…धर्मात्मा, सम्माननीय वृद्धा—मैडम बोन्डेराय ? जिसके छोटे-छोटे बनावटी घूंघराले बाल, गोंद के द्वारा सिर पर चिपकाये जान पड़ते हैं.

"हां—वही।"

"ओह…नहीं-नहीं। पागल मत बनो। यह कैसे हो सकता है ?"

"मैं शपथ खाकर कहता हूँ कि वह मैडम बोन्डेराय ही है।"

"तो कृपया मुझे विस्तारपूर्वक सुनाओ।"

"बात इस तरह हुई कि:—

"मोनसियर बोन्डेराय…जो एक वकील था…जब वह अभी जीवित था, तो लोग कहा करते थे कि उसकी पत्नी—मैडम बोन्डेराय—उसके क्लर्कों को अपनी वासना तुष्टि के लिए इस्तेमाल

का दिन आ गया ''परन्तु मैं बिस्तर छोड़ने योग्य न हो सका। मुझे बहुत चिढ़ आई—विशेषतया उन दस फ्रैंकों को खोने के विचार से। मैंने मन ही मन सोचा—यदि वहां कोई और चला गया तो मेरा काम सदा के लिए चौपट हो जायगा। और वह—अवश्यमेव किसी न किसी अश्वारोही को पकड़ कर अपने साथ ले जायगी' इस बात को सोचते ही मुझे बहुत क्रोध आया। इसलिए मैंने अपने ही देश के अपने साथी—'पोमिले' को बुलाया और स्पष्टतया सारी बात उसके सम्मुख रख दी।

" ' "पांच फ्रैन्कज़ तुम्हारे होंगे और पांच मेरे।" ' " मैंने उसे कहा। वह इस बात पर मान गया। और सब बातें मुझसे समझ चल पड़ा। जब उसने दरवाज़ा खटखटाया, तो वह स्वयं आकर उसे भीतर ले गई। उसने ऊपर मुंह उठा कर देखा तक भी तो न—अतः वह यह भी न जान पाई कि आगन्तुक मुझे छोड़ कोई अन्य ही था। आप तो जानते ही हैं, कैप्टन! हैलमेट पहने हुए एक अश्वारोही फ़ौजी का आकार दूसरे से बहुत साम्य रखता है।

"परन्तु सहसा उसने पुरुष-परिवर्तन पर ध्यान दिया। और क्रोधित हो बोली, " ' "तुम कौन हो? क्या चाहते हो? मैं तुम्हें नहीं जानती।" ' "

तब पोमिले ने उसे समझाने का प्रयत्न किया। उसने बताया कि मैं बीमार हूँ—और वह मेरा प्रतिनिधि है। उसने उसकी ओर देखा। उससे शपथ ली-कि वह इस भेद को गुप्त रक्खेगा।—और फिर स्वीकार कर लिया। जैसाकि स्वभाविक ही था—क्योंकि पोमिले भी तो कुरूप नहीं! जब वह वापिस लौटा-तो उसने मुझे मेरे पाँच फ्रैन्कज़ देने से इन्कार कर दिया। यदि वे फ्रैन्क मैंने

"हां। मैडम बोन्डेराय के कारण ही उन दोनों के बीच झगड़ा हुआ। चलो, मैं तुम्हें सिवैले से ही सारा किस्सा सुनवाता हूँ।"

"बात इस तरह हुई कप्तान साहब, कि लगभग एक या डेढ़ वर्ष पहले, एक दिन जब मैं शाम के छः सात बजे, बारकों के बाहर घूम रहा था, तो एक स्त्री ने'''साधारणतया जैसेकि वह अपना रास्ता पूछ रही हो, आकर मुझ से कहा : ' ' 'फ़ौजी ! क्या तुम ईमानदारी से दस .फ़्रैन्क प्रति सप्ताह कमाना चाहते हो ?' "

" 'बेशक ! निश्चय ही' " मैंने कहा।

" 'अच्छा, तो कल सुबह बारह बजे मुझे आकर मिलना। मैं मैंडल बोन्डेराय हूँ और मेरा पता है—नं० ६ रू-डी-ला ट्रांचे !' "

" 'मैं बिलकुल ठीक समय पर आपकी सेवा में आ उपस्थित हूँगा।' " मैंने कहा।

तब वह प्रसन्न हो, लौटते समय कहने लगी—" 'फ़ौजी, मैं तुम्हें धन्यवाद देती हूँ !' "

" 'मैं आपको धन्यवाद देता हूँ, मैडम' " मैंने उत्तर दिया। बात समझने के लिए मैंने बहुतेरा सिर पटका—यहां तक कि निश्चित समय भी आ पहुँचा, परन्तु मुझे तनिक भी पता न चला कि मुझे क्या करना होगा।"

"ठीक बारह बजे मैंने घंटी बजाई। वह स्वयं आकर मुझे भीतर ले गई। उसका सिर कई रंग बिरंगे फ़ीतों (रिबनों) से गूँथा हुआ था। " ' "हमें जल्दी करनी चाहिये," वह बोली, "कहीं मेरा नौकर वापिस न आ जाय।" ' "

" ' "मैं जल्दी करने के लिए तैय्यार हूँ मैडम, परन्तु मुझे करना क्या होगा ?" ' "

वह मुसकरा दी। और बोली—" 'इतना भी नहीं समझते क्या?—बुद्धू कहीं के।' "

" 'मैं सच कहता हूँ कैपटन, पता मुझे तब भी न चला था। वह आकर मेरे बिलकुल निकट बैठ गई और कहने लगी—" ' " यदि तुमने किसी से इस बात की चर्चा की, तो याद रखना मैं तुम्हें जेल भिजवा दूंगी। इसलिए शपथ लो, कि तुम इस विषय में अपना मुंह बिल्कुल बंद रखोगे।' ' "

"मैंने उसके आदेशानुसार शपथ ले ली—यद्यपि तब भी मुझे बात समझ न आई।''''मेरा माथा पसीने से तर हो गया—मैंने उसे पोंछने के लिए जेब से रूमाल निकाला। उसने रूमाल मुझ से छीन ली—और स्वयं मेरे माथे का पसीना पोंछने लगी। फिर उसने मेरा चुम्बन ले लिया'''और आहिस्ते से मेरे कान में बोली— " 'तो तुम करोगे न!' "

" ' "जो कुछ भी आप कहें, मैं करने को तैय्यार हूँ, मैडम! मैंने उत्तर दिया, " 'क्योंकि इसीलिए तो मैं आपके पास उपस्थित हुआ हूँ।" ' "

"तब उसने हाव-भाव से अपना अभिप्राय पूर्णतया समझा दिया। जब मैं उसका अर्थ ठीक-ठीक समझ गया-तो मैंने अपनी हैलमेट उतार, एक तरफ़ कुर्सी पर रख दी। और उसे प्रमाणित कर दिया कि एक अश्वारोही इससे कभी नहीं चुकता, कैपटन।"

"मैं उसकी कोई विशेष परवाह भी न करता था, क्योंकि उसका यौवन ढल चुका था। परन्तु ऐसे कामों में—यौवन की इतनी परवाह ही क्या हो? विशेषतया जबकि 'फ्रैंक' भी इतने दुर्लभ हैं। और मेरे ऐसे सम्बन्धी भी थे जिनकी मैं कुछ सहायता करना चाहता

खाने के बाद, का वह एक मन चेहता वक्ता था। उसके पास सर्वदा कोई न कोई नई कहानी तैय्यार रहती—अर्थात् उनके मित्र सदा उसकी नई कहानी सुनने को उत्सुक रहते। आज उसने बिना मित्रों के कहे ही एक कहानी शुरू कर दी। मेज़ पर झुके हुए प्लेट के पास ही आधे ब्रान्डी के गिलास को हाथ डाले हुए, काफ़ी की सुगन्ध और तम्बाकू की गन्ध से भरे वातावरण में वह बहुत घुलमिल सा जाता था—जैसे कुछ लोग विशेष अवस्थाओं में अनुभव करते हैं—जैसे स्वर्णिम मछली अपने घर और 'नन' अपने कोनवैन्ट में अनुभव करती है।

सिगार में से धुएं के बादल उड़ाते हुए उसने कहा :—

"कुछ समय पूर्व मेरे साथ एक विचित्र घटना घटी।" सब ने एक स्वर में कहा : "हमें उसके विषय में बताओ।"

उसने कहना शुरू किया:—

"तुम सब जानते ही हो कि प्राचीन वस्तु-विज्ञान वेत्ताओं की तरह मुझे शहर के इर्द-गिर्द चक्कर काटना कितना प्रिय है। मुझे नये-नये लोगों और नये-नये पदार्थों के निरीक्षण से एक अद्भुत आनन्द मिलता है। सितम्बर के मध्य में—एक बार वातावरण बहुत सुहावना था—अतः मैं दोपहर के समय ही सैर के लिए चल पड़ा। मुझे अपने आप भी यह मालूम न था कि मैं कहाँ जाऊंगा। पता नहीं हम पुरुषों में सुन्दरियों से बातचीत करने की एक धुंधली आँकाक्षा क्यों इतनी प्रबल होती है? हम उन्हें दिमाग़ में परखते हैं, उनके सौन्दर्य का किसी दूसरी सुन्दरी से मुकाबला करते हैं—और अन्त में किसी [illegible] के [illegible] से विवाह कर लेते हैं।

किया करती थी। वह मध्यम श्रेणी की उन स्त्रियों में से है, जिनकी बगल में छुरी और मुंह में राम राम होता है…और जो धर्म और नियम के पालन में विशेष आसक्ति दरसाती हैं।

"वह अच्छे अच्छे सुन्दर नवयुवकों पर मोहित हो जाती थी। मैं समझता हूँ—इससे स्वभाविक बात और हो भी क्या सकती है?—क्या हम सभी सुन्दर युवतियों पर लालायित नहीं हो जाते?"

"जब बूढ़े बोन्डेराय की मृत्यु हुई—तो उसकी विधवा पत्नी नियत आय प्राप्त करनेवाले, मध्यम श्रेणी के लोगों की भांति, शान्त और निष्कलंक जीवन व्यतीत करने लगी। वह अब बड़ी लगन से गिरजे जाती—और अपने पड़ोसियों की निन्दा चर्चा में दिलचस्पी लेती—परन्तु उसने कभी किसी को अपनी बुराई करने का अवसर न दिया। जैसाकि तुम जानते ही हो।…ज्यों-ज्यों वह वृद्धा होती चली गई—वह बुद्धिमती चतुर स्त्रियों कि तरह चुल-बुली होती गई। और—यह घटना, जिसपर शायद तुम विश्वास भी न करो—गत शुक्रवार ही घटित हुई!

'मेरा मित्र—जीन डैंगलगेयर…जैसाकि तुम्हें मालूम होगा—अश्वारोही फ़ौज में कप्तान है—जो इन दिनों रू-डी—ला—रिवेट के बारकों में छावनी डाले हैं। जब वह कल सुबह क्वार्टरों में गया, तो उसे पता चला कि अश्वारोही दस्ते के दो फौजियों में बहुत लड़ाई झगड़ा हुआ। बहुत गुथमगुथा होने के बाद अब उन दोनों ने सन्धि कर ली थी। जब उनके अफ़सर ने उनसे लड़ाई झगड़े का कारण पूछा, तो उन्होंने विस्तार-पूर्वक सब किस्सा सुना डाला। उनके झगड़े का मूल कारण—मैडम बोन्डेराय थी।"

"अच्छा!"

अपने ऊपर व्यय करने होते तो मैं तनिक परवाह न करता, परन्तु वे मेरे पिता के भाग के थे। इसलिए मैं यह गड़बड़ सहन न कर सकता था। मैंने उससे कहाः—" ' "तुम जो कुछ कह रहे हो, उसमें भले बुरे का विचार तो करो—तुम्हारे जैसा नीच इस वर्दी के योग्य नहीं।

"उसने यह कहते हुए कि इसमें उसे डबल ड्यूटी से भी अधिक थकावट होती है—अपना मुक्का उठा लिया। बेशक, लोगों के विचार भिन्न-भिन्न होते हैं, कैपटन!—परन्तु उसे पहले ही कह देना चाहिये था। आगे क्या हुआ—वह तो आप जानते ही हैं।'

कप्तान डैंगले मेयर इतना हंसा कि हंसते-हंसते उसकी चीख़ों सी निकल पड़ीं। और जैसे दोनों फ़ौजियों से उसने भेद छुपाये रखने का वायदा किया था—मुझसे भी वह वायदा लिया। "सर्व प्रथम बात तो यह है कि कहीं मुझे धोखा न देना। इस भेद को छुपाये रखना।" वह बोला।

"इसकी आप बिलकुल चिन्ता न करें।—परन्तु अन्त में निर्णय क्या हुआ?"

"यह भी हज़ारों में एक ही मज़ाक है?" वह बोला, "मैडम बोन्डेराय ने दोनों अश्वारोही रख लिये हैं—और दोनों के लिए विशेष दिन नियुक्त हैं--और इस प्रकार दोनों ही फ़ौजी तृप्त और प्रसन्न हैं।"

"वाह यह भी ख़ूब रही।"

अब फिर वह अपने वृद्ध मां बाप को पूर्वत् रुपये भेजता है—और इस प्रकार अपना कर्तव्य पालन करता है और उसके धर्म की रक्षा हो जाती है।

कब्रिस्तान की परियां

पांचों मित्र खाना खा चुके थे। उनमें से दो अविवाहित और तीन विवाहित थे। सभी अधेड़ आयु के धनी पुरुष थे! महीने में एक बार वे इस तरह अतीत की याद में इकट्ठे हुआ करते थे और रात को देर तक कॉफ़ी का प्याला हाथ में लिये बातें करते रहते थे। अनेकों सन्ध्यायें उन्होंने इसी प्रकार हंसी-ख़ुशी में बिताई थीं—क्योंकि वे परस्पर एक दूसरे की संगत पसन्द करते थे। उनकी बातचीत एक प्रकार का—समाचारपत्रों का पुनरावलोकन और उन समस्त विषयों की समालोचना करना था जो पैरिस निवासियों के लिए रुचिकर होते हैं। उनमें से सब से चतुर था—जोसेफ़ डी वार्डन, जो अविवाहित था। वार्डन ने अपना सारा जीवन पूर्ण रंगीलेपन में आवारा घूमते हुए बिताया—परन्तु कभी किसी ने उसकी निन्दा न की। उसे यह जीवन बहुत पसन्द था—क्योंकि अभी वह एक युवक ही था—अर्थात् लगभग ४० वर्ष का। वह यथार्थ रूप में एक संसारी जीव था। वह चटपटा था—परन्तु गंभीर नहीं; वह दुनियादार और बुद्धिमान था परन्तु ज्ञानी न था। तीक्ष्ण बुद्धि था—परन्तु समस्याओं की गहराई तक न पहुंच सकता था। अपने ही रोमांसों और अनुभवों से वह अनेकों कहानियां गढ़ लेता था—जो वह ख़ूब नमक मिर्च लगाकर सुनाता, जिससे वह समाज में बुद्धिमान व ज्ञानी समझा जाता था।

था। मैंने अपने आप से कहा, "इनमें से पांच फ्रैन्क मैं अपने पिता को भेज दिया करूंगा,"

जब मैं वापस जाने लगा ? और चलने के लिए तैयार हुआ—यद्यपि वह मुझे अभी कुछ देर ठहराना चाहती थी। परन्तु मैंने कहा—" "हिसाब साफ़ होना चाहिये, मैडम—ब्रान्डी के एक गिलास पर दो रुपये लगते हैं और दो पर चार।" "

"वह मेरा अभिप्राय समझ गई और चुपके से सोने का दस फ्रैन्क का एक सिक्का मेरी जेब में डाल दिया।—यह सिक्का इतना छोटा होता है कि यदि किसी की जेब ठीक न बनी हो, तो वह क्यारियों में ही पड़ा मिलेगा'''या संभवतः खो ही जाय ! इसलिए जब मैं इसे देख रहा था—तो वह मेरी ओर देखती रही। उसका चेहरा लाल हो गया—क्योंकि उसने मेरे भाव को ग़लत समझा था। और वह बोली "क्या यह काफ़ी नहीं है ?"

" "मेरा अभिप्राय यह कदापि नहीं था—मैडम।" मैंने उत्तर दिया, "परन्तु यदि इसमें आपको कोई हर्ज न हो—तो मैं एक की अपेक्षा पांच-पांच फ्रैन्कज़ के दो सिक्के लेना पसन्द करूंगा।"

"उसने झट से पांच-पांच के दो सिक्के निकाल कर मुझे दे दिये—और मैं वापिस लौट आया। कैपटन ! यह सिलसिला गत डेढ़ वर्ष से इसी प्रकार चलता आ रहा है। मैं हर मंगलवार की शाम को'''जब आप मुझे बारक से बाहर जाने की छुट्टी देते हैं, वहां चला जाता हूँ। वह यह व्यवहार नौकर के शयन-शैय्या पर चले जाने के बाद ही, पसन्द करती है। परन्तु पिछले सप्ताह मेरा स्वास्थ्य ठीक न होने के कारण हस्पताल जाना पड़ा।—मंगलवार

भरी नहीं—अतः मेरे चेहरे से ही उसने अनुभव कर लिया था कि मैं उसे सान्त्वना देने के लिए उत्सुक हूँ—क्योंकि उसकी प्रथम दृष्टि में ही मेरी स्निग्धता के लिए कृतज्ञता के भाव अंकित थे। सिसकते हुए उसने बताया कि जिस अफ़सर की कब्र पर वह रो रही थी—वह उसका पति था और अभी एक ही वर्ष पहले उन दोनों का विवाह हुआ था और वह स्वयं एक अनाथ बालिका थी जिसके पास आवश्यक देहज के अतिरिक्त कुछ भी न था।

"मैंने उसे सान्त्वना दी—आश्वासन दिया और खड़े होने में सहायता दी। फिर मैं उससे कहने लगा: "आपको अधिक देर तक यहां नहीं ठहरना चाहिये, चलिये! मेरे साथ चलिये।"

"मुझमें तो चलने की शक्ति ही नहीं" उसने धीमे स्वर में उत्तर दिया।

"आइये। मैं आप की सहायता करता हूँ।" मैंने कहा।

" 'धन्यवाद। आप बहुत दयालु हैं।' वह गुनगुनाते हुए बोली; 'ओह! आप भी किसी की कब्र पर शोकवश आये थे क्या ?

"जी हाँ।'

" 'किसी स्त्री की कब्र पर ?'

" 'जी हाँ।'

" 'आपकी पत्नी ?'

" 'जी नहीं, एक मित्र।'

" 'मित्र से भी व्यक्ति उतना ही प्यार कर सकता है, जितना अपनी पत्नी से, क्योंकि प्रेम तो सब बन्धनों से मुक्त होता है।' उस युवती ने कहा।

" 'जी हाँ,' मैं ने उत्तर दिया।

जितनी कि अजायबघरों की। कैविनाक की कब्र मुझे बहुत पसन्द है—यद्यपि उसका जीन गोन्जीन कृत रोन के गिर्जा में पड़ी, लूई डी ब्रिज़ की अद्वितीय कब्र शिला से कोई मुकाबला नहीं। मित्रों! समस्त- तथाकथित आधुनिक और वास्तविक कला का प्रादुर्भाव वहीं हुआ। आधुनिक तथा वर्तमान काल की कब्रों पर सजी हुई मूर्तियों की अपेक्षा—लूई डी ब्रीज़ की वह प्रकृति कहीं अधिक सजीव और महान है।

"मोन्टमार्त्रे में बाडिन की महान यादगार है। वहीं पर गाटियर और मरजर की कब्रें भी हैं—जहाँ कल मैंने एक पीली पुष्पमाला एकाकी पड़ी हुई देखी। वहां वह किसने रखी थी? संभवतः उसकी अन्तिम प्रेमिका ने—जो अब वृद्धा होकर, पड़ोस में ही कहीं चौकिदारिन बन गई होगी। यह मिलेट द्वारा बनाया गया एक छोटा सा अद्भुत सुन्दर बुत है—जो बेपरवाही के कारण अब नष्ट भ्रष्ट हो गया है। ओ मर्जर यौवन के गीत गाओ।

"खैर मैं किंचित गंभीर व दुःखी भाव से कब्रिस्तान में दाख़िल हुआ। विशेष दुःखी भी नहीं—परन्तु कुछ इस प्रकार के भावों से: जगह कुछ ख़ुशगवार नहीं, परन्तु ख़ैर! मेरी मौत तो अभी बहुत दूर है।

"पतझड़ के प्रभाव, मुरझाये हुए पत्तों की गन्ध से भरी भीगी-भीगी गर्मी और सूर्य की पीली ज़र्द रश्मियों ने इस स्थान की नीरवता को और भी बढ़ा कर एक काव्यरूप सा दे दिया था···· जिसमें मनुष्य की मृत्यु और नश्वरता का ख़याल आता था।

"मैं उन कब्रों की कतारों में से धीरे-धीरे चलता गया—जहाँ पड़ोसी एक दूसरे को मिलने नहीं आते, न ही एकत्रित होते हैं और न

मिलकर समाचार पत्र ही पढ़ते हैं। मैं इन कब्रशिलाओं पर .खुदे लेख पढ़ने लगा। संसार में इन लेखों से अधिक हास्यप्रद कोई चीज़ नहीं। लेबिके और मिलताक की रचनाओं ने भी कभी मुझे इतना नहीं हंसाया जितना कि इन में से कुछ शिलालेखों ने। सच कहता हूँ—वे क्रास चिन्ह और संगमरमर के टुकड़े—जिन पर मुर्दों के सबंधियों ने अपने पश्चाताप, बिछड़े हुओं की संतुष्टि के लिए अपनी इच्छायें अथवा पुर्नमिलन की आशायें प्रकट की हैं—बल्ज़ाक की अधिक से अधिक हास्यप्रद कहानियों से कहीं अधिक हंसी-भरी हैं। मोन्टमार्त्रे में वह रिक्त प्रान्त मुझे बहुत पसंद है जो यू तथा सरों के वृक्षों से भरा पड़ा है—जहाँ चिरकाल पहले मृत लोग दबाये गए थे। .खैर मुर्दों के शरीरों पर पले ये हरे भरे वृक्ष शीघ्र ही ताज़ा मृतों के लिए स्थान बनाने के लिए गिरा दिये जायंगे और उनकी कब्रों पर छोटे-छोटे पत्थर सजाये जायंगे।

"कुछ देर घूमने के बाद मैं थक गया और अपनी प्रिया की यादगार पर श्रद्धांजलि चढ़ाने चल पड़ा। उसकी कब्र के समीप पहुँचते ही-मेरा मन भर आया। अभागिन! वह कितनी मृदुल और प्रिय था। कितनी सुन्दर और सुघड़····और अब! यदि उसकी कब्र को खोदकर देखा जाय तो?

"लोहे के जंगले पर झुक कर मैंने मन ही मन उसके लिए प्रार्थना गुनगुनाई—जो शायद उसे कभी सुनाई न देगी। जब वापिस लौटने लगा तो साथ वाली क़ब्र पर काले कपड़ों में लिपटी दुःख भरी दशा में पड़ी एक स्त्री दिखाई दी। उसकी क्रेप की ओढ़नी नीचे गिर गई थी—जिससे उसके सुनहले केश—उसकी टोपी की कालिमाँ में से और भी चमक रहे थे। मैं खोया सा वहीं खड़ा

शीघ्र ही उसे अपने बाहुपाश में जकड़ बार-बार मैं उसके अर्ध-निमीलित नेत्रों के चुम्बन लेने लगा।

" 'वह मुझे दूर धकेलने लगी और अपने आपको मेरे बन्धन से मुक्त करने के लिए संघर्ष करती हुई बोली:--

" 'नहीं-नहीं ऐसा मत करो। छोड़....'

"इन शब्दों से उसका क्या अभिप्राय था ? ऐसी अवस्था में 'छोड़ दो' के दो अर्थ हो सकते थे। उसे चुप करने के लिए मैं उसकी आँखों को छोड़, अधरों के चुम्बन लेने लगा--और अपनी इच्छानुकूल ही 'छोड़ दो' का अर्थ निकाला। उसने कोई विशेष बाधा प्रकट न की। और मृत कमान की स्मृति पर धब्बा लगाकर ज्यों ही हमारी आँखें चार हुईं--मैंने देखा उसके नेत्रों में सहज स्वभाविक भाव थे जिससे मेरा भ्रम बिल्कुल ही दूर हो गया।

"तब उसकी ओर मेरा ध्यान और भी आकर्षित हुआ--और एक घंटा इधर उधर की बातें करने के पश्चात् मैंने उससे पूछा:--

" 'आप रात का खाना कहाँ खाती हैं ?'

" 'यहां निकट ही एक छोटा सा रैस्टारैन्ट है--वहीं खा लेती हूँ।'

" 'बिल्कुल अकेली ?'

" 'हाँ। क्यों ?'

" 'आप आज मेरे साथ ही खाना खा लें ? खावेंगी ?'

" 'कहाँ ?'

" 'बोलिवर्ड में किसी अच्छे रैस्टारैन्ट में।'

"पहले तो वह कुछ हिचकिचाई--परन्तु फिर संभवतः अपने को समझाते हुए कि वह एक दम एकाकी है-- उसे अपने एकाकी

"परन्तु कई बार जब सूर्य दिव्यरूप में चमक रहा हो और प्रशान्त शीतल समीर बह रही हो—तो हमारी किसी स्त्री को बुलाने की इच्छा ही नहीं रहती।

"उस दिन सूर्य चमक रहा था, शीतल सुखद समीर चल रही थी—मैंने अपना सिगार सुलगाया और बोलिवर्ड की ओर सैर के लिए चल पड़ा। घूमते-घूमते ध्यान आया कि क्यों न मोन्ट-मारत्रे का कब्रिस्तान ही देख चलूं! मैं कब्रिस्तानों को पसन्द करता हूँ—क्योंकि उन्हें देखकर मुझे दुःख भी होता है और सुख भी मिलता है—और कई बार मुझे ऐसे प्रभाव की आवश्यकता भी होती है। इसके अतिरिक्त मेरे कई मित्र वहाँ दफ़नाये जा चुके हैं—और कई बार मैं उन्हें देखने वहां चला जाता हूँ।

"एक बार मेरा एक रोमांस भी इसी कब्रिस्तान में दब गया। एक सुन्दरी—मेरी प्रेमिका, जिसकी स्मृति आज भी मुझे तरह-तरह के पश्चाताप दे रही है—उसकी कब्र के पास खड़ा प्रायः मैं स्वप्न-संसार में पहुँच जाता हूँ। उसके लिए संसार में पूर्ण अंधकार है।

"मैं कब्रिस्तानों को इसलिए भी पसन्द करता हूँ, क्योंकि वे खचाखच बेहद आबादी वाले प्रान्त हैं। ज़रा सोचिये तो, उस छोटे से स्थान में कितनी देहें दफनानी पड़ी हैं! पेरिस निवासियों की अनेकों पीढ़ियाँ परम्परा से—इसी स्थान में दफ़न होती चली आई हैं। अनन्त काल से छोटी-छोटी कब्रों की गुम्बदों में, जिनके ऊपर एक पत्थर और एक क्रास चिंह जड़ित हैं—उनके भीतर अनेकों शरीर धंसे पड़े हैं—जबकि मूर्ख जीवित प्राणी इतनी अथाह स्थान घेरते हैं और इतना शोर करते हैं।

"कब्रिस्थान की कई यादगारें उतनी ही दिलचस्प होती हैं

"इस प्रकार हम उस स्थान से इकट्ठे चल पड़े—वह पूरी तरह मेरा सहारा लिये चल रही थी—उस रास्ते से लगभग मैं उसका सारा बोझ अपने ऊपर लिये चल रहा था। बाहर पहुंचते ही वह गुनगुनाई :

"मुझे भय है कि कहीं मैं मूर्च्छित न हो जाऊं।'

"क्या आप कुछ गर्म चीज़ पीना पसन्द करेंगी ?' मैंने पूछा। "जी, ज़रूर।' उसने उत्तर दिया।

" 'मैंने निकट ही एक रैस्टारैन्ट खोज लिया—जहाँ मृतों के सम्बन्धी अपने दुःखदायी कर्तव्य को समाप्त कर—अन्त में यहाँ एकत्रित हो, कुछ खाते पीते हैं। हम भीतर गए और मैंने उसे एक चाय का प्याला पिलवाया—जिससे उसके चेहरे पर एक नवीन स्फूर्ति सी आ गई।

"उसके चेहरे पर एक हल्की सी मुसकान छा गई—तब उसने अपने विषय में कहना शुरू किया : एकाकी जीवन बिताना कितना कठिन था—घर पर दिन रात अकेले रहना....आस पास ऐसे व्यक्ति का अभाव जिसे कोई प्यार कर सके, अपनापन दिखा सके या गुप्त बातें कर सके।

"उसके मुंह से ये शब्द बहुत सत्य व भले लग रहे थे। मेरा मन पिघल गया। उसकी उम्र बहुत कम थी—शायद २० साल के लगभग! मैंने उसकी बहुत प्रशंसा की—जिससे वह बहुत प्रसन्न हुई। अंधकार बढ़ गया था—इसलिए मैंने उससे कहा कि बग्घी में चलना ठीक रहेगा। वह मान गई। बग्घी में हम दोनों एक दूसरे के इतने निकट थे कि इतने कपड़ों के बावजूद हम एक दूसरे के शरीर की स्निग्धता अनुभव कर सकते थे—जो संसार में सब

से मोहक वस्तु है।

"बग्घी जब उसके घर के सामने रुकी तो वह बोली :

" 'घर के ऊपर जाना बहुत कठिन जान पड़ता है···क्योंकि मैं चौथी मंज़िल में रहती हूँ—इतनी सीढ़ियां चढ़ना बड़ा कठिन है। आपने पहले भी मुझपर इतनी कृपा की है। अब यदि मेरे कमरे के बाहर तक छोड़ आवें, तो बहुत कृपा हो।'

"मैं एकदम मान गया। धीरे-धीरे हाँपते हुए, पग-पग पर साँस लेने के लिए रुकते हुए, चल रही थी। कमरे के दरवाज़े के पास पहुँच कर वह बोली :—

" 'आइये, थोड़ी देर के लिए भीतर आइये—ताकि मैं आपका एक बार फिर से धन्यवाद कर सकूँ।'

"मैं उसके पीछे-पीछे चलने लगा।

"उसका कमरा बहुत साधारण व छोटा सा था, परन्तु बहुत अच्छी तरह—साफ़ सुथरा सजा हुआ था।

"हम दोनों एक छोटे से दीवान पर साथ-साथ बैठ गए। और वह अपने एकाकीपन के विषय में फिर बातें करने लगी।

"फिर उसने नौकरानी को बुलाने के लिए घंटी बजाई ताकि मुझे पिलाने के लिए कुछ मंगवाये। परन्तु नौकरानी का कोई उत्तर न आया—जिससे मैं समझ गया कि नौकरानी कुछ समय के लिए प्रातःकाल आती होगी—और वह भी शायद फ़र्श आदि झाड़ने के लिए ही।

"उसने अपना टोप उतार दिया था। वह कितनी सुन्दर थी। उसके स्वच्छ नेत्र मेरी ओर टकटकी बाँधे थे—इतनी स्वच्छ और निरन्तर निगाहों ने मेरे मन को ललायित कर दिया—अतः बहुत

हो गया।

"वह दुःख व शोक से झुकी पड़ी थी। गहरे विचारों में निमग्न हो, उसने अपना चेहरा दोनों हाथों में छिपा लिया। उसके बन्द नेत्र और पत्थर की नाईं मूर्तिवत शरीर के कारण वह दुःखद स्मृतियों में खोई सी, ऐसी जान पड़ती थी जैसे कोई मृत किसी अन्य मृत को कब्र पर रो रही हो। उसकी पीठ में हिचकियों के कारण कम्पन देख मैंने अनुभव किया कि वह रो रही है। सहसा उसने अपना मुहं नंगा कर लिया—अश्रुपूर्ण उसके नेत्र बहुत सुन्दर लग रहे थे। भय के कारण पलभर उसने इधर उधर देखा—परन्तु फिर मुझे अपनी ओर देखते हुए देख, उसने शीघ्रता से लज्जावश अपना चेहरा छुपा लिया। अब उसकी हिचकी बंध गई और उसने अपना सिर कब्र-शिला पर रख दिया। उसकी ओढ़नी ने इधर उधर बिखर लिखर कर उसकी प्रिय कब्र को काले कफ़न से ढक दिया जान पड़ता था। फिर उसकी सिसकियाँ सुनाई दीं—और वह मूर्च्छित सी हो पृथ्वी पर गिर पड़ी। मैं उछलकर शीघ्रता से उसके पास पहुँचा। उसके हाथों को थपकाते हुए और उसके मस्तक पर श्वास छोड़ते हुए मैं कब्र-शिला पर लिखा-वह सरल लेख पढ़ने लगा :

" 'यहाँ लूई थ्योडर कैरल दफ़नाये गए हैं—जो समुद्री बेड़े में कप्तान थे—और टोन्किन में जिन्हें शत्रुओं ने मार डाला। इनकी आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना करो।'

"इस कब्र को बने अभी थोड़ी देर ही हुई थी। मेरी आँखों में आंसू भर आये...परन्तु उन्हें रोक मैं उस अभागी युवती को शान्त करने का प्रयत्न करने लगा। देखने में मैं इतना कुरूप और

पन को भूलने का प्रयत्न करना चाहिये, वह मान गई और बोली: 'मैं ज़रा हल्के रंग का गाऊन पहन लूँ।'

"वह अपने कमरे में चली गई और जब बाहिर आई तो हल्के सलेटी रंग का .फ्राक पहने हुए थी—जिसमें वह बहुत सुन्दर दिखाई दे रही थी। प्रत्यक्षतया उसके पास कब्रिस्तान जाने और बाज़ार जाने के लिए भिन्न २ तरह के कपड़े थे।

"हमने जो खाना खाया, वह बहुत स्वादिष्ट था। उसने थोड़ी सी शैम्पेन पी— जिससे उसकी आँखें और भी सजीव हो उठीं, उसकी आकृति चमक उठी—और हम इकट्ठे उसके कमरे में वापिस लौट आये।

"कब्रिस्तान में आरम्भ हुआ हमारा यह प्रेम तीन सप्ताह तक जीवित रहा। पुरुष स्वभावतः ही प्रत्येक वस्तु से बहुत शीघ्र उकता जाता है—विशेषकर स्त्रियों से। अतः तीन सप्ताह के बाद एक आवश्यक काम का बहाना कर मैं ग़ायब हो गया। उसके बाद भी मैंने उसके प्रति सहृदयता प्रकट की जिसके लिए वह मेरी कृतज्ञ रही। जब मैंने उसे बताया कि मैं सफ़र के लिए जा रहा हूँ तो उसने मुझसे शपथ ली कि मैं उसके पास वापिस लौट कर आऊँगा। परन्तु उसके कथन से स्पष्ट होता था कि उसे मेरी कोई अधिक परवाह नहीं है।

"इसके बाद मैं इधर उधर घूमता रहा और एक दो मास तक उसके साथ बिताये दिनों को भूल, नये प्रेम अनुभवों में निमग्न हो गया। फिर भी मैं उसे सर्वथा न भूला था। वह मेरे सम्मुख एक भेद की तरह—एक समस्या—एक मनोवैज्ञानिक समस्या की तरह खटका करती। और मैं अनेकों बार उस पहेली के विषय में

सोचता।

"पता नहीं क्यों मुझे एक दिन ख़्याल आया कि शायद मैं उसे कब्रिस्तान में खोज सकूँ। और मैं वहाँ गया। वहां मैं बहुत देर तक घूमता रहा—परन्तु साधारण लोगों के अतिरिक्त जिनका अभी तक मृतकों से पूर्णतया सम्बन्ध विच्छेद न हो सका था, कोई भी न मिला। टौंकिन में मरे हुए कप्तान की कब्र पर न फूल थे—और न फूलों की कोई मालायें ही।

"उस मृत्यु नगर कब्रिस्तान के दूसरी ओर से जब मैं आ रहा था, तो मैंने एक जोड़े को शोकावस्था में तंग रास्ते से गुज़रते देखा। जब वे निकट आये-तो मैं विस्मय से चकित हो गया। और मैंने तत्क्षण ही उसे पहचान लिया—वही—यह वही युवती थी। वह मुझे देख लज्जावश लाल हो गई। जब मैं उनके बिलकुल समीप से गुज़रा तो उसने मुझे चुपके से इशारा किया जिसका स्पष्ट अर्थ था—मुझे पहचानना मत। परन्तु मिलने ज़रूर आना।

"उसके साथ जो पुरुष था—उसकी आयु लगभग ५० वर्ष की थी। वह देखने में सुन्दर, गंभीर और बड़ा अफ़सर दिखाई देता था। वह बिलकुल उसी तरह उसे सहारा दिये लेजा रहा था—जैसे एक दिन मैं लेकर गया था।

"मेरा शरीर जड़वत् हो गया—और मुझे अपनी आँखों पर विश्वास न आया। आश्चर्यान्वित हो, मैं सोचने लगा कब्रिस्तान की यह शिकारिन किस जाति से सम्बन्धित है! क्या यह केवल एक चतुर विलासी स्त्री है अथवा कोई वेश्या है। जो निरंतर कब्रिस्तान में आये उन पुरुषों को खोजती है, जो पत्नी के वियोग

में यहां आ—अपने खोये हुए प्यार के लिए तरसते हैं ? यही इसका व्यवसाय है क्या ? क्या कब्रिस्तान में भी गलियों की भांति काम होता रहता है ? क्या यहाँ कब्रिस्तान की परियाँ वास करती हैं ?

क्या यह विचित्र सूझ इसी स्त्री को हुई है कि किस प्रकार ऐसे भयानक स्थानों में प्रेमपूर्ण शोक से लाभ उठाया जा सकता है ? मैं उस दिन किसी भी दाम पर यह जानने को उत्सुक था—कि उस दिन उसने अपने को किसकी विधवा कहा—और किसकी कब्र पर शोक के आँसू बहाये ?

एकाकीपन

हम एक मित्र के घर खाना खा रहे थे। खाना बहुत स्वादिष्ट और उत्तम था। खाने के बाद एक चिर परिचित मित्र ने मुझसे कहा :—"चलो, चैम्पज़ एलिसीज़ की ओर घूमने चलें।"

"मैं ने प्रसन्नतापूर्वक यह निमन्त्रण स्वीकार किया। हम दोनों चल पड़े, और धीरे-धीरे थोड़े-थोड़े पत्तों वाले वृक्षों के नीचे टहलने लगे। सब ओर पूर्ण निस्तब्धता थी—केवल थोड़ी बहुत सरसराहट की धीमी-धीमी ध्वनि सुनाई दे रही थी। शीतल सुरभित समीर के झोंके हमारे चहरों के साथ टकरा, छोटी-छोटी सी चपत सी लगा रहे थे। आकाश में जगमगाते झिलमिलाते तारों की पंक्तियाँ, स्वर्णिम फूलों की माला जान पड़ती थी।

मेरे साथी ने कहा:—

"पता नहीं क्या बात है, रात के समय किसी और स्थान की अपेक्षा मैं इसी जगह सुख की साँस ले सकता हूँ। ऐसा जान पड़ता है जैसा यहाँ पर मेरे विचार विस्तृत हो जाते हैं। कई बार आत्मा में एक जगमगाहट सी होती है, जिससे क्षण भर के लिए मुझे ऐसा जान पड़ता है मानों–रहस्यमय स्वर्गीय पदार्थों का आविष्कार होने जा रहा हो। तब मन की खिड़की बन्द हो जाती है.... और सुन्दर सुनहला स्वप्न नष्ट भ्रष्ट हो जाता है।"

कई बार वृक्षों और घनी झाड़ियों के बीच हमें दो प्रतिच्छा-

जाती हुई—नज़र आ जातीं।—फिर हम एक बैंच के पास से गुज़रे""जिसपर दो व्यक्ति बैठे—एक काले धब्बे की तरह दिखाई दे रहे थे।

मेरा मित्र गुनगुनाया :—

"अभागे। इन्हें देख मुझे घृणा नहीं होती, बल्कि अपार दया का आभास होता है। मनुष्य जीवन की अनगिनत पहेलियों में से केवल एक ऐसी है—जिसके विषय में मैंने बहुत सोचा है—और उसे कुछ-कुछ समझने लगा हूँ। जीवन में हमें सबसे अधिक खेद इस बात पर होता है कि हम एकाकी हैं—हमारे सभी प्रयत्न और कार्य इस एकाकीपन से मुक्ति पाने में ही लग जाते हैं। वे सामने बेंच पर बैठे दो प्रेमी भी—हमारी तरह"'संसार के समस्त अन्य प्राणियों की तरह—अपना एकाकीपन भूलने का प्रयत्न कर रहे हैं—चाहे वह कुछ क्षण के लिए ही क्यों न हो। परन्तु वह अकेले रहते हैं—और अकेले रहेंगे—जैसाकि हम सब रहते हैं।

"हम सभी यह जानते हैं। कुछ समय तक मैंने भी जीवन की भयानक नीरवता को समझ लेने का घृणात्मक दुःख सहा है। और मैं जानता हूँ कि कोई भी इस एकाकीपन को दूर नहीं कर सकता—कोई भी नहीं, क्या तुम सुन रहे हो? हम कितना ही प्रयत्न करें, कुछ ही करें, हमारे हृदय कितने ही आलोड़ित हों, अधरों में कितनी ही मिठास हो, हाथों में कितनी ही स्निग्धता हो—परन्तु फिर भी हम अकेले हैं। आज मैं तुम्हें इस समय घूमने के बहाने ले आया—इसलिए कि मुझे अकेले अपने घर न जाना पड़े और कुछ देर के लिए मैं अपना एकाकीपन भूल सकूँ! सुनसान घर में मेरा हृदय दुःख से काँप उठता है। मुझे इससे क्या

लाभ पहुँचता है ? मैं बोल रहा हूँ—साथ-साथ परन्तु एकाकी। समझते हो ?

"ग़रीबों की आत्मा सन्तुष्ट होती है।" धार्मिक ग्रन्थों का कथन है। परन्तु वास्तव में वे प्रसन्नता की मृगमाया में पड़े हुए हैं। वे हमारे एकाकीपन की पीड़ा का अनुभव ही नहीं कर पाते, वे मेरी तरह केवल बाहरी लगाव से—अनुभव करने, देखने, सोचने, समझने और अनन्त शून्यता के ज्ञान से अनादि काल तक दुःख में घुलते रहने की अहम्भाव तुष्टि के अतिरिक्त—बिना प्रसन्नता प्राप्त किये—मारे-मारे घूमते नहीं फिरते।

"तुम्हारा विचार है—कि मैं कुछ असाधारण बातें कर रहा हूँ ? मुझपर कोई ख़ब्त सवार है! नहीं, मेरी बात सुनो! क्यों कि मैंने अपने एकाकीपन को अनुभव किया है···मुझे ऐसा जान पड़ता है मानों मैं प्रतिदिन किसी अन्धकारमय गुम्बद में धंसता जा रहा हूँ—जिसके किनारे मुझे···मिलेंगे नहीं जिसका अन्त मुझे दिखाई नहीं देता···और संभवत उसका कोई किनारा है ही नहीं। मैं बिना किसी साथी के डूबता जा रहा हूँ—मेरे आस पास कोई नहीं। कोई जीवित प्राणी ऐसी भयानक यात्रा नहीं करता। वह गुम्बद जीवन है। कई बार मुझे आवाज़ें, चीख़ें और शोरगुल सुनाई देता है। मैं सहमा हुआ उस ध्वनि की ओर चल देता हूँ—परन्तु मुझे कभी भी यह पता नहीं चलता कि वे कहां से आती हैं।—वहाँ कोई दिखाई नहीं देता। इस अंधकार में घिरे हुए मुझे कभी कोई सहारा नहीं मिलता। क्या तुम समझते हो ?

"कुछ लोगों ने इस भयानक यातना को पहले भी अनुभव

किया है। डी मस्सट ने लिखा है:—

"कौन आया ? मुझे किसने बुलाया ?

कोई नहीं—

मैं अकेला हूँ।—एक बजा...

ओह, शून्यता। ओह अनन्त वेदना।"

परन्तु उसके लिए वह केवल एक क्षणिक वेदना थी—मेरे जैसी अनन्त निरन्तर पीड़ा नहीं। वह एक कवि था। वह जीवन की शून्यता को स्वप्नों एवं कल्पनाओं द्वारा भर सकता था। वह वास्तव में कभी अकेला न था। मैं...मैं...अकेला हूँ—बिल्कुल अकेला।

"गस्टाफ़ फ़्लाबर्ट—संसार का एक भाग्यहीन महापुरुष था—क्योंकि उसने संसार को एक नया प्रकाश दिया। एक बार उसने अपने एक मित्र को निम्न निराशाभरे शब्द लिखे:—

'हम सब एक रेगिस्तान में विचरण कर रहे हैं। यहाँ कोई एक दूसरे को नहीं समझता।'

"नहीं, कोई किसी को नहीं समझता—मनुष्य कुछ ही कहे, कुछ ही करे,—कोई दूसरा व्यक्ति उसे समझ नहीं सकता। पृथ्वी को क्या पता कि उन सितारों में—जो ब्रह्माण्ड के उस पार एक आग की चिन्गारी की तरह उड़ जाते हैं—क्या हो रहा है। हम तो केवल उनकी क्षणिक चमक ही देख सकते हैं। असीमता में खोये—अन्य अथाह सितारों के विषय में ही जरा सोचो तो....जो परस्पर इतने निकट हैं कि वे एक ही पूर्ण आकार में दिखाई देते हैं—मानों वे एक ही शरीर में अनेक अणुक-णिकायें हों—परन्तु फिर भी वे एकाकी ही तो हैं।

"इसी प्रकार हर एक व्यक्ति यह नहीं जान पाता कि दूसरे के दिल में क्या विचार हैं, उसे क्या दुख है! हम सितारों से भी अधिक—एक दूसरे से दूर हैं—और उनसे कहीं अधिक एकाकी हैं…क्योंकि विचारधारा अगाध है—अगम्य है।

"क्या तुम सोच सकते हो कि इससे भी भयंकर कोई बात हो सकती है—जिन व्यक्तियों के मन की पहली सतह तक भी पहुंचना कठिन हो—उनके साथ हम निरन्तर रहें? हम परस्पर ऐसे प्यार करने लगते हैं-मानों हम एक दूसरे से बंध गए हों। एक दूसरे के बहुत नज़दीक होते हुए भी—हम एक दूसरे तक पहुँच नहीं सकते। किसी के साथ मिलने—की अदमनीय इच्छा हमारे जीवन को सताती है—परन्तु हमारे सभी प्रयत्न बेकार सिद्ध होते हैं, निश्चय निष्फल जान पड़ते हैं हमारे आलिङ्गन निर्बल और प्रेम, दुलार व लालसा—असहाय साबित होते हैं। जब हम एक दूसरे के निकटतम आना चाहते हैं—तभी हमारे उमंग भरे मन हमें एक दूसरे के विरुद्ध टकरा देते हैं।

"किसी मित्र के सम्मुख अपने मन के रहस्य को खोलने के बारे में मैं और भी एकाकी महसूस करता हूँ—क्योंकि तब मैं इन कठिन बाधाओं को और भी अधिक अच्छी तरह समझ सकता हूँ। मेरा मित्र जब मेरे सम्मुख हो…तो मैं उसकी दो पवित्र स्निग्ध आंखों को अपने सामने देखता हूँ, परन्तु उनके पीछे जो 'आत्मा' छिपी रहती है—वह मुझे दिखाई नहीं देती। वह मेरी बातें सुनता है। सुन कर वह क्या सोचता है? हां—वह 'क्या' सोचता है? तुम इस वेदना को नहीं समझ सकते। वह संभवतः मुझ से घृणा करता हो…मेरा मज़ाक भी उड़ाता हो! जो कुछ मैं कहता हूँ-वह उसके

विषय में सोचता है—वह मुझे परखता है, वह मुझे घेरता है, वह मेरे विरुद्ध कुछ कहता है—और या तो मुझे बहुत साधारण लोगों में से समझता है—या बेवकूफ।

"मुझे कैसे पता चले कि वह क्या सोचता है? मैं कैसे जानूं कि जितना मैं उसे प्यार करता हूँ वह भी उतना करता है अथवा नहीं? और उसके छोटे गोल-गोल सिर में क्या विचार चक्कर काटते हैं? किसी प्राणी के अज्ञात विचार में क्या विचित्र पहेली है—गुप्त और स्वतन्त्र वैयक्तिक विचार, जिन्हें न हम जान सकते हैं, न जिनपर शासन कर सकते हैं और न ही जीत सकते हैं।

"और मैं! मैंने व्यर्थ में ही अपने को पूर्णतया त्यागने की इच्छा की। मैं अपनी आत्मा के सब द्वार खोल देना चाहता था—परन्तु मुझे उसमें सफलता न मिली। मैं अब भी एक अथाह गहराई में रहता हूँ···वह अथाह गहराई—वह गुप्त भाग—जहां कोई नहीं झाँक सकता! उसे कोई नहीं खोज सकता, न ही उसमें कोई प्रवेश कर सकता है—क्योंकि ऐसा कोई व्यक्ति नहीं जो मेरे ही सदृश हो—क्योंकि कोई किसी को पूर्णतया समझ नहीं सकता।

"कम से कम, इस समय तो तुम मुझे समझ रहे हो; नहीं। तुम समझते हो, मैं पागल हूँ। तुम मेरी परीक्षा ले रहे हो; तुम मुझसे झिझकते हो; तुम अपने मन में सोचते हो, 'इसे आज क्या हुआ है?' परन्तु यदि तुम किसी दिन मेरी भयंकर और असाह्य वेदना को समझने या भाँपने में सफल हो जाओ तो चुपचाप मुझे आकर कह देना :—मैं तुम्हें समझ गया हूँ।" और संभवतः यह कह कर तुम मुझे क्षण भर के लिए प्रसन्न कर सकोगे।

"स्त्रियाँ मेरे एकाकीपन के भावों को और भी उग्र बना देती हैं। वेदना। पीड़ा ! स्त्रियां मेरे लिए कितनी कटु वेदना का कारण बनी हैं; क्योंकि पुरुषों से कहीं अधिक--उन्होंने मुझे अनेकों बार इस भ्रम में डाला है कि मैं एकाकी नहीं !

"जब मनुष्य किसी से प्रेम करने लगता है तो ऐसा जान पड़ता है मानों उसका व्यक्तित्व फैल गया हो। क्योंकि तब मनुष्य में एक अद्वितीय सहृदयता आ जाती है। तुम जानते हो क्यों ? तुम जानते हो वह अगाध आनन्द कहां से आता है ? उसका स्रोत केवल यह कारण है कि उस समय मनुष्य को ऐसा जान पड़ता है मानों उसका एकाकीपन समाप्त हो चुका हो।--परन्तु वह उसकी कितनी भूल होती है।

"हम पुरुषों से भी अधिक—स्त्रियाँ प्रेम किये जाने की इस अनन्त पीड़ा से पीड़ित होती हैं। आह ! यह भ्रम—यह स्वप्न विचित्र है।

"तुम तो वे सुख की घड़ियां जानते ही हो—जो किसी लम्बे-लम्बे केशों, आकर्षक नयनों, सुन्दर आकार की सुन्दरी की मोहक चितवन के सम्मुख—जिससे हम प्यार करने पर बाध्य हो जाते हों—बिताई हों। हमारे मन को कैसा पागलपन पथ भ्रष्ट कर देता है ! भ्रम हमें बहा ले जाता है और उस समय ऐसा जान पड़ता है कि हमारी आत्मायें मिलकर एकाकार हो जांयगी।—परन्तु वे होती नहीं। कई बार अनेकों सप्ताह—इसी भ्रमात्मक उल्लास, आशा और प्रतीक्षा में बीताने के बाद—एक दिन तुम अनुभव करते हो कि तुम पहले से भी अधिक एकाकी हो।

"प्रत्येक चुम्बन"'प्रत्येक आलिङ्गन के बाद एकाकीपन बढ़

आता है। और यह वेदना कितनी कष्ट दायक होती है।

"मर्सी प्रुडोमे ने भी तो लिखा है :—

"दुलार तो उद्विग्न उड़ान मात्र है—
हमारे प्रेम का निष्फल प्रयत्न है, जो आत्माओं के असंभव मिलन को—
शरीरों के मिलन से चिह्नित करता है।"

"और तब अन्तिम प्रयास! सब समाप्त हो जाता है! और फिर एक नारी—जो कुछ क्षणों के लिए सर्वस्व जान पड़ती हो—पुरुष को उसे पहिचानने में भी कठिनाई होती है। निस्संदेह—उसके साधारण सुपरिचित विचारों से वह सदा अनभिज्ञ ही रहता है। "और ठीक उस समय जब तुम्हें पता चले कि तुम्हारी सत्ता एक दूसरे में लीन हो गई है—तुम उसकी आत्मा की गहराइयों तक पहुंचने का प्रयत्न करो···ठीक उस समय कई बार एक शब्द··· तुम्हारी भूल बताने के लिए पर्याप्त होता है—और काली रात में विद्युत की चमक की तरह—तुम दोनों के बीच काली गहराइयाँ को प्रकाशित कर देता है।

"और फिर भी संसार का सर्वोच्च आनन्द, एक स्त्री के समीप नीरवता में उसकी निकटता का पूर्ण आनन्द अनुभव करते हुए, रात बिता देना है। इसके अतिरिक्त पूछने की आवश्यकता ही नहीं—क्योंकि संसार में दो व्यक्ति कभी मिलकर एक नहीं हो सकते।

"जहां तक मेरा सम्बन्ध है, मैंने तो अपना व्यक्तित्व ही समेट लिया है। मैं किसी से कहता तक नहीं कि मेरा क्या विश्वास है। मैं क्या सोचता हूँ और किससे प्रेम करता हूँ। स्वयं को घोर एकाकीपन के गढ़े में गिरा देख मैं बिना अपना मत प्रकट किये

ही चीज़ों को देखता हूँ। मुझे झगड़े, .खुशी या विश्वास से क्या ? इनमें भाग न ले सकने के कारण मैंने अपने को इनसे संकुचित कर लिया है। मेरी अदृश्य आत्मा अगम्य है। दैनिक प्रश्नों के उत्तर में—मैं पहले से ही 'हाँ' का उत्तर देता रहता हूँ—ताकि अधिक बोलना ही न पड़े। समझे ?"

'ट्रायम्फ़ कुंज पार कर हम पैलेस-डी-कौन्कौर्ड तक पहुंच गए थे। उसने अपनी कहानी बहुत लम्बी करके सुनाई थी—जिसमें से बहुत सी घटनायें मैं भूल चुका हूँ।

वह रुका—और पैरिस के एक चबूतरे पर खड़े हुए एक लम्बे मूंगिया पत्थर के बुत (वह बुत—जिसका लम्बा चेहरा सितारों भरी रात में खोया हुआ था—और जिसके कोनों पर उसके देश का इतिहास अंकित था—) की ओर हाथ किये, कहने लगा—"देखो हम सब उस पत्थर की भांति हैं।"

तब बिना कोई दूसरा शब्द कहे वह मुझसे विदा हो गया। क्या वह शराब से मतवाला हो रहा था ? क्या वह पागल था ? क्या वह बुद्धिमान था ? मैं स्वयं नहीं जानता। कई बार मुझे ऐसा लगता है कि वह ठीक कहता था। परन्तु कई बार ऐसा अनुभव होता है कि उसका दिमाग़ ख़राब था।

कलाकार की पत्नी

दूज के चन्द्रमा के आकार सा ऐन्ट्रेटाट का छोटा सा कस्बा, श्वेत चट्टानें, नील सागर और उसके चमकते हुए पथरीले किनारे, सभी जुलाई की प्रखर धूप में पड़े ऊँघ रहे थे। दूज के चाँद से कस्बे के दोनों ओर चट्टानों की दो मेहराबें शान्त महासागर, में बढ़ी हुई थीं—छोटी—बौने पांव की तरह उत्तर की ओर, और बड़ी—एक दीर्घ राक्षसी आकार की तरह दक्षिण की ओर। पास ही विशाल सतह में से निकलता हुआ…चट्टानों की ऊँचाइयों को छूता हुआ…आकाश की ओर चबूतरे की नाईं सीधा खड़ा, एक कलस था।

समुद्र के तट पर, पानी के किनारे के समीप बैठे कुछ लोग नहाने वालों का तमाशा देख रहे थे। कैसिनो नामक किनारा—पुष्प-वाटिका की शोभा से भरपूर था। जहाँ स्त्रियों के भड़कीले वस्त्र और उनपर अंकित लाल, नीले, बेल बूटे सूर्य की रश्मियों के तेज से चमक रहे थे।

किनारे से थोड़ी दूरी पर एक भाग विशेषकर भ्रमण के लिए बना था। वहाँ कुछ लोग, भड़कीले वस्त्रों की चमक और जमघट के शोरगुल से दूर बैठे, शान्त वातावरण का आनन्द ले रहे थे।

जीन सुमेर नामक—एक प्रसिद्ध कलाकार युवक, एक रोगिणी की कुर्सी के इर्द गिर्द चक्कर काट रहा था। रोगग्रस्ता उसकी पत्नी

थी'''जो बहुत दुःखी जान पड़ती थी। उनका नौकर उसकी दो पहियों वाली कुर्सी खींच रहा था। कुर्सी में चुपचाप बैठी वह दुःखी मन से निरन्तर सूर्य की दिव्यता, रश्मियों की प्रसन्नता और आनन्दित भीड़ की चहल पहल निहार रही थी।

पति-पत्नी बिना एक दूसरे की ओर देखे चुपचाप जा रहे थे। फिर वह युवती बोली—

"आओ, थोड़ी देर के लिए यहाँ रुक जांय!"

वे रुक गए। नौकर ने कलाकार को कैम्प स्टूल दे दिया—जिसपर वह बैठ गया। रास्ते से आते जाते लोग चुपचाप नीरवता में बैठे पति-पत्नी की ओर दृष्टि डालते हुए—चले जा रहे थे। सभी कहते थे कि सुमेर ने प्रेम के बल पर, उस कन्या के लंगड़ेपन की परवाह न करते हुए, उससे विवाह कर लिया।

पास ही चर्खी पर बैठे दो मित्र, समुद्र की ओर देखते हुए, परस्पर बातचीत कर रहे थे।

"नहीं, यह झूठ है," उनमें से एक ने कहा, "मैं कहता हूँ, मैं जीन सुमेर के पूर्व जीवन से भली भाँति परिचित हूँ।"

"तो फिर उसने इस लड़की से विवाह क्यों किया? विवाह से पूर्व ही तो उसकी टांगें खराब हो गई थीं। क्यों? है न यह बात?"

"हाँ—टांगें तो खराब थीं। पर फिर भी, जीन सुमेर ने उससे विवाह कर लिया—जैसे पुरुष प्रायः विवाह कर लेते हैं। क्योंकि—वह मूर्ख था।"

"परन्तु इसके अतिरिक्त कोई और भी तो कारण रहा होगा?"

"और कारण?'''और तो कोई कारण न था।

मानव पागल है—क्योंकि वह पागल है ! और फिर कलाकार तो ऐसे विवाह सम्बन्धों के लिए प्रसिद्ध ही हैं । वे सभी प्राय: अपने चित्र के लिए आई हुई किसी न किसी रमणी से विवाह कर लेते हैं—जो संभवत: पहले किसी और की प्रेमिका रह चुकी हो । वे ऐसा क्यों करते हैं ? क्या कोई बता सकता है ? देखने में ऐसा जान पड़ता है कि इस इस प्रकार मोडल बनने वाली स्त्रियों के निरन्तर सम्पर्क से, वे उस प्रकार की स्त्रियों से उकता जाते होंगे । परन्तु वास्तव में बात बिलकुल विपरीत है । वे उन्हें तसवीरें खींचने के लिए बिठाते हैं—और बाद में उन्हीं से विवाह कर लेते हैं । 'एलफैन्ज़ डाइट' की लिखी—'कलाकारों की पत्नियो,' नामक पुस्तक तुमने पढ़ी है क्या ?—यह भी एक अमूल्य रत्न है । निरा कठोर सत्य !"

"यह सामने जो तुम पति पत्नी देख रहे हो—इनका विवाह भी एक विचित्र अस्वाभाविक ढंग से हुआ ! इस युवती ने विवाह से पूर्व एक अच्छा ख़ासा हंसी मज़ाक का खेल रचा—अथवा उसे भयानक नाटक का नाम देना अधिक उपयुक्त होगा । वास्तव में-इस युवती ने एक घटना के लिए अपना सारा जीवन ख़तरे में डाल दिया । क्या वह जीन से सच्चा प्यार करती थी ? क्या वह उसे वास्तव में चाहती थी ? कौन कह सकता है कि स्त्रियों के कार्यों में कितना अंश बनावटी और कितना सच्चाई का रहता है । वे किसी समय सचमुच ही प्यार करती हैं—परन्तु उनके भाव बदलते रहते हैं । वे भावुक, ख़ूनी और साथ ही साथ भक्त होती हैं । कभी बहादुर, और कभी तुच्छ रूप धारण करती हैं···शायद वे स्वयं भी अपने भावों को समझ नहीं सकतीं ? बिना सोचे समझे वे बड़े

स्वाभाविक ढंग से निरन्तर झूठ बोलती हैं। उनके अचिन्तित कामों को हढ़ता देख, हमें वे पहेली सी जान पड़ती हैं। उनके कार्यों को देख हम निरन्तर स्वयं से पूछते हैं।, "क्या वे सचमुच ही ऐसा सोच रही हैं या केवल दिखावा कर रही हैं ?"

"परन्तु आश्चर्य की बात तो यह है मित्र कि वे एक साथ ही झूठी और सच्ची होती हैं—क्योंकि यह तो स्त्री प्रकृति में स्वाभाविक बात है कि वे सच और झूठ दोनों में ही सीमा लाँध जाती हैं। उनके साधन सरल परन्तु उलझनों से भरे होते हैं। इतने पेचीदा कि पहले हम सोच भी नहीं सकते—और इतने सरल भी कि उनमें फँसने पर हमें स्वयं पर आश्चर्य होता है—और हम सोचते हैं—

"क्या सचमुच ही इतनी सरलता से उसने मुझे ठग लिया ?" परन्तु वे अपने कार्यों में सर्वदा सफल रहती हैं—विशेषकर जब वे किसी पुरुष से विवाह करने का निश्चय कर लें।

"ख़ैर, जीन सुमेर की कहानी इस प्रकार है:

"निसन्देह यह लड़की उस कलाकार के पास अपनी तसवीर बनवाने के लिए आई तो यह सुन्दर और सुड़ौल आकार की थी। धीरे-धीरे सुमेर उससे प्यार करने लगा—जैसा कि हर पुरुष एक सहज सुन्दर लड़की को जानने के पश्चात् करता है। तब उसने सोचा कि वह उसकी प्रेमिका है—और उसकी आत्मा तक उससे सम्बन्धित है। यह एक विचित्र बात होती है। जब पुरुष किसी स्त्री को चाहता है, तो उसे विश्वास हो जाता है कि वह सारा जीवन उसी के साथ व्यतीत कर सकता है। तब उसे याद आता है कि उसने पहले भी किसी अन्य स्त्री के प्रति ऐसा ही अनुभव किया था—परन्तु जब इच्छा

पूर्ति हो गई तो उससे उसे घृणा हो गई। वह जानता है कि किसी स्त्री के साथ सारा जीवन व्यतीत करने के लिए पाशविक लगन ही पर्याप्त नहीं परन्तु आत्मा, स्वभाव एवं विचारों की समता भी आवश्यक है। उसे पहले ही सोचना चाहिए कि क्या उसका आकर्षण केवल सच्चा, वासनालय अथवा वास्तविक आत्मिक सम्बन्ध।

"खैर इस कलाकार को विश्वास हो गया कि वह उस लड़की से प्रेम करता है और उसका भक्त है—वही उसकी आँखों की रानी है।

"वह आकर्षक थी। पैरिस की साधारण कन्याओं का सा सौन्दर्य भी उसमें उपस्थित था। वह बहुत बोलती और मज़ाक के ढंग में अनेकों अर्थहीन बातें कहती परन्तु चित्रण के लिए वह एक विशेष आकर्षक ढंग से खड़ी होती—उसके उसी ढंग ने इस कलाकार के मनको पहले पहल मोहा था। जब वह अपनी बाँह ऊपर उठाती... या नीचे के ओर झुककर खड़ी होती, गाड़ी में चढ़ती या हाथ मिलाती—तो उसके हाव-भाव समयानूकूल तथा यथोचित होते।

"तीन मास तक जीन समझ न पाया कि वह एक साधारण नारी है। ग्रीष्मकाल के लिए उन्होंने देन्डेसे में एक किराये का मकान ले लिया। मैं वहीं पर था—जब एक दिन मेरे मित्र को संदेह हुआ कि वह उसकी जीवन संगिनी बजने योग्य नहीं।

"उस दिन भड़कीली सुन्दर रात थी—हमने नदी के किनारे घूमने का निश्चय किया। काँपते हुए पानी की सफ़ेद लहरों पर चाँदनी नृत्य कर रही थी—उसकी प्रतिच्छाया विशाल लहरों से टूटकर चमकते हुए सितारों की तरह विकसित थी। नदी के किनारे

घूमते-घूमते हम पर धुंधले उतावलेपन के भाव छा गए-- जो प्रायः ऐसी रातों में छा ही जाते हैं। हमें ऐसा अनुभव होने लगा कि हम कोई अनुपम कार्य कर सकते हैं अर्थात् अपने काव्यमय विचारों के अनूकूल किसी भी व्यक्ति से प्रेम कर सकते हैं। मन ही मन हम विचित्र भावों, इच्छाओं एवं उमंगों की पूर्ति के दृश्य देख रहे थे। शीतल सुखद चाँदनी हमारे शरीरों में घुसकर—हमारी आत्माओं तक पहुँचती हुई—हमें संतुष्टि में नहला रही थी। अचानक जोसफ़ीन—(यही उस युवती का नाम है) चिल्ला उठी:

"आह! क्या तुमने उस बड़ी मछली को कूदते देखा?" जीन बिना उसकी ओर ध्यान दिये ही बोला: "हां, प्रिय!" आपे से बाहर हो वह चिल्ला उठी:—"नहीं, तुमने नहीं देखा—तुम्हारी तो उस ओर पीठ थी"

वह मुसकराते हुए बोला: "हां—तुम ठीक ही कहती हो। यह रात इतनी सुन्दर है कि मैं कुछ देख या सोच नहीं सकता।"

क्षण भर चुप रह, वह फिर बोली:—"क्या तुम पैरिस जा रहे हो?"

"कुछ मालूम नहीं।"

तब वह खिन्न हो बोली: "सैर को इस तरह चुपचाप जाना बड़ा अच्छा लगता है न! सैर करते वक्त तो साधारण व्यक्ति भी कुछ बोल ही लेते हैं।"

वह फिर भी चुप रहा।

तब वह दो वर्ष से निरन्तर गाया जा रहा, बुद्धि को तिरस्कृत करने वाला गलियों का प्रचलित गाना—गाने लगी।— "मैं नभ की ओर निहार रही...तुम...." क्योंकि स्त्रियों की

सहज स्वभाविक बुद्धि से वह जानती थी कि इस गाने से वह जरूर तंग आवेगा।

"कृपया चुप रहो," उस गाने को सहने में असमर्थ हो जीन बोला।

क्रोधित हो वह बोली—: "चुप क्यों रहूँ ?" वह बोला—: "तुम इतना सुन्दर मनोहर दिन व्यर्थ में खराब कर रही हो।"

तब वही हुआ—जो अनिवार्य था। एक घृणात्मक अश्लील दृश्य—विचारहीन गाली गलौज, दोषारोपण···और फिर···अश्रुधारा का प्रवाह। इसी तरह घूमते घुमाते वे घर पहुंचे। रात की रमणीयता और स्त्री की नासमझ झिड़कियों से चकित और अप्रतिभ हो, वह बिना उसकी बातों में दखल दिये—चुपचाप घर की ओर चलता रहा।

"तीन मास पश्चात वह—विवाह की अटूट अदृश्य कड़ियों से निकलने का अथक प्रयास करने लगा। यह स्त्री—उस पर शासन कर, उसे वशीभूत कर— उसका जीवन नाश करना चाहती थी। ये दिन रात परस्पर लड़ने झगड़ने लगे।

"अन्त में जीन ने निश्चय किया कि वह रोज़-रोज़ के इन घरेलू झगड़ों से छुट्टी पावेगा। उसने अपने समस्त चित्रपट बेच, मित्रों से कुछ उधार ले—कुल २०,००० फ्रैन्केज़ जमा किये—(अभी तक वह इतना प्रसिद्ध कलाकार न हुआ था।) एक दिन ये रुपये और एक पत्र अंगीठी पर रख वह चल पड़ा।

"तब उसने मेरे ही घर का आश्रय लिया।

"एक दिन दोपहर के समय, तीन बजे के लगभग जब हम कमरे में बैठे थे—तो बाहर के दरवाज़े से घंटी की टन्-टन् हुई। मैं दरवाज़ा खोलने गया। आगन्तुक एक स्त्री थी—जो दरवाज़ा

खुलते ही, मुझे धक्का दे, मेरे चित्रालय की ओर भागी। यह स्त्री—जोसफ़ीन ही थी।

"जोसफ़ीन के भीतर प्रवेश करते ही जीन उठ बैठा।

"भीतर पहुँचते ही जोसफ़ीन ने वे बैंक नोट और पत्र उसके पांव पर फेंक दिये—और रुंधे कंठ से बोली: "ये हैं तुम्हारे रुपये; मुझे इनकी कोई जरूरत नहीं।"

उसके चेहरे पर मुर्दनी सी छा रही थी और शरीर क्रोध से काँप रहा था। जीन भी क्रोध, घबराहट और उद्विग्नता के कारण पीला पड़ रहा था—ऐसी दशा में संभव था कि वह उस पर हाथ तक उठा बैठता। 'तुम क्या चाहती हो?" उसने क्रोधित स्वर में पूछा।

"मैं एक रखी हुई स्त्री सा व्यवहार नहीं चाहती। तुम मुझ से प्रेम करते थे—तभी हमने इकट्ठे रहना प्रारंभ किया। मैंने तुमसे कुछ माँगा नहीं—कुछ कहा नहीं—अतः तुम मुझे छोड़ नहीं सकते।"

जीन ने जमीन पर ज़ोर से पैर मार कर कहा: "नहीं, मैं तुम्हारे साथ नहीं रह सकता। यदि तुम सोचती हो···" मैंने बीच ही में उसकी बाँह पकड़ते हुए कहा: "जीन! अब आगे कुछ न कहो। मैं स्वयंमेव मामला सुलझा लेता हूँ!"

तब मैंने कई तरह से जोसफ़ीन को समझाना चाहा। वह सामने की ओर देखती हुई—ढीठ बन कर बैठी रही। अन्त में अपने तर्क का कोई प्रभाव न देख—मैंने अन्तिम कारण पेश करते हुए कहा: "जीन अब भी तुमसे प्यार करता है। परन्तु उसके सम्बन्धी उसे विवाह के लिए विवश कर रहे हैं। यानी··· आप मेरा मतलब समझती हैं न···"

वह घूरते हुए बोली : "हाँ—मैं समझती हूँ—खूब समझती हूँ। अच्छा—तो अब तुम विवाह करना चाहते हो ? यह बात है !"

"हाँ" जीन कटु स्वर में बोल उठा।

"अगर तुमने पुर्नविवाह किया—तो मैं आत्मघात कर लूंगी।"

बगलें झांकता हुआ जीन बोला, "बहुत अच्छा—कर लो।"

"तुम कहते हो कर लूं ? हैं—? आत्मघात कर लूं ? फिर कहना ज़रा एक बार !"

जीन ने फिर दोहराया : "बहुत अच्छा—करो—आत्मघात करो—बेशक करो !"

उसके चेहरे बर मुर्दनी छा गई। "तुम सोचते हो मैं ऐसा कर न पाऊंगी ? मैं इसी सामने वाली खिड़की से छलांग लगाकर—तुम्हारे सामने ही मर मिटूंगी।"

जीन हंस पड़ा। खिड़की खोल, जैसे कोई अपने अतिथि का स्वागत कर रहा हो—वह विनम्र स्वर में बोला : "यह है—रास्ता खुला है आपका—इच्छा हो—तो जाइये।"

उन्मादित नेत्रों से वह उसकी ओर घूरने लगी। कुछ क्षण बाद जैसे कोई खेत में कूद रहा हो—उसी तरह वह छज्जे को फाँदकर, हम दोनों को पार करती हुई—उस खिड़की में से कूद पड़ी।

"शरीर के नीचे गिरने के दृश्य को मैं कभी भूल नहीं सकता। वह आकाश जैसा विस्तृत और पृथ्वी की तरह शून्य था। मैं काँप उठा ! इतना भयभीत हुआ—मानों मुझे स्वयं गिरने का डर हो।

"जीन के होश हवास गुम हो गये। और वह मूर्तिवत् खड़ा रह गया।

"अभागी जोसफ़ीन की दोनों टांगे टूट गई। उसका यथाकथित प्रेमी—अपमान की ज्वाला में जलता हुआ पागल सा हो उठा। उसने सोचा कि अब उसका यही कर्त्तव्य है कि जोसफ़ीन को घर ले जा—उससे विवाह कर ले।

"मित्र, यही इस युगल की कहानी है।"

अन्धकार बढ़ रहा था। जोसफ़ीन को सर्दी महसूस हुई—और उसने घर जाने की इच्छा प्रकट की। नौकर गांव की ओर गाड़ी खींचने लगा। कलाकार अपनी पत्नी के साथ-साथ चलने लगा—और एक घंटे तक दोनों चुपचाप चलते रहे—एक गाड़ी में और दूसरा पैदल।

कौन जाने

हे ईश्वर। तो अन्त में मैं लिखने ही लगा हूँ कि मेरे साथ क्या घटना बीती ? पर क्या मैं ऐसा कर सकूँगा ? क्या मुझमें इतना साहस है ? ओह । वह कितनी हास्यप्रद है--कितनी धुंधली, अज्ञेय और उन्मादपूर्ण।

जो मैंने देखा—यदि मुझे उसमें सन्देह होता, यदि मुझे अपने तर्कों में कहीं लेश मात्र भी त्रुटि नज़र आती अथवा अपने निरीक्षण में खोखलेपन का ज्ञान होता, तो मैं समझ लेता कि मैं किसी भ्रम से ग्रस्त हूँ अथवा कोई विचित्र स्वप्न देख रहा हूँ। क्यों कि कौन जानता है ?

आज मैं एक 'प्राइवेट' मानसिक चिकित्सालय में हूँ । परन्तु इसमें मैं अपनी इच्छा से, भय के कारण दाखिल हुआ था । केवल एक व्यक्ति मेरी कहानी जानता है—और वह है इस हस्पताल का डाक्टर ! अब मैं इसे लिखने लगा हूँ। पता नहीं क्यों ? संभवत अपने मन का बोझ हल्का करने के लिए--क्योंकि यह कहानी··· एक दुःस्वप्न की तरह मेरी विचारधारा पर अंकित हो गई है।

मेरी कहानी इस प्रकार है :—

मैं सर्वदा से एकाकी, स्वप्न द्रष्टा, और वैरागी दार्शनिक की भांति रहा हूँ। मेरा मन कभी भी मानव या दानव के विरुद्ध कलुषित नहीं हुआ। यह सर्वदा शान्त रहा है और इसमें सबके प्रति प्रेम

के भाव रहे हैं। मैं सारा जीवन एकाकी रहा, क्योंकि किसी की उपस्थिति में मैं एक विचित्र अशान्ति और उद्विग्नता अनुभव करता हूँ। उसे कैसे बताऊँ ? मैं स्वयं भी तो उसे समझ नहीं सका। लोगों से मिलने, बात करने अथवा मित्रों के साथ खाना खाने से मैं इन्कार नहीं करता परन्तु थोड़ी सी देर उनके पास रहने से मैं थक जाता हूँ—चिढ़ जाता हूँ और मेरे मन में एक अदमनीय इच्छा उत्पन्न होती है कि या तो वे चले जांय या मैं। गहरे से गहरे निकटतम मित्रों से भी मेरा यही व्यवहार रहा है।

मेरी यह इच्छा—केवल इच्छा ही नहीं बल्कि एक अदमनीय आवश्यकता है। यदि मुझे लोगों के बीच बैठना पड़ता, अथवा गहरे मित्रों के साथ—अधिक देर तक मेरी इच्छा के विरुद्ध बैठे रहने पर मुझे बाध्य किया जाता, तो मेरे साथ अवश्यमेव कोई न कोई दुर्घटना हो जाती। क्या ? कौन कह सकता है क्या होता ? संभवतः केवल मूर्च्छा का दौरा ? हाँ—नहीं !

मुझे एकाकीपन इतना भला लगता है कि मैं अपनी छत के नीचे किसी अन्य व्यक्ति का सोना भी सहन नहीं कर सकता। इसी अथाह वेदना के कारण मैं पैरिस में नहीं रह सकता। यदि मेरे इर्द गिर्द लोगों की भीड़ हो, तो मेरी आध्यात्मिक मृत्यु हो जाती है और मेरे शरीर तथा स्नायुओं को वेदना होती है। चाहे वे लोग सो ही क्यों न रहे हों। मुझे उन लोगों का सोना—उनकी बातचीत से भी अधिक असह्य लगता है। और यदि मुझे यह ज्ञात हो कि मेरे कमरे की दीवार के दूसरी ही ओर कोई पड़ा सो रहा है तो मुझे कभी चैन नहीं आती।

मैं ऐसी प्रकृति का क्यों हूँ ? कौन कह सकता है ? कारण

संभवतः बहुत साधारण है। मैं बाह्य जगत से बहुत जल्दी थक जाता हूँ। मेरे स्वभाव के और भी अनेकों व्यक्ति हैं।

पृथ्वी पर दो प्रकार की जातियाँ हैं। एक तो वे—जिन्हें दूसरों की आवश्यकता है। जिन्हें दूसरों से मिलकर प्रसन्नता होती है, उल्लास मिलता है—और जिन्हें एकाकीपन से घृणा है, जिन्हें अकेले में घबराहट व थकावट अनुभव होती है—जिनके लिए एकाकीपन एक भयानक बर्फ़ के तोदे अथवा रेगिस्तान पार करने के सदृश कठिन है। और दूसरी ओर ऐसे भी लोग हैं—जिन्हें लोगों की संगत से चिढ़ है, घृणा है, और उद्विग्नता का आभास होता है। वे एकाकीपन में शान्ति एवं सुख की साँस लेते हैं। शून्यता में उनकी कल्पना शक्ति के विकसित होने से सुख के स्रोत फूट पड़ते हैं।

यही साधारण मानसिक क्रिया है। कुछ लोग बाहरी जीवन का ही उपयोग कर सकते हैं और कुछ आन्तरिक जीवन का। बाहरी जीवन में स्वयं मेरी भी बहुत कम रुचि है और चित्तवृत्तियाँ शीघ्र ही थक जाती हैं। यदि मेरी रुचियाँ सीमा लांघ जाँय तो मेरे मन को एक असह्य दुःख पहुँचता है।

परिणाम स्वरूप मैं जड़ वस्तुओं से प्रेम करने लगता हूँ—प्रेम करने लगा, उनमें मुझे जीव जन्तुओं की विशेषतायें नज़र आने लगीं। मेरा घर एक छोटे से ससार की भांति था—जहाँ मैं चारों ओर मेज़ों कुर्सियों और अन्य छोटी-छोटी वस्तुओं से घिरा एकाकी जीवन बिताता रहा। ये जड़ वस्तुएं—मेरा सामान—मुझे चिरपरिचित मित्रों की नाईं ही प्रिय थे। थोड़ा-थोड़ा करके मैंने अपने घर को इन चीज़ों से भर लिया था। इस सामान से मैंने अपने कमरे को सजा रखा था—और मैं यहाँ पहुँच उतनी ही प्रसन्नता एवं

सन्तोष प्राप्त करता था—जितना कि मनुष्य किसी स्त्री के बाहुपाश में'''जिसका चिरपरिचित दुलार उसके जीवन का अङ्ग बन जाता है।

यह घर मैंने एक सुन्दर बगीचे में बनवाया था, ताकि सड़क से नज़र न आ सके। नगर से इतना निकट भी था कि आवश्यकता पड़ने पर जीवन की उद्विग्न घड़ियों में मैं किसी का साथ प्राप्त करने जा आ सकूँ। मेरे सारे नौकर, रसोई से परे चहार दीवारी से घिरे एक अहाते में सोते थे। घर के नीरव वातावरण में रात को अन्धकार की तहों में खो जाना, लोप हो जाना, बड़े-बड़े वृक्षों के पत्तों में छिप जाना इतना शान्तिप्रद'''इतना आनन्दमय था कि हर रात मैं घंटों जागा—यह दृश्य देखता रहता।

उस विशेष दिन नगर की नाट्य-शाला में एक नाटक खेला जा रहा था। जीवन में पहली बार मैंने वह अलौकिक संगीत नाटक देखा—और उसे देखकर मुझे असीम आनन्द मिला।

मैं तेज़ गति से घर की ओर चलने लगा। मेरे मस्तिष्क में संगीत के सुर गूंज रहे थे, नेत्रों के सम्मुख सुन्दर कल्पना चित्र अंकित थे। चारों ओर अन्धकार था—इतना प्रगाढ़ अन्धकार, कि सड़क तक दिखाई न दे रही थी'''मैं कई बार गढ़ों में गिरता-गिरता बचा। चुंगी से मेरा घर ३/४ मील के लगभग होगा। धीरे २ चलने पर यह कोई २० मिन्ट का रास्ता था। रात के दो ढाई बजे थे। सामने की ओर आकाश में मध्यम सा प्रकाश छा गया था। आकाश में शुक्ल पक्ष के घिसे हुए चन्द्रमा की एक रेखा सी अंकित थी। कृष्ण पक्ष का चन्द्रमा—जो सांयकाल चार पांच बजे निकलता है, विकसित चांदी जैसा चमकीला और सजीव होता है।

परन्तु आधी रात के बाद का चन्द्रमा शोक जनक, शोषित और भयानक सा होता है। वह तो प्रेत समान नज़र आता है। रात को विचरण करने वाले हर प्राणी ने उसे देखा होगा! शुक्ल पक्ष का चन्द्रमा चाहे धागे के समान पतला ही क्यों न हो''' वह आभापूर्ण प्रकाश फैलाता है और उसकी प्रतिच्छायायें स्वच्छ होती हैं। परन्तु कृष्ण पक्ष के चन्द्रमा का प्रकाश मुर्झाया हुआ होता है जिसकी प्रतिच्छायायें धुंधली और निर्जीव होती हैं। मैंने दूर से ही अपने बाग़ का काला अन्धकारपूर्ण धब्बा सा देखा और न जाने क्यों—उसके भीतर जाने का विचार आते ही मेरे मन में एक विचित्र उद्विग्नता सी छा गई। मेरे पाँव मन-मन के हो गए। वृक्षों का झुरमुट एक क़ब्र की नाईं दिखाई देने लगा—जिसमें मेरा घर दफ़न हुआ जान पड़ता था।

मैंने बाहर का फाटक खोला और घर को जाने वाली—वृक्षों की क़तारों की लम्बी-लम्बी ऊँची गुम्बद की सी सुरंग में धीरे-धीरे चलने लगा। चाँद की पीली और मुर्झायी हुई छाया में बाग़ के रंग बिरंगे फूल धब्बे से नज़र आ रहे थे।

घर के समीप पहुँचते ही विचित्र आशंकाओं ने मेरे मन को घेर लिया। मैं वहीं रुक गया। चारों ओर नीरवता थी। हवा बिलकुल बन्द थी। मैं सोचने लगा "मुझे क्या हुआ है?" पिछले दस वर्ष से लगातार मैं इसी प्रकार अकेला घर में आता रहा—परन्तु कभी भी मन में कोई बेचैनी न हुई थी। मैं रात को कभी डरा न था। यदि कहीं किसी चोर, या डाकू को देखता तो क्रोध से परिपूर्ण हो—मैं एकदम उसपर कूद पड़ता था।—आज मेरा रिवाल्वर मेरे साथ था परन्तु मैंने उसे छुआ तक भी नहीं—क्योंकि

मैं अपने भय को छिपाने के प्रयत्न में था।

वह क्या था ? एक आशंका ? गुप्त आशंका जो अगम्य और रहस्यमय घटनाओं की सम्भावना से पूर्व ही मनुष्य के मन पर छा जाती है ? संभवतः। कौन जानता है ?

पग-पग पर मेरा मन सिहर उठता था। जब मैं अपने विशाल घर की दीवार के नीचे पहुँचा—तो दरवाज़ा खुलने से पूर्व, कुछ क्षण प्रतीक्षा किये बिना मैं भीतर जाने का साहस न कर सका। घर की सब खिड़कियाँ बन्द थीं। मैं अपनी बैठक की खिड़की के नीचे एक बेंच पर बैठ गया—और काफ़ी देर तक काँपता रहा। सिर को दीवार के सहारे टिकाये, वृक्षों की छायाओं पर आँखें गाड़े—बैठा रहा। इन थोड़े से क्षणों में मैंने अपने आस पास कोई असाधारण बात न देखी। केवल एक घूं घूं की ध्वनि सुनाई दे रही थी—जो पहले भी कई बार सुनाई देती थी। कई बार मुझे गाड़ियां जाने, घंटे बजने, या भागते हुए लोगों की पगध्वनियाँ सुनाई देतीं।

धीरे-धीरे वे घूं घूं की ध्वनियाँ स्पष्टतया पहचानने योग्य होती गईं। यह घूं घूं की ध्वनि मेरी नब्ज़ के चलने की आवाज़ न थी—जो मेरे कानों में निरन्तर गूँज रही थी। बल्कि यह तो एक विचित्र धुंधला कोलाहल था, जो निसन्देह मेरे घर से आ रहा था।

दीवार के बाहर से ही मैं इस शोर का अर्थ समझ गया। यह कोलाहल—किसी गिरोह की पांव की आवाज़ एवं मेरे सारे सामान—मेज़ों कुर्सियों आदि के सरकाने की आवाज़ जान पड़ती थी।

बड़ी देर तक मैंने अपने कानों पर विश्वास न किया। परन्तु जब मैंने खिड़की से लगकर देखा—तो मुझे संदेह न रहा कि मेरे

घर के भीतर कोई आसाधारण रहस्यपूर्ण घटना घट रही है। मैं डरा नहीं ... परन्तु आश्चर्यवश जड़ सा हो गया। मैंने अपना रिवाल्वर बाहर न निकाला क्योंकि अभी भी मुझे विश्वास था कि उसकी आवश्यकता ही न पड़ेगी। ख़ैर, मैं प्रतीक्षा करता रहा।

मन में तीव्र उद्विग्नता के कारण निश्चय करने में असमर्थ हो मै प्रतीक्षा करता रहा। कोलाहल निरन्तर बढ़ता जा रहा था। कई बार वह इतना तीव्र और ऊँचा हो जाता कि ऐसा जान पड़ता मानों कुछ असन्तुष्ट लोग क्रोधपूर्वक बड़बड़ा रहे हों।

फिर सहसा अपनी भीरुता से लज्जित हो, मैंने चाबियों का गुच्छा निकाला---और आवश्यक चाबी चुनकर, दोबार घुमाने के बाद बाहर का ताला खोल लिया। तब इतने जोर से दरवाज़े को धक्का मारा कि वह कड़ाक की ध्वनि करता हुआ भीतर की दीवार से आ टकराया।

वह टकराने की ध्वनि मुझे पिस्तौल की गोली चलने की ध्वनि की नाईं सुनाई दी---और उसके उत्तर में---घर के ऊपरी भाग से एक विचित्र कोलाहल सुन पड़ा। जिसे सुन---मैं कांपकर कुछ पग पीछे को हो गया, और रिवाल्वर निकालना व्यर्थ समझते हुए भी---जल्दी से निकाल लिया।

मैं प्रतीक्षा करने लगा---परन्तु इस बार देर तक नहीं। अब मुझे अपनी सीढ़ियों पर, फ़र्श पर, गलीचे पर, टप-टप की एक आसाधारण ध्वनि प्रत्यक्ष सुनाई देने लगी ... जो जूतों की आवाज न थी ... बल्कि लंगड़े की लकड़ी अथवा लोहे की टांगों के अग्रभाग के खनकने की आवाज़ थी। तब मैंने देखा मेरी बाँहों वाली बड़ी कुर्सी लड़खड़ाती हुई बाग़ में से बाहिर आ गिरी। फिर एक

के बाद दूसरी कुर्सी इसी प्रकार बाहर आने लगी। पहले बैठक की कुर्सियाँ—और फिर सोफ़े"'फिर शेष कुर्सियाँ बकरियों की तरह उछलती हुई—और अन्त में खरगोशों की नाईं कूदते हुए छोटे-छोटे स्टूल।

मेरे मन के तूफ़ान का ज़रा अनुमान लगाइये। मैं एक वृक्ष के झुरमुट में छिप गया"'वहाँ छिपकर बैठा मैं अपने समान को लुड़कते देखता रहा। मेरा बाजा"'एक दौड़ते हुए घोड़े की भांति बाहिर आ गिरा। उसी प्रकार छोटी-छोटी अन्य वस्तुएं—गिलास प्लेटें और प्याले आदि भी कीड़ियों की तरह दौड़े-दौड़े इधर उधर बिखर गए। मेरे लिखने की मेज़ की भी यही दशा हुई"'जिसमें मेरे सारे प्रेम-पत्र, मेरी जीवन कथा के पृष्ठ और अनगिनत पत्र छिपे पड़े थे।

सहसा मेरा भय दूर होने लगा और मैं उसपर ऐसे झपटा जैसे कोई चोर अथवा भागती हुई स्त्री की ओर झपटता है। परन्तु उसने अपना मार्ग न छोड़ा और निरन्तर प्रयत्न व क्रोध के बावजूद भी मैं उसकी गति न रोक सका। इस भयानक शक्ति के साथ संघर्ष करते-करते मैं पृथ्वी पर आ गिरा"'। तब वह मेरे ऊपर आ झपटी और मुझे मिट्टी के छोटे-छोटे कणों में घसीट कर ले गई। उसके पीछे-पीछे लुड़कती हुई मेरी कुर्सियाँ मेजें आदि मेरे ऊपर से"'मेरी टांगों को रौंदती हुई"'घाव लगाती हुई, चलने लगीं। जब मैंने उन्हें छोड़ दिया तो दूसरी चीजें मेरे ऊपर से ऐसे गुज़रने लगी जैसे घोड़ों की फौज़ एक गिरे हुए सवार के ऊपर से गुज़रती है।

भयभीत हो, कठिनता से मैंने अपने आप को उस रास्ते से हटा वृक्षों

में छिपा लिया, ताकि मैं उन'''लकड़ी की तुच्छ छोटी-छोटी और अबाधित वस्तुओं को लोप होते देख सकूं कि आखिर वे कहाँ जाती हैं।

दूर मेरे घर के भीतर से'''जहां अब विचित्र ध्वनियाँ गूंज रही थीं—दरवाज़े के बन्द होने की भयानक ध्वनियां सुनाई देने लगीं। किसी ने कड़ाक की ध्वनि से पहले सारे दरवाज़े बन्द किये—फिर बैठक के जिस दरवाज़े को मैंने भूल से खोला था—धमाके से बन्द किया।

मैं नगर की ओर भागा—और जब तक गलियों में कुछ लोगों के बीच न पहुँच गया, मुझे होश न आई। तब मैंने जाकर एक परिचित होटल का दरवाज़ा खटखटाया। वहां पहुँच मैंने अपने कपड़ों मे गर्द झाड़ी और उन्हें बताया कि मेरा चाबियों का गुच्छा खो गया है, इसलिए मैं इस समय घर नहीं जा रहा।

उन्होंने मुझे एक बिस्तर दे दिया—मैं उसी में मुँह सिर ढक, छिपकर लेट गया, परन्तु मुझे नींद न आ सकी। मेरा दिल धक्-धक् कर रहा था और बिस्तर पर पड़ा—मैं पौफटने की प्रतीक्षा कर रहा था। मैंने होटल वालों को कह रखा था कि सुबह होते ही मेरे नौकरों को सूचना दें और यहां बुलाया जाय। ठीक सात बजे नौकर ने आकर मेरा दरवाज़ा खटखटाया।

भय के कारण उसके मुँह का रंग भी उड़ा हुआ था ?

"रात एक बहुत भयानक घटना हुई, स्वामी !" उसने कहा।

"क्या हुआ ?"

"घर का सारा सामान चोरी हो गया—सारा सामान—कुर्सियां, मेज़े, सब कुछ।"

इस समाचार से मुझे प्रसन्नता हुई। क्यों ? कौन जाने ? मैंने

सब कुछ स्वयं देखा था—परन्तु निश्चय किया था कि किसी को न बताऊंगा—छिपाकर रखूँगा—भयानक भेद की नाईं इसे अपनी आत्मा में ही दफ़ना रखूँगा—मैंने उत्तर दिया:

"ओह। ये वही लोग होंगे जिन्होंने मेरी चाबियाँ चुराई। हमें शीघ्र ही पुलिस को सूचना देनी चाहिए। मैं अभी पलभर में तैय्यार होकर तुम्हारे साथ चलता हूँ।"

पांच महीने तक खोज होती रही—परन्तु पुलिस को मेरी किसी छोटी से छोटी चीज़ का भी पता न चला—न चोरों का ही पता लगा। हे भगवान्! जो कुछ मुझे ज्ञात था, यदि मैं सब कुछ बता देता तो? यदि मैं बता देता···तो शायद वे मुझे ही जेल में धकेल देते। हाँ···मुझे। चोरों को नहीं बल्कि···उस व्यक्ति को जिसने यह भयानक दृश्य देखा था।

परन्तु मैं जानता हूँ कि ऐसे समय में अपना मुंह बन्द रखना ही ठीक है। मैंने दोबारा अपने घर को न सजाया—क्योंकि वह व्यर्थ होता। दोबारा वही दुर्घटना होती—और इसी प्रकार निरन्तर होती रहती। अब मेरा उस घर में जाने को दिल भी न चाहता था। अतः मैंने वहाँ जाना भी बन्द कर दिया।

तब मैं पैरिस में जा—एक होटल में रहने लगा। और अपनी मानसिक स्थिति···(जिसके कारण मुझे उस भयानक रात को बहुत उद्विग्नता हुई थी और वहां से भागना पड़ा था—) के विषय में डाक्टरों की सलाह ली।

उन्होंने मुझे सफ़र करने का आदेश दिया। मैं उनके आदेशानुसार सफ़र के लिए चल पड़ा।

२

मैंने इटली में सफ़र करना शुरू किया। सूर्य की धूप से मुझे विशेष लाभ हुआ। छः मास तक मैं जनेवा से वीनस, वीनस से फ़्लोरेन्स, फ्लोरेंस से रोम—और रोम से नेपलज़ घूमता रहा। फिर मैं सिसली गया। सारे अ.फ्रीका में घूमा और उसके महान, शान्त, .खुश्क रेगिस्तान में घूमा, जहाँ अरब लोग ऊंट लिये निरन्तर घूमते रहते हैं—और जिस देश की गर्म हलकी हवा में दिन-रात कभी परिवर्तन नहीं आता।

फिर मार्सेल्ज़ से होता हुआ मैं .फ्रांस पहुँचा—परन्तु देश के आकर्षक व मनमोहक होते हुए भी—मेरा मन वहाँ के आकाश का मध्यम प्रकाश देख—बहुत उदासीन हुआ। अपने देश में पहुँच—मुझे लगा मानों मैं एक ऐसा रोगी हूँ—जिसे आराम तो आ गया है परन्तु किसी हल्के से दर्द से सचेत हो जाता है...अतः पूर्णतया स्वस्थ नहीं हुआ।

तब मैं वापिस पैरिस लौटा। परन्तु एक मास में ही मेरा मन उकता गया। पतझड़ की ऋतु थी—सोचा शीत काल प्रारम्भ होने से पूर्व नार्मण्डी का चक्कर काट लूं—पहले मैंने यह स्थान देखा भी न था।

पहले मैं रोयन गया—और गौथिक कला की अद्वितीय कृतियों के प्रतिबिम्ब—इस प्राचीन नगर में एक सप्ताह बड़े चाव और प्रसन्नता पूर्वक बिताया।

एक दिन, शाम के चार बजे मैं एक विशेष गली में गया—जहां एक नाला बहता था। उस नाले का पानी स्याही की नाईं काला था—और लोग उसे 'रोबेक पानी' कहते थे। अभी मैं वर्गों

की प्राचीन और बेढ़ब बनावट की ओर ही देख रहा था जबकि सहसा मेरा ध्यान कबाड़ियों की दुकानों की एक कतार की ओर आकर्षित हुआ।

मैं सोचने लगा—कि इन सस्ते हाल कबाड़ियों ने भी क्या स्थान चुना है—गन्दे पानी के किनारे, बेढ़ब गली में जहाँ टायलें और सलेट की नाईं चमकती हुई छतें हैं—जहाँ प्राचीन काल के हवा के पंखे अभी तक चरचरा रहे थे।

दुकानों के अंधकार पूर्ण भीतरी भाग में इधर उधर बिखरा तिखरा भाँति-भाँति का सामान पड़ा था—छापेख़ाने, मशीनें, टूटे हुए बर्तनों से लेकर, चित्रित मूर्तियों, ईसा व मेरी की मूर्तियों तक, आभूषण, गिरजा और चित्रित पूजा स्थान सब कुछ वर्तमान था। कितने विचित्र थे ये सब पदार्थ। इन बड़े-बड़े नगरों के ऊंचे-ऊंचे मकानों में ये सराये—जिनमें खिड़कियों तक वे प्राचीन वस्तुएं भरी पड़ी थीं, जिन वस्तुओं की सत्ता बुझी हुई सी जान पड़ती थी··· परन्तु जो अपने मालिकों के जीवनकाल, और फ़ैशन समाप्त हो जाने पर भी वर्तमान थीं—और अब नवजात वंशों द्वारा प्राचीन वस्तुओं के रूप में खरीदी जाँयगी। प्राचीन वस्तुओं की इतनी बड़ी राशी देख—उनके लिए मेरे मन में एक चाह पुनः उत्पन्न हो गई। मैंने एक-एक कर के सब दुकानें छान मारीं।

हे भगवन्! मुझे सहसा धक्का सा लगा। मेरे सामने एक सुन्दर अलमारी पड़ी थी···जिसमें बहुत सामान भरा पड़ा था। उसे देख मेरा अंग-अंग काँपने लगा और इतना काँपा—कि मैं उसे छू न सका। मैंने अपना हाथ बाहिर निकाला।···परन्तु फिर हिचकिचाया वास्तव में यह वही अलमारी थी—मेरी अलमारी! सहसा जब

मेरी दृष्टि उसी गैलरी की गहरी प्रतिछाया पर पड़ी—तो बेल बूटों वाले कपड़ों से ढ़की मेरी तीन कुर्सियां दिखाई दीं।—उसके आगे मेरी दो अद्विनीय सुन्दर मेज़ें पड़ी थीं—जिन्हें पैरिस तक से लोग देखने आया करते थे। आप ही सोचिये ज़रा! इन सब चीज़ों को देख मेरी मानसिक दशा क्या हुई होगी!

मैं चलता गया—जड़वत् दुःख से पीड़ित आगे बढ़ता गया···· क्योंकि मैं प्रस्तर युग के सरदारों के समान वीर हूँ, जो जादू तन्त्रों के जाल में पैर बढ़ाने से भी न डरते थे। एक-एक करके मेरी मूर्तियाँ, पुस्तकें, शस्त्र आदि—पत्रों से भरी उस मेज़ के अतिरिक्त, मुझे मेरी सब चीज़ें दिखाई दीं। इन मध्यम प्रकाश वाली तंग गैलरियों से होता हुआ मैं ऊपर चढ़ता गया। मैं अकेला था। मैंने ज़ोर-ज़ोर से आवाज़ें लगाईं; किसी ने उत्तर नहीं दिया। इस विशाल—भूल भूलैय्यों वाले—रहस्यमय घर में और कोई मौजूद न था।

रात हो गई। अंधकार में मेरी अपनी ही एक कुर्सी पर मुझे बैठना पड़ा—क्योंकि मैं वहां से निराश होकर लौटना न चाहता था। कई बार मैंने पुकारा—ज़ोर ज़ोर से आवाज़ें लगाईं। अरे भाई! कोई है क्या?

एक घंटा बैठने के पश्चात्—मुझे एक हल्की सी चलने की आवाज़ सुनाई दी—न जाने किधर से। मैं भागने के प्रयत्न में ही था जबकि हृदय को थामकर—मैंने पुकारा--और मुझे साथ वाले कमरे में एक हल्का सा प्रकाश नज़र आया।

"कौन है?" किसी आवाज़ ने प्रश्न किया।

"एक ग्राहक।" मैंने उत्तर दिया।

उत्तर आया :—

"इस समय इन दुकानों में आने का समय नहीं--रात बहुत बीत चुकी है।"

"मैं घंटा भर से प्रतीक्षा कर रहा हूँ" मैंने कहा।

"तुम कल आ सकते हो।'

"परन्तु कल तो मैं रोयन से जा ही रहा हूँ।"

मेरा आगे जाने का साहस न हुआ--और वह मेरे पास न आया। मैं सारा वक्त उसके हाथ की लालटेन की परछाईं की ओर देख रहा था--जिसपर युद्ध में मरे हुए लोगों के ऊपर उड़ते हुए दो देवताओं की आकृतियां बनी थीं। यह लैम्प भी--मेरा ही था--मैंने फिर कहा :

"हाँ, तो फिर तुम आ रहे हो?"

उसने उत्तर दिया :

"मैं यहाँ बैठा आपकी प्रतीक्षा करता हूँ। आप यहां आ जाइये।"

मैं उठकर उसकी ओर गया।

एक बहुत बड़े कमरे के मध्य में एक छोटा सा व्यक्ति--एक छोटा और बहुत मोटा, बेढ़ब सा व्यक्ति खड़ा था।

उसकी पतली-- थोड़े बालों वाली पीली सी दाढ़ी थी--और सिर में बालों का चिन्ह तक न था। मुझे देखने के लिए जब उसने बत्ती आगे बढ़ाई--तो उस विशाल फ़र्नीचर से मेरे कमरे में मुझे--उसका सिर चांद की तरह प्रतीत हुआ। उसका मुंह फूला हुआ था और उस पर झुर्रियाँ पड़ी थीं''''उसकी आँखें भीतर की ओर धंसी हुई थीं।

तब मैंने अपनी ही तीन कुर्सियों का सौदा किया और इसी समय उनका भारी मूल्य दे--अपने होटल के कमरे का नम्बर दे दिया--और उसे अगले दिन सुबह नौ बजे से पूर्व पहुँचाने का आदेश दे दिया।

मैं दुकान से बाहर निकला। शिष्टाचार प्रदर्शित करने के लिए वह मुझे दरवाज़े तक छोड़ने आया।

मैंने तत्क्षण ही पुलिस स्टेशन पर पहुंच--अपनी चोरी और उसकी खोज--एवं मिलने की सारी घटना की सूचना दी।

उन्होंने उसी समय जहाँ मैंने अपनी चोरी की सूचना दे रखी थी--तार द्वारा सारा किस्सा पूछा--और मुझे उनका उत्तर आने तक प्रतीक्षा करने को कहा। एक घंटे बाद उनका उत्तर भी आ गया। उत्तर मेरे पक्ष में अर्थात् संतोष जनक था।

"मैं अभी इस पुरुष को पकड़वा कर पूछता हूँ।" इंस्पैक्टर ने कहा, "क्योंकि हो सकता है कि पकड़े जाने के भय से वह सारी चीज़ें ले कर यहाँ भाग आया हो। यदि रात को खाना खाने के बाद--कुछ घंटों बाद आप यहाँ आ जावें--तो मैं उसको यहाँ आपकी उपस्थिति में ही बुला--उससे पूछताछ करता हूँ।"

"अवश्यमेव! बहुत-बहुत धन्यवाद…"

मैं अपने होटल गया--और भर पेट खाना खाया। और दिनों की अपेक्षा आज मैंने अधिक खाना खाया। मुझे संतोष हुआ। उन्होंने उसे पकड़ लिया है। दो घंटे बाद मैं चीफ़ इन्सपैक्टर के पास गया--जो बैठा मेरी प्रतीक्षा कर रहा था।

मुझे देखते ही वह बोला, "वे आपके उस दुकान दार को ढूंढ नहीं सके। पुलिस के आदमी अभी तक उसे पकड़ नहीं सके।"

"ओह !" मुझे ऐसा लगा मानों मैं मूर्च्छित हो जाऊंगा ! "परन्तु आपने उसका घर तो ढूंढ़ निकाला है ?" मैंने पूछा।

"हाँ। जब तक वह वापिस नहीं आता--मेरे आदमी उस घर को घेरे बैठे हैं। परन्तु वह पुरुष ग़ायब है !"

"ग़ायब है ?"

"हाँ, ग़ायब है। प्रायः वह सांयकाल का समय-अपनी एक पड़ोसिन- जो एक विचित्र जादूगरिन-सी दुकानदारिन है, के साथ व्यतीत करता है। उस विचित्र जादूगरिन का नाम--विधवा बाय-डीयोन है। आज सांयकाल वह उसके पास नहीं गया--उसका कथन है कि वह नहीं जानती कि वह कहां है ! हमें कल तक प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।"

मैं चल पड़ा। रोयन की गलियाँ अब मुझे कितनी भयानक ! कितनी विचित्र लग रही थीं।

रात भर मुझे दुःस्वप्न आने के कारण—ठीक नींद न आ सकी। क्योंकि मैं अधिक उत्सुकता और बेचैनी न दिखाना चाहता था—अतः मैंने पुलिस स्टेशन जाने के लिए दस बजे तक प्रतीक्षा की।

दुकानदार वापिस न लौटा था। उसकी दुकान अब भी बन्द पड़ी थी।

इन्स्पैक्टर ने मुझ से कहा :

"मैंने जो कुछ भी आवश्यक था, कर दिया है। इस मामले को पुलिस विभाग ने अपने हाथ में ले लिया है। हम इकट्ठे उस दुकान पर चल कर, दुकान खुलवा लेंगे। और वहाँ पर जो-जो सामान आप का पड़ा हो, मुझे बता देवें।"

एक गाड़ी में चढ़ कर हम वहाँ गए। कुछ पुलिस के आदमी

ताला तोड़ने वाले के सहित दुकान के बाहर खड़े थे—और ताला टूटा पड़ा था।

जब मैं भीतर गया—तो जितना सामान मैंने रात को देखा था—उनमें से कुछ भी वहां न पड़ा था। न वह अलमारी—न मेजें न कुर्सियाँ—कुछ भी नहीं। यद्यपि पिछले दिन रात को क़दम-क़दम पर मुझे अपनी वस्तुएं दिखाई दे रही थीं।

इन्स्पैक्टर आश्चर्यान्वित हो, पहले कुछ संदेह पूर्वक मेरी ओर देखने लगा।

"बड़े आश्चर्य की बात है। दुकानदार के साथ ही मेरे सब सामान का ग़ायब हो जाना बड़े आश्चर्य की बात है। इन दोनों चीज़ों का परस्पर कुछ सम्बन्ध है।" वह मुसकराया :

"ठीक! आपने कल अपनी चीज़ों को खरीद—उसके दाम देने में भारी भूल की। उसी से संभवतः वह सावधान हो गया।"

मैंने उत्तर दिया :

"मुझे आश्चर्य तो इस बात से हो रहा है कि जिन स्थानों पर कल रात मेरा सामान पड़ा था—उन सब स्थानों पर अब कोई न कोई और चीज़ पड़ी है।"

"अच्छा?" इन्सपैक्टर ने उत्तर दिया, "उसके पास सारी रात का समय था—और साधन भी रहे होंगे। शायद इस घर का साथ वाले घरों में कोई रास्ता जाता हो। ख़ैर कोई बात नहीं, मैं बहुत शीघ्र इस मामले की जाँच पड़ताल करवाऊंगा। अब मामला हमने अपने हाथ में ले लिया है—क्या यह बदमाश, चोर हम से अधिक देर तक बच सकता।"

× ×

ओह ! मेरा दिल···मेरा दिल तेज़ी से धड़क रहा था ।

× ×

मैं पन्द्रह दिन और रोयन में ठहरा । वह दुकानदार वापिस न लौटा । हे ईश्वर ! क्या संसार में कोई ऐसा जीव था, जो उस तक पहुँच सके—जो उसे ढूंढ़ सके ? सोलवें दिन—मेरे खाली मकान के चौकीदार और माली ने मुझे यह विचित्र पत्र लाकर दिया :

श्रीमान्,

मैं आपको बताना चाहता हूँ कि कल एक ऐसी घटना हुई, जिसके विषय में सोचना भी कठिन है । पुलिस तक उस घटना से हैरान है । सारा सामान वापिस आ गया है—बिलकुल सारा । कोई एक छोटी से छोटी वस्तु भी ऐसा नहीं, जो वापिस न लौटी हो । मकान बिल्कुल उसी ढंग से सजा पड़ा है—जैसाकि उस दिन था, जब सारा सामान चोरी हुआ था । इस घटना से सब के सिर चकरा रहे हैं । यह शुक्रवार और शनिवार की रात की बात है । जैसाकि, चोरी के दिन चिन्ह पड़े थे—ठीक वैसे ही सारा सामान फाटक के रास्ते दरवाज़े तक लाया जान पड़ता है ।

हम यहां पर खड़े—आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं ।

आपका आज्ञाकारी सेवक,

फ़िलिप राड़िन

नहीं, नहीं--नहीं--मैं वहाँ पर वापिस न जाऊंगा ।

मैं यह पत्र पुलिस इंस्पैक्टर के पास ले गया ।

"यह सामान का आना बड़े चातुर्य से हुआ है ।" वह बोला

'हमें इस मामले में यह दिखाना चाहिये कि हम कुछ नहीं कर रहे । अवश्य ही--बहुत जल्दी, हम उस चोर को पकड़ निकालेंगे ।"

परन्तु वह पकड़ा नहीं गया। पुलिस के कर्मचारी उसे पकड़ नहीं सके और मैं उससे इतना ही डरता हूँ जितना कि कोई एक जंगली जीव से डरता है !

हाँ--वह पकड़ा नहीं गया।--और वह कभी पकड़ा नहीं जायगा। उसे इसकी क्या परवाह है ? केवल मैं ही उसका सामना कर सकता था -- परन्तु मैंने नहीं किया।

और यदि वह वापिस आ भी गया—यदि वह वापिस अपनी दुकान पर चला भी गया—तो कौन इस बात को प्रमाणित कर सकता है कि मेरा सामान उसकी दुकान में ही पड़ा था। उसके विरुद्ध केवल मैं ही प्रमाण दे सकता हूँ !—और मैं यह भी जानता हूँ कि केवल मेरी गवाही को संदेह की निगाहों से देखा जायगा।

नहीं—नहीं—ऐसा जीवन मैं अधिक देर तक नहीं सह सकता। और जो कुछ मैंने देखा—वह रहस्य मैं अधिक देर तक स्वयं ही नहीं छिपा सकता। मेरे लिए निरन्तर इस भय से आवृत रहना कठिन है—कि कहीं फिर ऐसी घटना न हो जाय।

इस प्रायवेट पागलखाने के डाक्टर को फिर से मिलने गया—और उसे यह सारा किस्सा सुनाया।

देर तक मुझ से प्रश्न करने के बाद वह बोला :

"क्या तुम यहाँ कुछ देर और ठहरोगे।"

"जी हाँ, अवश्य।"

"तुम्हारे पास साधन हैं ?"

"जी हां,"

"क्या तुम मकान के अलग भाग में रहना पसन्द करोगे ?"

"जी,"

"क्या तुम इस बीच मित्रों से मिलना चाहोगे ?"

"नहीं—कदापि नहीं। हो सकता है कि रोयन से वह व्यक्ति मेरा इस घर तक पीछा करे।"

× ×

और मैं गत तीन मास से बिल्कुल एकाकी रहा हूँ। मैं काफ़ी शान्त रहता हूँ। केवल एक डर लगता है···यदि वह प्राचीन वस्तुओं का व्यापारी-वह दुकानदार पागल हो गया तो···और यदि वे उसे वापिस यहाँ ले आये···स्वयं जेल तक भी तो सुरक्षित नहीं···

राक्षसी बच्चों की मां

उस दिन पानी के नाले के पास खड़े, धनी लोगों की परिचित सड़क की ओर देखते-देखते—मेरी दृष्टि अचानक पैरिस की एक सुप्रसिद्ध युवती पर पड़ी—जिसे लोग बड़े प्रेम और आदर की दृष्टि से देखते थे। उस स्त्री को देखते ही मुझे इस भयानक कहानी एवं एक विचित्र स्त्री की याद आ गई।

यह कहानी एक ऐसी घटना है—जिसे बहुत-बहुत समय बीत जाने पर भी भूलना कठिन है।

मेरे एक मित्र ने, अपने छोटे से कस्बे में मुझे कुछ दिन अपने साथ बिताने के लिए निमंत्रित किया।

वहां प्रथा के अनुसार उसने मेरा आदर सत्कार किया और मुझे सारे कस्बे में घुमाने के लिए ले गया। उसने मुझे सारे दर्शनीय दृश्य, ज़मींदारों के घर, न्यायालय, पुरानी इमारतें और खण्डहर—समाधियां, गिरजाघर, पुराने पत्रों पर खुदे हुए चित्र, लम्बे-लम्बे विचित्र वृक्ष, सेंट ऐण्ड्रू का प्रसिद्ध बलूत का वृक्ष और रोकूबाउज़ के हरे पड़े— कई चीज़ें दिखायीं।

भ्रमण की समाप्ति पर संतोष प्रकट करते हुए जब मैं वहाँ की सभी दृश्य वस्तुऐं देख चुका, तो खेद प्रकट करते हुए मेरा मित्र बोला:—"अब ऐसा कोई भी स्थान शेष नहीं रहा—जो तुम्हें दिखाया जा सके।" मैंने संतोष की सांस ली। सोचा, चलो वृक्षों

की छाया में तनिक आराम करने का तो समय मिलेगा।

परन्तु सहसा मेरे मित्र को कुछ याद आया—"नहीं, नहीं—याद आया। अभी तो एक और विशेष दर्शनीय दृश्य है। वह तो रह ही गया। जानते हो वह क्या है?—एक राक्षसी बच्चों की माँ।"

"वह कौन है?" मैंने पूछा।

"उन अद्भुत बच्चों की मां है?" उसने उत्तर में कहा,

"वह एक भयानक स्त्री है—एक सिद्ध राक्षसी''''एक ऐसा जीवित पदार्थ—जो सोच समझ कर प्रति वर्ष एक नया बदसूरत, भद्दा, भयानक राक्षसी आकृति का बच्चा उत्पन्न करती है। संक्षेप में वह सरकस (तमाशे) वालों के पास अपने उन बच्चों को बेचने का व्यापार करती है।

"इस भयंकर कार्य को करने वाले व्यापारी प्रायः इसके पास पूछने के लिए आते रहते हैं कि क्या इसने कोई नया बच्चा उत्पन्न किया। फिर यदि वह उन्हें पसन्द करते हैं—तो उसका मोल—भाव करते हैं।

"वह इस प्रकार अबतक ११ विचित्र जीव उत्पन्न कर चुकी है। अतः अब उसने काफ़ी पैसा कमा लिया है।

"शायद तुम सोच रहे हो—कि मैं तुमसे मज़ाक करता हूँ—अथवा बात को बढ़ा—चढ़ा कर बता रहा हूँ—। नहीं मेरे मित्र, यह शत प्रतिशत सच है। मैं तुम्हें वास्तविक बात ही बता रहा हूँ।

"आओ, चलो! तुम्हें वह स्त्री दिखाऊं। जब तुम उसे देख चुकोगे—तो बताऊंगा कि वह कैसे वे राक्षसी बच्चे उत्पन्न करती है—अथवा कैसे वह विचित्र बच्चों को उत्पन्न करने में सफल हुई है।

यह कह, वह मुझे प्रान्त की सीमा तक ले गया।

वह स्त्री सड़क के किनारे एक छोटे से सुन्दर घर में रहती थी। घर बहुत बढ़िया ढ़ंग से सजा और तरीके से रखा हुआ था। घर के बाहर एक बाग़ था—जिसमें तरह-तरह के रंग-बिरंगे फूल खिल रहे थे। उनकी मन्द-मन्द महक अत्यन्त मनोहर और रुचिकर थी। उस मकान को देखकर यही अनुमान लगता था—कि ज़रुर वह किसी अवकाश प्राप्त सरकारी वकील का घर है।

उसके नौकर ने हमें एक छोटे से बैठकखाने में बिठा दिया। और वह विचित्र स्त्री भी वहीं आ गई।

उसकी आयु लगभग ४० वर्ष की थी। तीखे नयन-लम्बा क़द, शक्तिशाली, स्वस्थ किसान स्त्रियों के समान बलिष्ठ, आधी जानवर और आधी स्त्री सी—नज़र आती थी।

वह जानती थी कि लोग उसे कितनी घृणाभरी दृष्टि से देखते हैं। अतः उसने कपट पूर्ण नम्रता की दृष्टि से हमारा स्वागत किया।

"आप लोग क्या चाहते हैं ?" उसने पूछा।

"मेरे मित्र ने उत्तर दिया—"हमें कहीं से समाचार मिला था कि आपका अन्तिम बच्चा संसार के अन्य साधारण बच्चों की तरह ही है—अपने बड़े भाई बहनों से बिल्कुल भिन्न है। मैं अपनी आँखों से इस बात को देखने के लिए ही यहां आया था। क्रोधित, कपटी निगाहों से देखते हुए, उस स्त्री ने उत्तर दिया—

"नहीं नहीं, । श्रीमान् जी, बिल्कुल नहीं। वह तो शायद अपने बड़े भाई बहनों से भी कहीं अधिक कुरुप व भद्दा है। मेरा भाग्य ही ऐसा है··· । दुर्भाग्य से सभी बच्चे उसी असाधारण ढाँचे

के हैं। दैव की कठोरता है—भला इसमें मानव क्या कर सकता है! भाई साहब, ज़रा सोचिए, एक ग़रीब, निस्हाय, एकाकी स्त्री पर परमात्मा इतना कठोर कैसे हो सकता है?"

उसने कपटपूर्ण ढ़ंग से, आँखें नीची किये हुए, प्रयत्न पूर्वक अपनी आवाज़ की स्वाभाविक तीव्रता को किसी हद तक कोमलता में परिवर्तित कर लिया था। वह हड्डियों का ढांचा—असभ्य, नोकदार अजनबी शक्ति, अत्याचारी हाव-भाव और भेड़िये की सी गर्जन के योग्य ही जान पड़ता था....। उसके मुँह से—रुंधे हुए कंठ से कहे गए वे शब्द विचित्र और अस्वाभाविक से जान पड़ते थे।

"हम आपका वह बच्चा देखना चाहते हैं!" मेरे मित्र ने धीरे से कहा।

क्षणभर के लिए संभवतः वह तनिक लज्जित सी हुई। या हो सकता है कि मेरा अनुमान ग़लत हो। कुछ क्षण के लिए वह मौन रही। फिर अपेक्षाकृत ऊंची ध्वनि में बोली—"उसे देखने से आपको क्या लाभ होगा?"

"परन्तु दिखाने में भी तो आपका कुछ हर्ज नहीं होता!" मेरा मित्र बोला। कितने ही अन्य लोग हैं जिन्हें आप दिखलाती फिरती हैं—। आप मेरा मतलब समझती हैं न—कि मेरा अभिप्राय किन, लोगों से है?"

अपने क्रोध को दबाते हुए वह बोली :

"अच्छा तो आप लोग इसी कारण यहाँ आये थे? यह बात है क्या? तुम लोग केवल मुझे तिरस्कृत करना चाहते थे?—इस

कारण कि मेरी सन्तान जानवरों जैसी है ! हैं---? अच्छा, तो मैं तुम्हें न दिखाऊँगी। नहीं—नहीं, कदापि नहीं, तुम उन्हें नहीं देख सकते। जाओ, भागो यहां से। तुम जैसे लोगों को मैं .खूब समझती हूँ। चलो—निकलो यहाँ से, मुझे तंग करने की कोई आवश्यकता नहीं !" कमर पर हाथ रखती हुई वह हमारी ओर बढ़ी। उसकी तीव्र ध्वनि सुनने पर एक प्रकार की धीमी सी विचित्र आवाज़—जो म्याऊँ-म्याऊँ...से सादृश्य रखती थी—साथ वाले कमरे से सुनाई दी। मेरी नसें तक कांप उठीं। उस भयानक स्त्री के हमारी ओर बढ़ने से पूर्व ही हम दोनों पीछे को हट गये।

"याद रखो, (लोग उसे राक्षसी के नाम से पुकारते थे) राक्षसी ! यह बच्चा किसी दिन तुम पर दुर्भाग्य लावेगा।" मेरा मित्र बोला।

क्रोध से कांपती, भय से हाँपती, भुजायें हिलाती हुई—भावावेग से पागल सी हो वह चिल्लाई, "निकल जाओ—यहां से निकल जाओ तुम। कौन मुझ पर दुर्भाग्य लावेगा ? जानवर कहीं के। भागो, निकलो यहां से।"

भय से सिकुड़ कर हम दोनों भाग निकले।

घर से बाहर पहुँच कर मेरा मित्र बोला:—"तुमने उसे देख लिया न ! उसके विषय में तुम्हारा क्या विचार है ?"

"मुझे इस नीच पतिता स्त्री का इतिहास तो बताओ !" मैंने उत्तर दिया।

जब हम उस सफ़ेद ऊँची सड़क पर पहुँचे---जिसके दोनों ओर अनाज की फ़सल लहलहा रही थी, जो कोमल मन्द-मन्द सुरभित समीर से आलिंगित होने के कारण शान्त सागर की नाई तरंगित

हो रही थी—तो मन्द गति से चलते हुए मेरे मित्र ने उसके विषय में यह कथा कहनी शुरुकी—

एक ज़माना गुज़र गया जब यह स्त्री खेती बाड़ी करती थी। यह एक अच्छे स्वाभाव की, सदाचारी, सावधान मज़दूरनी थी। इसके विषय में कभी चर्चा न हुई थी कि इसका भी कोई प्रेमी है! सरल स्वभाव की लड़की थी—अतः कोई भी इसके प्रति किसी प्रकार का संदेह न रख सकता था।

एक बार अनाज काटने के दिन थे। रात का समय था। विशाल आकाश के नीचे गरम तेज हवा चल रही थी। गांव के अन्य अनेकों युवतियों और युवकों के गाढ़े स्वस्थ शरीर पसीने से तर थे। उस रात–अन्य युवतियों की नाईं—यह भी किसी पुरुष के स्वार्थ की पूर्ति का पात्र बनी।

कुछ समय बाद इसे पता चला कि यह गर्भिणी हो गई है। तब यह लज्जा और भय से काँप उठी। किसी भी कीमत पर इस दुर्भाग्य को छिपाने के लिए इसने बल पूर्वक एक विचित्र उपाय का आविष्कार किया। और रस्सी व लकड़ी की एक अंगिया बाँध—यह अपने पेट को सिकुड़ाती रही। बच्चे के गर्भाशय में बढ़ने के साथ ही साथ, जितना ही इसका पेट भारी होता था—उतना ही साहस-पूर्वक वह उस पीड़ा पहुँचाने वाले वस्त्र को, अत्यन्त दुःख सहती हुई भी—ज़ोर से बाँध लेती थी। और दिन भर मुसकाने तथा चुस्त व फुर्तीली रहने का प्रयास करती—ताकि किसी को इस रहस्य का संदेह भी न होने पावे।

"इस प्रकार उसने अपने पेट के बच्चे को दुर्बल बना दिया··· उसकी आकृति नष्ट कर उसे बेढब सा राक्षसीय जीव बना दिया।

बच्चे का ढाँचा चौरस बन गया—एक कोने से बाहिर को निकला हुआ" और दो बड़ी-बड़ी आँखें मस्तिष्क के बीच में से उभरी हुईं। उसके शरीर के पिछली ओर हाथ और पाँव अंगूरों की बेल की नाईं मुड़े हुए और बहुत लम्बे थे। अंगुलियाँ और पंजा मकड़ी की टांगों से सादृश्य रखता था। पीठ बहुत छोटी और अखरोट की तरह गोल थी।

बसन्त ऋतु थी, जब कि उसने एक दिन बाहिर खेतों में ही उस बच्चे को जन्म दिया। कूड़ा करकट उठाने वाली जमादारिनें उसकी ओर सहायता देने के लिए दौड़ी आयीं।—परन्तु जब उसे इस प्रकार के विचित्र जीव को जन्म देते देखा—तो चिल्लाती हुईं भयभीत हो, भाग निकलीं। थोड़ी देर में बात सारे गांव में फैल गई। और जगह-जगह पर यही चर्चा होने लगी कि उसने एक राक्षस को जन्म दिया है। तब से उस अभागिन का नाम—'राक्षसी' पड़ गया। उसे नौकरी से निकाल दिया गया। और वह भिक्षा, दया—या संभवतः गुप्त प्रेम के सहारे रहने लगी, क्योंकि वह एक सुन्दर कन्या थी—और ऐसे भी अनेकों पुरुष हैं जो नर्क से भय नहीं खाते—अतः जो उसे गुप्त रूप में अपना सकते थे।

उसने उस दैत्य-स्वरूप बच्चे का लालन पालन किया—यद्यपि वह उससे जंगली जानवर का सा व्यवहार करती थी। यदि पादरी ने उस बच्चे के अपनी माँ से ही घात की आशंका कर, उसे चेतावनी न दी होती—और उसके लिए कानून का भयानक निर्णय न बताया होता, तो हो सकता है, वह उस बच्चे का गला घोंट कर उसे कभी का मार डालती।

कुछ समय बीत जाने पर एक बार—कुछ प्रदर्शनी कर्त्ता उस

रास्ते से जा रहे थे—। वहाँ उन्होंने इस विचित्र घटना की खबर सुनी। वे उस स्त्री के पास गए और कहने लगे—"यदि तुम्हारा वह बच्चा हमारे काम का हुआ, तो हम उसे ख़रीद लेंगे।"

बच्चा दिखाया गया। वह उन्हें बहुत पसन्द आया। तब उसकी माँ को—उस राक्षसी बच्चे की माँ को—बच्चे के मूल्य रूप में उन्होंने ५०० .फ्रैन्क दिये। पहले तो इस प्रकार के व्यवहार पर उसे कुछ लज्जा सी अनुभव हुई—और उस बच्चे को उन लोगों के सामने लाने में उसे हिचकिचाहट हुई—परन्तु जब उसने देखा कि इस प्रकार के जीवों से धन कमाया जा सकता है—उन लोगों को इस प्रकार के बच्चों की आवश्यकता रहती है, वे इन्हीं चीज़ों का व्यापार करते हैं—तब वह ऐसे जीव उत्पन्न करने लगी। हर बच्चे को बेचते समय मोल-भाव करती—पैसे-पैसे के लिए झगड़ती···अपने नये बच्चे की बदसूरती की कहानी से उन्हें उत्तेजित करती···और मज़दूरों की सी भाँति लालसा से उनकी कीमत बढ़ाने का प्रयत्न करती।

कहीं बाद में वे लोग उसे धोखा न दे दें, इस भय से बच्चा उत्पन्न होने से पूर्व ही वह उनसे परामर्श करने लगी। वे उसे प्रति वर्ष ४०० .फ्रैन्कज़ देने पर तैय्यार हो गए—जैसे उस जानवर का जन्म होने से पूर्व ही, उसे नौकर रख लिया गया हो।

इतनी बड़ी आय की वह आशा भी न कर सकती थी। इस तरह जब उसने देखा कि प्रत्येक बच्चे की उत्पत्ति से उसे पैसे मिलते हैं—तो वह .ख़ुशी से पागल सी हो उठी। इसके बाद प्रति वर्ष एक नया अद्भुत बच्चा उत्पन्न करने की तीव्र लालसा ने उसे आ घेरा ताकि वह भी ऊंची श्रेणी के लोगों की भांति प्रतिवर्ष नियत

आय प्राप्त कर सके।

उसकी यह भी इच्छा पूरी होती चली गई। वास्तव में वह गर्भ के नौ महीने लगातार--भिन्न २ स्थानों पर अधिक भार डाल--हर बच्चे के आकार को भिन्न-भिन्न रूप में लाने में सिद्धहस्त हो गई थी।

उसके कई बच्चे लम्बे थे—कई छोटे—कई केकड़े की तरह के—तो कुछ छिपकली के से। कई मर गए—जिनकी मृत्यु पर उसे सचमुच हार्दिक खेद हुआ—क्योंकि इस तरह जो धन वह उनसे प्राप्त कर सकती थी, वह भी उसके हाथ से चला गया।

कानून ने इस मामले में दख़ल देने की कोशिश की, परन्तु कुछ भी प्रमाणित न हो सका। इस प्रकार उसे शान्तिपूर्वक इस प्रकार के आश्चर्यजनक बेढब बच्चे उत्पन्न करने का अवसर मिलता रहा।

अब भी उसके ११ बच्चे जीवित हैं—जिनसे उसे ५००० से ६०००तक के लगभग आय हो जाती है। एक अन्तिम बच्चा अभी तक नहीं बिका—वही एक, जिसे दिखाने के लिए मैंने उसे कहा था और उसने—दिखाने से इन्कार कर दिया था। परन्तु अब अधिक देर तक वह भी इसके पास नहीं रहेगा—क्योंकि अब तो प्राय: सभी प्रमुख सरकसों के मालिक इससे परिचित हैं—और आ कर देखते रहते हैं कि उसने कोई नया आविष्कार उत्पन्न किया है या नहीं!

जो बच्चा अत्याधिक बेढब हो—उसकी यह नीलामी भी करती है।"

मेरा मित्र चुप हो गया। एक विचित्र घृणा—पागल क्रोध मेरे

मन में उठने लगा। मुझे इस बात का पश्चाताप होने लगा कि जब वह असभ्य स्त्री मेरे सामने ही बैठी थी—तो मैंने उसका अन्त क्यों न कर दिया।

"तो इन राक्षसी बच्चों का पिता कौन है?" मैंने पूछा।

"यह तो कोई नहीं जानता।" उसने उत्तर दिया।

"'वह 'अथवा''''वे' कुछ संकोची जान पड़ते हैं अतः अपना नाम गुप्त रखना ही श्रेय समझते हैं। शायद वे भी इस लूट-खसोट के साझीदार हों।"

इस पूर्व घटित घटना को मैं भूल सा गया था—परन्तु कल सहसा रैस्टारैन्ट के पास उस अद्वितीय सुन्दरी को देख, जिसके इर्द गिर्द बहुत से प्रशंसक एकत्रित थे—मुझे फिर से इस स्त्री की याद आई।

अपने एक डाक्टर मित्र के साथ हाथ में हाथ डाले मैं चल रहा था। दस मिनट के बाद एक नर्स के साथ हमने तीन बच्चों को जाते देखा, जो रेल की पटरी के पास खेल रहे थे।

उनमें से एक दयनीय लूले लंगड़ों का जोड़ा ज़मीन पर पड़ा था। तभी मैंने देखा—कि वे तीनों के तीनों बच्चे ही बदसूरत, कुबड़े तथा लूले लंगड़े और बेढ़ब थे। उन्हें देख डाक्टर ने मुझसे कहा—"यह उसी सुन्दरी की उत्पत्ति हैं—जो तुमने अभी-अभी देखी।"

मुझे उस स्त्री उन अभागे बच्चों पर दया आई॥

"अभागी माँ।" मैं चिल्ला उठा। "इन दुर्घटनाओं के बाद भी वह कैसे हंसने का साहस कर सकती है?"

"मेरे मित्र! उस स्त्री पर दया करना दया शब्द का उपहास करना है" डाक्टर ने कहा, "गर्भ के अन्तिम दिन तक शरीर के ढांचे को

सुन्दर चुस्त रखने का ही, ये परिणाम हैं। ये बेढब जीव उन्हीं तंग अंगियाओं द्वारा पेट को सिकोड़-सिकोड़ कर रचे गये हैं। यह स्त्री अच्छी तरह जानती थी कि इस तरह वह अपने सारे जीवन को खतरे में डाल रही है। परन्तु जब तक वह सुन्दर और आकर्षक रह सकती—उसे इसकी क्या परवाह थी?

और उसे देख मुझे इस राक्षसी ग्रामीण स्त्री की घटना याद आ गई—जो अपने बच्चों को बेचा करती थी।

कब्र

सोलह जुलाई १८८३ की रात के दो बजे की घटना है। बेज़ेर कब्रिस्तान का चौकीदार, कब्रिस्तान के पास ही एक छोटे से मकान में पड़ा सो रहा था—सहसा रसोईघर में बंधे कुत्ते के भोंकने से उसकी नींद खुल गई।

उठते ही वह नीचे उतरा और देखा कि दरवाज़े के पास खड़ा कुत्ता कुछ सूंघ रहा है—और बड़े क्रोधित कंठ से चिल्ला रहा है—मानों कोई भिखमंगा शिकार की खोज में मकानके इर्द गिर्द चुपके चुपके चक्कर काट रहा हो। विनसट (चौकीदार) ने अपनी बन्दूक उठाई और सावधानी से कुत्ते के पीछे चल पड़ा।

कुत्ता उसके आगे-आगे जनरल बोनट के कुंज की ओर भागा और मैडम टोमोयसन की यादगार के समीप पहुँच, रुक गया। सावधानी से चलते हुए चौकीदार ने मैनचर कुंज के समीप मन्द-मन्द प्रकाश की रेखा देखी। थोड़ा सा और आगे बढ़कर समाधि-चिन्हों के मध्य में छिपकर उसने एक भयकर कॉड देखा।

एक पुरुष--कब्रिस्तान में कब्रखोद कर एक मुर्दा निकाल रहा था—जिसे दबाये अभी दो तीन दिन ही हुए थे। बलपूर्वक उस लाश को बाहिर खींचने में वह मस्त था। पास ही ज़मीन पर एक छोटी सी लालटेन की धीमी रोशनी में इस भयकर दृश्य को देखकर आश्चर्य में पड़ गया।

वह व्यक्ति कब्र में से लाश निकालने में व्यस्त था। इसी बीच विनसट चौकीदार वहाँ पहुँच गया। उसने उस व्यक्ति पर झपट कर उसके हाथ-पाँव बाँध दिए और नजदीक के पुलिस स्टेशन में ले गया।

उपरोक्त व्यक्ति प्राँत का एक धनी और नामी वकील था। उसका नाम था—कोरबैटेले।

उसपर मुकदमा चला। सरकारी फ़ौजदारी अदालत के वकील ने अदालत में उपस्थित लोगों को एक बार पुनः सर्जियन्ट बर्ट्रण्ड की भयानक करतूतें सुनाईं, जिसे सुन लोग भयावेश में आ गए।

उसके विचित्र अपराध को सुन लोग लज्जा से झुक गए। मैजिस्ट्रेट के कमरे में पधारते ही सारा हाल गूँज उठा—"इसे मृत्यु दंड दो, इसे मृत्यु दंड दो।"

प्रेसिडेन्ट ने कठिनाई से लोगों को चुप किया और हाल में पुनः शान्ति स्थापित की।

फिर वह गंभीर स्वर में बोला—"अपराधी। तुम्हें अपनी रक्षा के लिए क्या कहना है?"

कोरबैटेल ने अभी तक विचार सभा की सम्मति को सुनने से इन्कार किया था—अब वह गंभीर मुद्राधारण किये उठा। वह एक सुन्दर युवक था—लम्बा ऊँचा कद, विशाल तेजयुक्त चेहरा—उसके चेहरे से निडरता प्रगट हो रही थी।

लोग शोर करने लगे—परन्तु वह उससे घबराया नहीं। बल्कि वह पहले कुछ आहिस्ते से—फिर धीरे २ अपनी आवाज़ को ऊँचा करते हुए बोला:—

"दफ़नाते समय की सब भयानक गतियों के समय मेरा असह्य दुःख, एक पागल उत्तेजित पुरुष का सा था--एक शारीरिक उथल-पुथल की तीव्र वेदना।

"उसकी विदाई पर--पृथ्वी के बीच दफ़ना देने पर, मेरा मन सहसा चौंका--मैंने कुछ-कुछ परिस्थिति को अनुभव करना शुरु किया। तब वह मानसिक व्यथा के बीच में से गुज़रा--उस व्यथा के समक्ष में--जो प्रेम मैंने उससे पाया, बहुत महंगा जान पड़ता था।

"तब मुझे भूतबाधा सी हो गई।

"जब कोई व्यक्ति दिन भर एक ही ऐसी बात सोचता रहे तो निसन्देह पागल सा हो जाता है।

"ज़रा सोच कर देखिये! एक जीव है--जिसपर तुम न्यौछावर हो--जो तुम्हें अद्भुत, सर्वश्रेष्ठ, असाधारण प्राणी जान पड़ता है--उसे खोकर किसी की क्या दशा हो सकती है? सचमुच संसार भर में एक भी वैसा व्यक्ति नहीं मिल सकता--जिसके साथ उसकी तुलना की जा सके। ऐसे अद्भुत प्राणी ने यदि अपना सर्वस्व तुम्हें सौंप दिया हो--तुम्हारे साथ वह एक गुप्त सम्पर्क--एक पवित्र पावन प्रेम की स्थापना कर चुकी हो--उसकी दृष्टि तुम्हें पृथ्वी से भी अधिक विशाल जान पड़ती हो--संसार भर से अधिक सुन्दर लगती हो--जिसकी चमकती हुई दीप्तिमान निगाह व कोमल मृदु मुसकराहट तुम्हें प्रिय लगती हो, यदि ऐसा जीव तुमसे प्रेम करता हो! जब वह तुमसे बातें करे तो उसकी ध्वनी तुम्हें प्रसन्नता से घेर ले।

"और--वह प्राणी अचानक ही लुप्त हो जाय। ज़रा कल्पना ही करके देखो! ऐसा व्यक्ति--केवल तुम्हारे नेत्रों से ही दूर न हो

जाय—परन्तु सब से दूर संसार से परे, तो तुम्हारी क्या दशा होगी ?—वह 'मर' चुकी हो ! क्या तुम समझते हो कि इस शब्द का क्या अर्थ है ? नहीं—कदाचित नहीं। कहीं भी नहीं···वह जीव भी नहीं रहा ! वे आंखें—मैं कभी भी देख न पाऊंगा, कभी भी वे मृदु कोमल ध्वनि, या उससे सादृश्य रखती कोई ध्वनि—जो मेरे कानों में मिश्री घोलती थी—अब कभी भी सुन न पाऊंगा उस के शब्दों के समान कभी—एक शब्द भी सुन न सकूंगा।

"उस जैसा कभी भी कोई चेहरा उत्पन्न न होगा ! कभी नहीं···कभी भी नहीं ! मूर्तियों का ढाँचा रखकर पुनः निर्माण किया जा सकता है। टिकटें बनाने वाली मशीन भी एक जैसी कितनी ही टिकटें बनाती चली जा सकती है। परन्तु वह शरीर, वह मुखाकृति कभी भी देखने को नहीं मिल सकती !—आगे सहस्त्रों जीव उत्पन्न होंगे—हां, सहस्त्रों—लाखों—करोड़ों—शायद इससे भी कहीं अधिक···परन्तु उन सब में कभी भी ऐसी कोई युवती न उत्पन्न हो सकेगी जो मेरी प्रेमिका के ढाँचे पर बनी हो या उससे सादृश्य रखती हो। क्या यह कभी भी सम्भव न हो सकेगा ? —ऐसी २ बातें सोचते २ मनुष्य सचमुच ही पागल हो जाता है।

"वह बीस वर्ष तक जीवित रही—इससे अधिक नहीं—और अब वह हमेशा के लिए चली गई है···हां—हमेशा के लिए ही तो ! वह सोचा करती—मुसकराती···मुझ से प्रेम भी करती थी। अब उसका कुछ भी अवशेष नहीं रह गया। उत्पत्ति क्रम के दृष्टिकोण से हमारी—पतझड़ में निरन्तर मरने वाली मक्खियों से—कोई अधिक महत्ता नहीं—बिलकुल भी नहीं। मैं सोचने लगा कैसे 'उसका' शरीर, शरीर का माँस, सुन्दर अंग···इतने कोमल, स्वच्छ, धवल···

कितने आकर्षक थे ! अब वह सुडौल काया····पृथ्वी के नीचे—एक बन्द सन्दूक में पड़ी सड़ रही है ! उसकी आत्मा····उसका हृदय···· कोमल भाव ···प्रेम—सब कहाँ गया।

"अब मैं कभी उसे देख नहीं सकता ? कभी नहीं—? उसके शरीर के मूल तत्वों के निकल जाने के विचार से मेरा मन घबड़ा उठा···वह शरीर जिसे अब भी मैं लाखों में पहचान सकता था ! मैं अपने विचारों पर काबू न पा सका।

"तब मैं एक खुरपा, लालटेन और हथौड़ी लेकर चल पड़ा—और कब्रिस्तान की दीवार फांद कर भीतर पहुँच गया। उस अंधकार में भी मैंने वह सुराख खोज निकाला···जहां 'उसकी' कब्र थी ! वह अभी पूरी तरह भरी भी न थी। मैंने कफ़न को ऊपर उठाया ···और तख्ते को उठा कर एक तरफ़ फेंक दिया। तब मुझे उसमें से एक भयानक गन्ध—सड़ान की एक घृणात्मक साँस-अनुभव हुई। आह ! उसका शयन-स्थान अब भी गुलाब और चमेली के पुष्पों से सुगन्धित था।

"मैंने कफ़न खोला—और अपनी रोशनी देने वाली लालटेन झुका कर···उसे देखा। उसका चेहरा नीला···झुलसा हुआ···और भयानक था !····और काली-काली झाग उसके मुंह के बाहिर निकली पड़ी थी !

"वह···हाँ वह 'वही' थी। मुझे उसे देख कर डर लगा···पर मैंने उसकी कमर में अपनी बाँह डाली····और उस भयानक मुख को अपनी ओर खींचने के लिए उसके बाल पकड़े। उसी समय मुझे क़ैद कर लिया गया।

"सारी रात—जैसे पुरुष वासनापूर्ण आलिंगन के बाद एक

स्त्री की सुगन्ध लिये फिरता है···ठीक उसी तरह मैं उस सड़ान की गन्ध···अपनी प्रेमिका की दिव्य गन्ध लिये बैठा रहा।

"अब आपको जो करना है करें! जो दण्ड मुझे देना है—दें।"

हाल में विचित्र नीरवता छा गई। ऐसा जान पड़ता था मानों लोग कुछ और सुनने के लिए उत्कंठित हों। निर्णय पर पुर्नविचार करने के लिए पंचायत विदा हुई। जब कुछ मिन्टों के पश्चात् वे पुनः लौटे—तो ऐसा लगता था कि अपराधी निडर हो बैठा है। न वह भयभीत था···न कुछ सोच रहा था। परम्परागत ढंग से जज ने उसे सूचना दी कि वकीलों ने उसे निरपराध ठहराया है।

वह तब भी अपने स्थान से हिला-जुला नहीं···यों ही बैठा रहा। परन्तु उपस्थित जन उस निर्णय की प्रशंसा का डंका बजाने लगे।

दर्पण

नववर्ष का दिन था। सायंकाल को एक जनरल की बेटी--नेली, दिन रात विवाह के स्वप्न लेती, श्रम भरी निगाहों से थकी मांदी, आंखें मूंदे बैठी एक टक सामने की ओर देख रही थी। उसके सामने एक दर्पण पड़ा था। उस समय उसका चेहरा भी ज़र्द, पीला, उद्विग्न और दर्पण की नाईं मौन था।

अस्थिर परन्तु स्पष्ट, बहुत लम्बे और तंग बरामदे के दोनों ओर टिमटिमाती हुई मोमबत्तियों की कतारें--उसके चेहरे, हाथों और शरीर के ढांचे का दीवार पर अक्स डाल रही थीं…जो धुंधलेपन के एक अथाह सागर में घुला मिला मध्यम-सा नज़र आ रहा था।

नेली की पथराई हुई आंखों और फड़कते हुए कपालों को देख कर यह बताना कठिन था कि वह सो रही है अथवा जाग रही है!… परन्तु वास्तव में--वह सामने की ओर देख रही थी। पहले उसे किसी की--कोमल मुसकराहट और मनमोहक दृष्टि दिखाई दी, फिर धुँधलेपन में से धीरे-धीरे…उसी व्यक्ति का सिर…चेहरा…और दाढ़ी की रेखायें नज़र आईं। नेली के चिरकाल के स्वप्नों व आशाओं के केन्द्र--ये 'वही' भाग्यवान थे--! नेली के जीवन का ध्येय, आशा, उमंग, ख़ुशी और भाग्य--सभी कुछ उन्हीं में सीमित था। शीशे में नज़र आ रहे धुंधलेपन की नाईं, 'उस' व्यक्ति के

अतिरिक्त, नेली को सब कुछ धुंधला, नीरस और अर्थहीन लग रहा था। अतः इसमें आश्चर्य की बात नहीं–कि वह अपने ही सामने एक सुन्दर, मन्द-मन्द मुसकाते हुए चेहरे को देख, एक स्वर्गीय सुख का अनुभव कर रही थी।...एक अतीव सुखद स्वप्न—जिसे न कागज़ पर लिखा जा सकता है, और न ही भाषा द्वारा—वर्णन किया जा सकता है।

फिर नेली ने अपने स्वप्न के स्वामी को बोलते सुना...उसके साथ एक ही छत के नीचे वह रहने भी लगी---नेली ने अपने भविष्य को स्पष्टतया देखा।

धुंधले चित्रपट पर विविध चित्र अंकित होते चले गए।--जाड़े की एक अन्धेरी काली रात में--उसने देखा कि वह प्रान्तीय डाक्टर—'स्टैपन लूकिश' का दरवाज़ा खटखटा रही थी! वहां किवाड़ के पीछे खड़ा एक वृद्ध कुत्ता, भों! भों!" कर रहा था। डाक्टर के कमरे की खिड़कियों के पास अंधेरा छा रहा था। सब ओर निस्वता थी।

"ईश्वर के लिए दया करो—मुझ पर दया करो, डाक्टर!" नेली ने धीरे से कहा।

अन्त में कड़कड़ ध्वनि करता हुआ उस का फाटक आहिस्ता से खुला, और नेली ने देखा...उसके सम्मुख डाक्टर का रसोइया खड़ा था।

"क्या डाक्टर साहब घर पर ही हैं?" नेली ने पूछा।

"वह सो रहे हैं," रसोइये ने बहुत धीमे स्वर में कहा, मानों वह अपने स्वामी की निद्रा भंग होने से डरता हो। "वे अभी-अभी रोगियों को देखकर लौटे हैं—और उनकी आज्ञा है कि

अब उन्हें किसी कारण भी न जगाया जाय।"

परन्तु नेली ने रसोइये के शब्द सुने अनसुने कर दिये—और उसे धक्के से दूर हटा, शीघ्रता से डाक्टर के कमरे में घुस गई—कुछ अंधेरे कमरों में से भगती हुई—घबराहट में दो तीन कुर्सियों से टकराती हुई—वह डाक्टर के सोने के कमरे में पहुँच गई। डाक्टर स्टैपन लूकिश कोट उतारे अपने बिस्तर पर लेटा—मुंह खोले .खुर्राटे ले रहा था। उसके बिस्तर के पीछे पड़ा एक लैम्प धुंधला सा प्रकाश दे रहा था। डाक्टर को कुछ कहे बिना—नेली वहाँ बैठ रोने चिल्लाने लगी।—सिसकियों के कारण उसका शरीर कांप रहा था।

"मेरे पति बीमार हैं," उसने सिसकी भरते हुए कहा। स्टैपन लूकिश चुप रहा। वह आहिस्ता से उठा""सिर को हाथ का सहारा दे, निद्रत नेत्रों से एकटक आगन्तुक की तरफ़ देखने लगा।

"मेरे पति सख्त बीमार हैं," नेली ने सिसकियां रोकते हुए कहा," ईश्वर के लिए कृपा कीजिये""जल्दी से मेरे साथ चलिए""बहुत जल्दी, डाक्टर साहब।"

"हैं""ए""?""" डाक्टर ने घरघराते हुए अपने हाथ को हिलाया।

"चलिए—चलिए डाक्टर साहब, इसी समय चलिए—नहीं तो""आ""ह! डाक्टर साहब मुझ पर दया करें!"

थकी माँदी उद्विग्न नेली अपनी उमड़ती हुई अश्रुधारा को रोकने का प्रयत्न करती हुई—पति के रोग तथा अपने शोक का वर्णन करने लगी। उसके दुःखों के वर्णन से किसी पत्थर का भी दिल पसीज जाता, परन्तु डाक्टर उसकी ओर देखता रहा

····अपने स्थान से हिला तक न !

"अच्छा, कल आकर देख जाऊँगा।" डाक्टर ने धीमे स्वर में कहा।

"यह असंभव है।" नेली चिल्लाई, "मैं जानती हूँ, मेरे पति को (टायफ़ाइड़) है। जल्दी करें—इसी समय आपकी ज़रूरत है उन्हें ! चलिए, डाक्टर साहब—चलिए भी।"

"मैं···ए···एं···अभी आ—ऊं—ऊं ?" डाक्टर टूटे फूटे—शब्दों में बोला, "गत तीन दिन से मैं दिन रात बाहर रहा हूँ—तीन दिन टायफ़ाइड़ के रोगियों की चिकित्सा करता रहा। और अब···अब मैं स्वयं बहुत थका-मांदा और बीमार हूँ। अब मैं इस समय नहीं जा सकता—बिल्कुल नहीं—मुझे भी इस रोग ने आ घेरा है—देखो तो सही, मैं स्वयं बीमार हूँ।" डाक्टर ने उसकी ओर डाक्टरी थरमामीटर फेंकते हुए कहा, "मुझे ख़ुद १०४° ताप है। कैसे चल सकता हूँ, मुझ से तो बैठा भी नहीं जाता—आह, कितनी कठिनाई से बैठता हूँ ! क्षमा करना—मैं ज़रा लेटता हूँ !" और डाक्टर साहब लेट गए।

"मैं आपसे भिक्षा माँगती हूँ;" कोई आश्रय न पाते हुए उसने कहा, "मैं आपसे विनती करती हूँ। मेरी सहायता करिये···ईश्वर के लिए मेरी रक्षा करें। जैसे भी हो—मेरे साथ चलिए। मैं आपको उसका बदला चुका दूंगी, डाक्टर साहब, चलिए।"

"परन्तु मैं तो पहले ही बता चुका हूँ—कि मैं स्वयं बीमार हूँ। भला इस अवस्था में मैं कैसे चल सकता हूँ ?"

नेली झपट कर उठी—और घबड़ाती हुई कमरे में चलने लगी। किसी भी तरह क्यों न हो—वह उसे साथ ले जाना चाहती थी।

वह सोचने लगी···काश ! डाक्टर जान सकता कि उसका पति उसे कितना अमूल्य है—उसका सर्वस्व वह !—वह उसके बिना कितनी दुःखी होगी ! यदि डाक्टर यह जान पावे, तो अपनी बीमारी और थकावट को भूल वह अवश्य ही साथ चल दे। पर वह बताये भी तो कैसे ?

"डाक्टर जैमस्टो के पास चली जाँय।" स्टैपन लूकिश ने सम्मति दी।

"नहीं, नहीं, यह कैसे हो सकता है ?···और फिर वह तो यहां से २० कोस से भी अधिक दूरी पर रहता है।···मेरे पास समय बहुत कम है···मेरे घोड़े थक चुके हैं···वे इतना दूर चल भी नहीं सकेंगे। हमारे घर से आप ही का घर ३० मील है—और यहां से उतना ही दूर डाक्टर जैमस्टो का घर। नहीं, नहीं-यह असंभव है, मैं वहां नहीं जा सकती !—आइये, डाक्टर लूकिश, आप ही चलिए। मैं आपसे एक भले कार्य के लिए विनती कर रही हूँ—चलिए, यह परोपकार का काम होगा—मुझ पर आपकी बड़ी दया होगी !"

"परन्तु यह काम बहुत कठिन है। मुझे बुख़ार है···सिर चकरा रहा है···और आप समझती नहीं ? जाइये—मुझे आराम करने दीजिये।"

"परन्तु डाक्टर साहब, यह आपका कर्त्तव्य है ! आपको चलना ही होगा। आप इन्कार नहीं कर सकते, चलिये। यदि आप चलने से इन्कार करें—तो सरासर आपका यह अहमभाव है। मनुष्य को अपने पड़ोसी की रक्षा के लिए अपनी बलि तक दे देनी चाहिये—और आप···? आप इतनी सी सहायता करने में

भी हिचकिचाते हैं ?—मैं कचहरी में आपके विरुद्ध मुकदमा कर दूंगी।"

नेली ने यह कहते-कहते स्वयं ही अनुभव किया कि वह एक मिथ्या, अयोग्य अपमान कर रही है, परन्तु पति की रक्षा के लिए वह तर्क-वितर्क, तथा दूसरों के प्रति दया को दक्षता पूर्वक भूलने को प्रस्तुत थी। उसके अपमान जनक शब्दों के उत्तर में डाक्टर ने ठंडे पानी का एक गिलास पी लिया।

तब नेली एक तुच्छ भिखारिणी की नाईं याचना करने लगी। अन्त में डाक्टर मान गया। वह आहिस्ता से उठा—कपड़े बदले और उसके साथ चलने के लिए तैय्यार हो—अपना ओवर कोट ढूंढने लगा।

"यह पड़ा है आपका कोट।" नेली ने स्वयं ही उसके कोट को ढूंढते हुए कहा, "आइये ! मैं आपको पहना दूं। अब चलिए, डाक्टर साहब ! बहुत धन्यवाद आपका। आपकी इस कृपा का बदला चुकाने का मैं पूरा प्रयत्न करूंगी ! जीवन भर आपकी प्रशंसा के गुण गाऊंगी'''आपको सहस्त्रों आशीर्वाद दूंगी।"

कोट पहन कर डाक्टर फिर चारपाई पर गिर गया। नेली ने सहारा दे उसे उठाया—और घसीटती हुई हाल कमरे की ओर ले गई। रास्ते में न जाने कहाँ—डाक्टर की टोपी गिर गई। ख़ैर—आख़िर नेली डाक्टर को साथ ले, गाड़ी पर सवार हो ही गई। अब केवल ३० मील का फ़ासला तय करना था'''फिर उसके पति को डाक्टरी सहायता मिल सकेगी !

चारों ओर पूर्ण अन्धकार था—इतना गाढ़ा अन्धकार-कि उसमें हाथ तक न नज़र आता था। मन्द-मन्द शीतल पवन बह

रही थी। गाड़ी के पहियों के नीचे ठंडी मिट्टी के ढेले गुज़रते चले जा रहे थे। गाड़ीवान बार-बार रुक-रुक कर देख लेता था कि आगे किस ओर मुड़ना है।

रास्ते में नेली और डाक्टर दोनों ही चुप रहे। गाड़ी ज़ोर-ज़ोर से झकझोर हिल रही थी...परन्तु वे दोनों-न सर्दी और न धक्कों का ही अनुभव कर रहे थे।

"चलो, ज़रा जल्दी चलो!" नेली ने गाड़ीवान को आदेश दिया।

प्रातः ५ बजे थके-माँदे घोड़े अहाते में पहुँचे। नेली ने परिचित फाटक, दरवाज़ों और समीप के कुएं और अहाते की कतार को पहचाना...अब वे घर पहुंच गए थे।

"एक मिनट यहीं ठहरिये। मैं अभी आती हूँ।" नेली ने खाने वाले कमरे में डाक्टर को बिठलाते हुए कहा, "मैं ज़रा उनका हाल देख आऊं"

पति को देख, वह वापिस लौटी—तो देखा डाक्टर सोफ़े पर पड़ा कुछ गुनगुना रहा था।

"डाक्टर साहब!...कृपया...डाक्टर साहब!!"

"ऐ...डोमा से कहो..."स्टैपन लूकिश बड़बड़ाया।

क्या?"

"उन्होंने मीटिंग पर क...ज्य-हा था...वासीव में कहा था—आ...कौन?...हां...क...या...?"

नेली ने देखा डाक्टर भी उसके पति के समान ही उन्माद की दशा में था। वह घबड़ा उठी...। अब वह क्या करे?

"मैं डाक्टर जैकस्वी को बुलाती हूँ।" उसने निश्चय किया।

एक बार पुनः अन्धकार छा गया।''''एक बर्फ़ानी झोंके की सरसराहट सी हुई'''और पृथ्वी जमकर बर्फ़ का एक ढेला सा बन गई। नेली की आत्मा और शरीर दोनों अस्वस्थ से हो गए थे। पागल मन में दुःख दूर करने की तर्क शक्ति भी तो लुप्त हो जाती है।

उसी धुंधलेपन में उसने देखा'''कि किस तरह उसका पति प्रति वर्ष बसन्त के दिनों में बैंक में गिरवी रखी हुई—जायदाद का सूद अदा करने के लिए रुपयों की खोज में मारा-मारा फिरता था। न वह स्वयं सोता'''और न ही नेली सो पाती थी। दोनों घंटों बैठे अपना सिर खपाते कि कैसे अदालत के कलर्कों से मुक्ति पाई जाए।'''यहाँ तक कि सोचते-सोचते उनके सिर भी दर्द होने लगते।

उसने अपने बच्चों को देखा...जो जुकाम, खांसी, स्कारलेट फ़ीवर, डिपथीरिया से सदा ग्रस्त रहते, स्कूल में कम नम्बर पाते तथा जुदाई आदि के सदा रहने वाले विभिन्न डरों के प्रतिरूप थे। पांच छः के झुंड में से एक आध का मर जाना तो स्वाभाविक ही था।

वातावरण का धुंधलापन भी मृत्यु के गहरे प्रभाव से न बच सका। ऐसा भी हो सकता था कि उसका पति...! आख़िर पति-पत्नी एक साथ थोड़े ही मर सकते हैं। कुछ भी हो—एक दूसरे को अपने हाथों से दफ़नाता ही है—और नेली ने अपने पति को मरते हुए देखा''''। उस भयानक घटना की छोटी से छोटी बातें भी उस के सामने आ उपस्थित हुईं। उसे कफ़न, मोमबत्तियां, पादरी—यहां तक कि मुर्दा उठाने वालों के पैरों के चिह्न तक नज़र आये।

"क्यों ?—यह किसलिए है ?" अपने पति की ओर पथराई हुई आंखों से देखते हुए उसने कहा।

पति के साथ बिताये जीवन के वे दिन—पति की मृत्यु के तुच्छ मंगलाचार दिखाई दिये।

तभी नेली के हाथों से कुछ गिर—फ़र्श से जा टकराया। वह चौंकी····उछली···और पूरी तरह से नेत्र खोले। और देखा कि उसके पाँव के पास एक शीशा गिरा पड़ा था। दूसरा शीशा पूर्ववत मेज़ पर पड़ा था। उसने शीशे में देखा तो एक—पीला, मुर्झाया हुआ और आँसुओं से भीगा चेहरा दिखाई दिया। उसका धुंधलाकार दिवा स्वप्न अब समाप्त हो चुका था।

एक चैन की साँस लेते हुए उसने सोचा—"शायद मैं सो रही थी।"

सन्देह

रात को खाना खाने के बाद पुरुष सिगरेटें पीते हुए बातें करने लगे। अचिन्तित दान-पत्रों व अनोखे ढंग से प्राप्त पैतृक-धनों के विषय में बातें करते-करते—मोनसियर डी ब्रूमेन्ट, जो मित्र मंडल में 'नामवर डाक्टर', तथा 'प्रसिद्ध वकील' के नाम से प्रसिद्ध था, कुछ सोचते हुए, अपनी कुर्सी से उठा और अंगीठी के ऊपरी भाग का सहारा ले खड़ा होगया। सब उसकी ओर देखने लगे।

"मैं एक उत्तराधिकारी की खोज में हूँ—जो भयानक दशा में घर छोड़ भाग निकला था। यह किस्सा साधारण जीवन की एकऐसी सरल साधारण घटना है—जो किसी ही दिन घट सकती है—परन्तु है सचमुच ही भयानक। यह घटना इस प्रकार है," वह कहने लगा:—

"लग भग ६ मास हुए मुझे एक मरणासन्न स्त्री ने बुला भेजा, जो मुझ से कहने लगी:—

"महाशय! मैं आप को एक कोमल परन्तु कठोर कार्य समझाना चाहती हूँ—संभवतः वह आप को बहुत कठोर तथा दुष्कर जान पड़े। कृपया सामने मेज़ पर पड़े वसीयतनामे को गौर से देखिए। यदि आप वसीयतनामे के अधिकारी को ढूंढने में असफल रहें, तो मैं आप के नाम ५,००० .फ्रैंक छोड़ रही हूँ—और यदि उसे ढूंढने में आप सफल हुए—तो १००, ००० .फ्रैन्क। मेरी हार्दिक अभिलाषा है कि मेरी मृत्यु के बाद जैसे भी हो, आप मेरे

पुत्र को ढूंडने का प्रयत्न करें ।"

सुगमता से बात चीत करने के लिए उसने बिस्तर में पड़े-पड़े ही मेरे हाथ का आश्रय लिया—मैंने उसके सिर के नीचे तकिये का सहारा दे दिया—जिससे वह अधबैठी अवस्था में बातें करने लगी। उसकी आवाज़...टूटती सी....रुक-रुक कर...हांपती हुई गले में ही सीटी सी बजा कर रुक सी रही थी।

यह एक भड़कीला बहुमूल्य मकान था। आधुनिक कीमती साज़-सामान से सुसज्जित कमरे—जिन में मोटे-मोटे शानदार पर्दे लटक रहे थे। यह कमरा जिसमें उसकी चारपाई पड़ी थी—मां के दुलार के समान कोमल था। इतना शान्त—कि हर शब्द चूस लेता सा जान पड़ता था।

मरणासन्न स्त्री बोली:—

"मेरी यह भयानक कहानी सुनने वाले तुम पहले व्यक्ति हो। मैं चाहती हूँ—किसी तरह तुम्हें अन्त तक सब सुना सकूं। तुम दयालु और अनुभवी जान पड़ते हो—इस लिए तुम्हें सब कुछ बताने का साहस कर सकती हूँ....मुझे आशा है—सुनकर—तुम मेरी सहायता करोगे!

"सुनो।

"विवाह से पूर्व मैं एक पुरुष से प्रेम करती थी...परन्तु मेरे माता-पिता ने यह सब जानते हुए भी उससे मेरा सम्बन्ध करना अस्वीकार किया—क्योंकि वह धनी न था। मेरे प्रेमी के विवाह प्रस्ताव की अवहेलना कर, माता-पिता ने एक धनी पुरुष से मेरा सम्बन्ध पक्का कर दिया। कम उम्र नवयुवतियों की नाईं मैंने भी अनाड़ीपन, अज्ञानता, भय, आज्ञापालन के भाव से सोचे समझे

बिना उससे शादी कर ली । मेरी एक सन्तान हुई—एक पुत्र। कुछ वर्षों पश्चात् मेरे पति की मृत्यु होगई। वह व्यक्ति—जो मेरा प्रेमी था....उसका भी किसी अन्य स्त्री से विवाह हो चुका था जब उसने मेरे विधवा होने का समाचार सुना—तो वह बहुत दुखी हुआ, क्योंकि अब वह भी मुझ से विवाह करने के लिए स्वतन्त्र न था। तब वह मुझे मिलने आया—और सिसक-सिसक कर रोते हुए उसने मेरे हृदय को विदीर्ण करने वाले शब्द कहे—मुझे इस दशा में देख ,वह भी शोक से विकल हो रहा था। हम दोनों में पुनः मैत्री होगई। संभवतः मेरा बार-बार उसे मिलना मेरी भूल थी।

"इसके आगे क्या हुआ—सोचते ही मेरा माथा चकरा जाता है।

"...मैं एकदम एकाकी, दुःखी व निराश थी और अभी तक मेरे मन में 'उसके' प्रति प्रेम भाव थे !

"माता पिता भी स्वर्ग सिधार चुके थे—अतः संसार भर में केवल वही मेरा प्रेम पात्र था। वह प्रायः रोज़ शाम के समय मेरे घर आने लगा—और सांयकाल हम दोनों इकट्ठे ही व्यतीत करने लगे। संभवतः—मुझे रोज़-रोज़ उसे आने से रोकना चाहिये था.... परन्तु मैंने ऐसा न किया ! मेरे हृदय में उसे रोकने का सामर्थ्य न था—शक्ति न थी।

"कैसे कहूँ ?—वह मेरा प्रेमी बन गया। यह सब कैसे हुआ ? मैं स्वयं नहीं जानती ! क्या कभी कोई यह जान सकता है ? तुम स्वयं ही सोच सकते हो कि जब दो प्रेमी हृदय प्रेम की अदम्य शक्ति के द्वारा परस्पर खींचे जाते हैं—तो इसके अतिरिक्त और

क्या होगा ? क्या तुम्हारा विचार है—कि जिस व्यक्ति से हम सीमा रहित प्यार करते हैं—उसकी प्रार्थना, विनती, आंसू, दीवाने उन्मत्त शब्दों और प्रचन्ड प्यार की लालसा को रोकने, बाधा पहुँचाने या तिरस्कार करने की सामर्थ्य हम में है ? जिस व्यक्ति को, हर संभव प्रसन्नता का ताज पहनाने, की हमारी हार्दिक इच्छा हो, क्या हम उसे ये सब कुछ न दे, निराश कर सकते हैं ?—केवल संसारी, झूठी, प्रचलित इज्ज़त के पालन के लिये ? नहीं—कदापि नहीं। फिर ऐसा करने के लिए कितनी प्रचण्ड शक्ति की आवश्यकता है ? समस्त .खुशी का त्याग··· आत्म-त्याग और धार्मिक अपस्वार्थ) सचमुच ही—ऐसा करना असंभव है।

"संक्षेप में, मैं उसकी प्रेमिका थी—और प्रसन्न थी। दो वर्ष तक मेरी प्रसन्नता बनी रही। मैं उसकी पत्नी की सहेली बन गई···यही मेरी दुर्बलता और कायरता का पग था।

"मैंने और मेरे प्रेमी ने मिलकर—मेरे लड़के की देख रेख की। उनका पालन पोषण किया, शिक्षा की उचित व्यवस्था की···उसे एक योग्य व्यक्ति बनाया····निपुण, होनहार, बुद्धिमान, दृढ़संकल्पी विशाल हृदय और उदारचित्त। अब वह १७ साल का प्रतिभाशाली नवयुवक था ! मेरा लड़का—मेरे प्रेमी को उतना ही चाहता था, जितना कि मैं···क्योंकि उसने हम दोनों से एक सा प्यार और ध्यान पाया। प्यार से वह मेरे प्रेमी को "शम" कह कर पुकारता था। जीन ने उससे सर्वदा योग्य व अच्छी बातें ही सुनी व सीखीं ···अतः वह उसका सम्मान करने लगा। जीन के लिए वह धर्म, सम्मान, साधुता, पवित्रता, प्रेम और शुद्धता का योग्य उदाहरण

था। जीन केवल इतना ही जानता था कि वह व्यक्ति उसकी माता का पुराना वफ़ादार मित्र है—अतः वह एक धार्मिक पिता, रक्षक, मित्र और सज्जन पुरुष है—इससे अधिक उसे कुछ भी ज्ञात न था।

"एक दिन सांयकाल को हम तीनों ने इकट्ठे खाना-खाना था। (यही मेरी काहनी का दुःखदायक तत्व है) मैं अपने प्रेमी और पुत्र की प्रतीक्षा में बैठी सोच रही थी कि उन दोनों में से पहले कौन आवेगा! दरवाज़ा खुला···मेरे चिरपरिचित प्रिय मित्र ने भीतर प्रवेश किया। मैं बाँहें फैला····खुशी से उसे मिलने गई···और उसने मुझे आलिङ्गन में ले, प्रसन्न मुद्रा से मेरा एक दीर्घ चुम्बन लिया। तभी अचानक एक आवाज़···धीमी सी खड़खड़ाहट···वायु में मिली सी···एक धीमि सी ध्वनि सुनाई दी।···एक ऐसी गुप्त हलचल··जिसमें किसी व्यक्ति की उपस्थिति का बोध हो! यह ध्वनि सुन हम दोनों ही—चौंक कर दरवाज़े की ओर मुड़े···मेरा लड़का 'जीन' दरवाज़े में खड़ा···क्रोध से लाल पीला होता हुआ हमारी ओर घूर रहा था।

"क्षण भर के लिए मैं अवाक् सी रह गई··और मूर्तिवत् खड़ी की खड़ी रह गई—फिर पीछे मुड़ी—और पुत्र की ओर प्रार्थना के लिए हाथ बढ़ाये—परन्तु वह जा चुका था।

मेरा प्रेमी और मैं—हम दोनों इकट्ठे दबे से···कुछ बोलने में असमर्थ मूक खड़े थे।···फिर मैं आराम कुर्सी पर जा गिरी। एक धीमी तथा प्रबल इच्छा हुई कि कहीं भाग निकलूं···रात्रि के गाढ़े अंधकार में कहीं खो जाऊं···सर्वदा के लिए कहीं लुप्त हो जाऊं···परन्तु ऐसा कर न सकी। फिर बार-बार हिलती हुई दुःख के

झोंके से कंपकंपाती, सिसकियाँ भर-भर कर मैं रोने लगी। मेरी आत्मा के टुकड़े-टुकड़े हो गए। हृदय विदीर्ण हो गया। नसें एक विचित्र भयानक स्थिति में पड़ गईं.....। जैसा कि एक माँ के लिए ऐसी दशा में स्वभाविक ही है—मैंने एक तीव्र लज्जा अनुभव की। तीव्र दुःख ने मुझे चारों ओर से घेर लिया।

"मेरे प्रेमी ने डरते हुए मेरी ओर देखा—मेरे निकट आने, बात करने या स्पर्श का उस में साहस ही न रहा था। शायद उसे भय था कि कहीं लड़का पुनः न आ जाय। अन्त में उसने दबे हुए स्वर में कहा—"मैं जाकर उसे देखता हूँ। मैं उससे बातें करूंगा.... सारा किस्सा उसे विस्तारपूर्वक बताऊंगा, समझाऊंगा...मैं उसे ज़रूर मिलूंगा।....उसे सब कुछ जानना ही चाहिए।

"और मुझे छोड़ वह चला गया। मैंने देर तक प्रतीक्षा की......घबड़ाते हुए.......हर खटके पर कांपते हुए, भयातुर हो। अँगीठी में जल रही आग के हर शोले की ध्वनि पर मुझे एक अकथनीय, असह्य भाव का अनुभव हो रहा था! मैंने एक...दो... घंटे तक प्रतीक्षा की। अब मेरा भय बढ़ने लगा।

"मेरा लड़का कहां था? वह क्या कर रहा था?

"आधी रात के लगभग मेरे प्रेमी द्वारा लिखा एक छोटा सा पत्र मुझे मिला—जोकि मुझे ज़बानी याद है—

"क्या तुम्हारा लड़का वापिस आ गया है?—मुझे वह नहीं मिला। मैं नीचे खड़ा हूँ। रात बहुत बीत चुकी है—इसीलिए ऊपर नहीं आ रहा।

"मैंने उसी काग़ज़ के टुकड़े पर पेन्सिल से लिख भेजा—"जीन वापिस नहीं आया, जैसे भी हो तुम उसे ढूंढो।'

"मैं रात आराम कुर्सी पर प्रतीक्षा में ही बिता दी।"

"मैं पागल सी हो रही थी''ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाना चाहती थी, भागना दौड़ना''ज़मीन पर लोटना''परन्तु यह सब न कर, मैं चुपचाप बैठी प्रतीक्षा करती रही। अब क्या होगा?—मैंने अनुमान लगाने के बहुत प्रयत्न किये। परन्तु सब प्रयत्नों के बावजूद—मन की चिन्ता के विरुद्ध—मैं वास्तविक सत्य को न देख सकी।

"फिर मुझे भय हुआ—कि शायद वे दोनों मिले हों।—उन्होंने क्या किया होगा—? लड़के ने क्या किया होगा?—भयानक चिन्ताओं, उतावली संभावनाओं ने मेरे समस्त शरीर को शिकंजे में जकड़ लिया। तुम मेरी भावनाओं को समझ सकते हो—? हैं—?

"मेरी नौकरानी जो कुछ भी समझ न रही थी''कि क्या हो रहा है—बार-बार मेरे पास आने लगी''पर हर बार मैं उसे लौटा देती—। अन्त में वह मुझे अस्वस्थ स्थिति में समझ, डाक्टर को बुलाने चली गई। डाक्टर ने आकर देखा—और कहा कि मुझे गम्भीर 'नरवस अटैक' है। मुझे बिस्तर में लिटा दिया गया।

"जब मेरी मूर्च्छा भंग हुई''मानसिक ज्वर के घटने के बाद-मैंने देखा मेरे बिस्तर के पास—अकेला—मेरा प्रेमी खड़ा था! मैं चिल्ला उठी—"मेरा लड़का! जीन? कहाँ है जीन?"

उसने कुछ उत्तर न दिया।

मैं लड़खड़ाते स्वर में बोली—"मर गया?....मर गया? क्या उसने आत्मघात कर लिया?

''नहीं, नहीं—'उसने उत्तर दिया, ''मैं शपथ खाकर कहता हूँ—उसने ऐसा नहीं किया। परन्तु मेरे सब प्रयत्नों के बावजूद भी मैं उसे ढूंढ नहीं सका।'

इसपर अचानक भीषण क्रोध से कांपते हुए मैंने कहा, (कई बार अचानक इतना क्रोध हम पर काबू पा लेता है कि हमें सुध नहीं होती कि हम क्या कर रहे हैं) ''जब तक तुम उसे न ढूंढ सको—मैं तुम्हें यहां आने अथवा मुझ से मिलने की मनाही करती हूँ। अब जाओ—चले जाओ।'

''वह चला गया—और उस दिन के बाद उन दोनों को ही मैंने कभी नहीं देखा...। पिछले २० वर्ष मैंने इसी तरह एकाकी ही काटे हैं। क्या तुम ऐसे जीवन के विषय में सोच सकते हो?—क्या तुम एक मां के हृदय को कुतरने वाली असह्य यातना का अनुभाव लगा सकते हो? एक स्त्री के मन का एक असह्य निरन्तर सन्देह—जिसका कहीं कोई अन्त नहीं—? नहीं...अब उस सन्देह का अन्त हो रहा है—क्योंकि—अब मैं मर रही हूं। मैं उन दोनों को देखे बिना ही मर जाऊंगी? दोनों में से एक को भी....। मेरा मित्र गत २० वर्षों से निरन्तर हर रोज़ मुझे पत्र लिख रहा है—परन्तु हर रोज़ मैं उसे इन्कार करती आई हूँ। मैं उसे एक क्षण भर के लिए भी मिलने को राज़ी नहीं हुई।—क्योंकि मेरे मन में एक विचित्र भावना थी—कि जिस समय वह आवेगा—उसी वक्त मेरा लड़का भी कहीं से आ उपस्थित होगा।...मेरा लड़का—प्रिय जीन। क्या वह मर गया है?....क्या वह जीवित है? वह कहां छिप रहा है?....कहीं समुद्र के पार...किसी दूर देश में—इतनी दूर—कि मैं उसका नाम तक नहीं जानती। क्या वह कभी मेरे विषय में

सोचता होगा ? आह ! यदि वह सब बात जान पाता तो ?—बच्चे कितने कठोर होते हैं....। वह असीम दुःख जो मैं उस केक रख भुक्त रही हूँ—क्या वह जानता है ? वह यातना...वह दुःख.... जिस का कारण स्वयं 'वह' है। और व्यथा युवाकाल से लेकर अन्तिम दिन तक मैंने भोगी ! मैं—उसकी माँ—जो माँ की स्वाभाविक प्यार की उमंग से उस पर न्यौछावर थी । कठोर—कटु— क्या यह कठोरता नहीं—जो मैंने अभी-अभी तुम से कहा—उसे बताना। अच्छा,—मेरे अन्तिम शब्द जीन तक पहुँचाना—

"मेरे बच्चे ! मेरे परम प्रिय बालक, दुःखी मनुष्य जाति पर इतनी कठोरता न करो। जीवन तो स्वयं ही काफ़ी कठोर और भयानक है। मेरे प्रिय बालक, ज़रा सोचो तो सही, जब से तुमने अपनी माँ को छोड़ा है—उसका जीवन कितना दुःखमय हो गया है ! मेरे प्रिय बेटा ! उसे क्षमा करो ! अब…जबकि वह मर चुकी है…तुम उससे सहानुभूति करो…प्रेम करो ! क्योंकि उसे बहुत पश्चाताप और भय व कठिनाइयों में से गुज़रना पड़ा है !"

साँस लेने के लिए वह जरा सा रुकी—। कांपती हुई…मानों यह सब वह अपने पुत्र को ही कह रही हो।

" 'तुम उससे यह भी कह देना कि उस दिन के बाद… मैं 'उससे' दूसरे व्यक्ति से भी, नहीं मिली।'

वह चुप हो गई। कुछ क्षण रुकने के बाद कुछ टूटती हुई आवाज़ में उसने कहा…"अब कृपया मुझे अकेला रहने दो ! मैं एकाकी ही मरना चाहती हूँ। क्योंकि उन दोनों में से कोई भी इस समय मेरे पास नहीं है !'

माटरे डी ब्रूमेन्ट ने कहा—"मैं रोते हुए मूक जानवर की

नाईं उस घर से निकल पड़ा। और गाड़ी में बैठा इतना रोया कि कोचवान बार-बार मुड़ कर मेरी ओर देखने लगा !—

उसके लड़के को मैं अभी तक ढूंढ़ नहीं सका—। उस अभागे लड़के को। तुम जो चाहते हो कहो—परन्तु मैं तो उसे एक अपराधी पुत्र ही कहूँगा।"

एक परिवार

आज मैं पन्द्रह वर्ष के बाद अपने मित्र साइमन को मिलने जा रहा था। १५ वर्ष पूर्व वह मेरा घनिष्ट मित्र होता था और मैंने अनेकों सन्ध्यायें उसकी आनन्दमयी संगत में बिताई थीं। वह ऐसे व्यक्तियों में से था जिन्हें मनुष्य अपने मन की गोपनीय बातें भी बता सकता है--जिनसे बातें करते समय हमें उनकी चातुर्य सूक्ष्म दृष्टि और अद्वितीय ज्ञान का बोध होता है।

वर्षों तक हम एक साथ रहे थे; इकट्ठे ही रहे, सोचा, और इकट्ठे ही जीवन स्वप्न बनायें। हम एक सी चाह से ही एक जैसी चीज़ें पसन्द करते, एक सी ही पुस्तकों की प्रशंसा करते और कई व्यक्तियों का इकट्ठे ही मज़ाक उड़ाते। अर्थात् हम दोनों के मनोभाव बहुत मिलते जुलते थे। आँख के इशारे से हम एक दूसरे की बात समझ लेते थे।

तब उसने विवाह कर लिया--और वह भी एक छोटी सी साधारण ग्रामीण कन्या से--जो पैरिस में वर की खोज में आई थी! उस छोटी सी फीके रंग की, क्षीण हाथों व दुबली देह वाली कन्या ने इस बुद्धिमान विचार शील नवयुवक को कैसे आकर्षित किया, यह बड़ी आश्चर्य की बात थी। निसन्देह साइमान भी गृह के चिरस्थायी शान्त, साधारण उल्लास का इच्छुक था और जब पहले पहल उसने इस कन्या को देखा, तो उसे इसकी आँखों में यह सब कुछ नज़र आया।

उसने स्वप्न में भी न सोचा होगा कि एक सजीव पुरुष, साधा-

रगा जीवन की वास्तविकता को पहिचानते ही उससे उकता जाता है।

मैं सोच रहा था कि अब जब मैं उसे इतने वर्षों के बाद मिलूंगा तो वह कैसा होगा ? क्या वह पूर्ववत् ही साहसी, सजीव व बुद्धिमान होगा या ग्रामीण जीवन के कारण उसकी मानसिक वृत्तियां जड़ हो गई होंगी ? पन्द्रह वर्ष तो मनुष्य को बदलने के लिए बहुत हैं।

गाड़ी एक छोटे से स्टेशन पर रुकी। मेरे गाड़ी के डिब्बे से निकलते ही एक हृष्ट पुष्ट व्यक्ति "जार्ज, जार्ज !" पुकारता हुआ मेरी ओर बढ़ा। उसकी गालें उभरी हुई और लाल थीं और तोंद निकली हुई थी।

मैंने उसे आलिङ्गन में ले लिया, परन्तु पहचान न सका। फिर मैंने आश्चर्यान्वित हो पूछा: "हे ईश्वर ! तुम अभी तक दुबले नहीं हुए ??"

उसने हंसकर उत्तर दिया; "अच्छा खाना-पीना, अच्छा रहन-सहन और अच्छी रातें ! खाना और सोना--यही तो मेरा जीवन है।"

मैंने उसकी ओर ध्यान से देखा—और उसमें उसके उन चिर-परिचित नक्सों को पहचानने का प्रयत्न करने लगा—जिन्हें मैं कभी बहुत प्यार करता था। केवल उसके नेत्र पूर्वत् थे—यद्यपि उनमें वह पहले वाला तेज न रहा था। मैंने मन ही मन कहा, "यदि आँखें मनुष्य के मन को प्रतिबिम्बित करती हैं, तो इसके मस्तिष्क के पहले वाले विचार भी नष्ट हो चुके हैं—वे विचार जिन्हें मैं भली भाँति जानता था।

फिर भी उसकी आँखों में उल्लास था, मैत्रीभाव था, घनिष्ठता थी, परन्तु उनमें वह प्रखरता और ज्ञान के भाव न थे जो मनुष्य के मन का मूल्य प्रमाणित करने में शब्दों से भी अधिक स्पष्ट

होते हैं। सहसा वह बोला:

"ये हैं मेरे बड़े दो बच्चे! एक चौदह वर्ष की कन्या थी जो लग-भग एक हृष्ट-पुष्ट स्त्री नज़र आती थी और दूसरा तेरह वर्ष का एक लड़का था, जिसने विद्यार्थियों के से कपड़े पहन रखे थे। और वह बहुत झिझकता और घबड़ाता हुआ सा आगे बढ़ रहा था। मैंने धीरे से पूछा: "ये दोनों तुम्हारे बच्चे हैं?"

"हाँ" उसने हंसते हुए उत्तर दिया।

"कुल कितने हैं?"

"पाँच! तीन घर हैं।"

यह उसने गर्वपूर्ण, संतोष तथा विजयी भाव से कहा था और मुझे उस खोखले व्यक्ति पर बड़ी दया आई, जिसने केवल अपने वंश और जाति की वृद्धि की और जिसने ग्राम में घृणात्मक सुख और आनन्द में ही सब रातें बिता दीं।

मैं घोड़ा-गाड़ी में चढ़ गया। वह स्वयं ही उसे चला रहा था। और हम शुष्क निर्जीव, ऊंघते हुए से कस्बे की गलियों में से गुज़रने लगे—जहां एक दो कुत्तों के अतिरिक्त कुछ दिखाई न देता था। कहीं-कहीं अपनी दुकान के दरवाज़े पर खड़ा हुआ कोई दुकानदार अपना टोप उतार आदर प्रदर्शित कर देता था। साइमन उसे उत्तर दे कर मुझे झट से उसका नाम बताता था—निसन्देह वह मुझे बता देना चाहता था कि वह वहां के सभी लोगों से परिचय रखता है। और तभी मुझे ख़्याल आया कि वह असेम्बली का सदस्य बनना चाहता था—जैसाकि, सभी प्रान्तीय लोग स्वप्न लेते हैं।

शीघ्र ही हम कस्बे के बाहर पहुंच गए। घोड़ा-गाड़ी एक बाग

की ओर घूमी--और एक मीनारों वाले मकान के सामने जाकर रुक गई।

"यही है मेरी झोंपड़ी।" साइमन ने जान बूझ कर इस ढंग से कहा कि मैं उसकी बात का विरोध कर उसके मकान की प्रशंसा करूं। अतः मैंने उत्तर दिया कि वह बहुत सुन्दर घर है।

सीढ़ियों पर एक स्त्री आई--स्पष्टतया उसने अतिथि के स्वागत के लिए विशेष कपड़े पहन रखे थे, उसके केश भी विशेष ढंग से सजे थे और अतिथि सत्कार के योग्य कुछ वाक्य भी वह पहले से ही तैय्यार कर आई लगती थी। अब वह १५ वर्ष पहले वाली फीके ढंग की निर्जीव कन्या न थी--बल्कि अब तो वह हृष्ट पुष्ट घुंघराले बालों वाली, अनिश्चित आयु की उन बुद्धिहीन युवतियों में से नज़र आती थी जो स्त्रीत्व सौन्दर्य के सभी गुणों से रहित होती हैं। संक्षेप में वह एक मां थी—एक माँस का बड़ा गोला अथवा एक पली हुई घोड़ी....एक ऐसी मांस से बनी मशीन जो अपने बच्चों और घर के व्यय आदि के अतिरिक्त, अन्य किसी बात को सोचे समझे बिना बच्चे उत्पन्न कर सकती थी।

उसने मेरा स्वागत किया। तब मैं उस हाल कमरे में पहुंचा, जहां तीनों बच्चे अपनी अपनी ऊंचाई के अनुसार कतार बांधे मेरे स्वागत के लिए ऐसे खड़े थे मानों कोयज़ा होने वाले 'मेयर' के लिए खड़े हों। "अच्छा! ये हैं आप के शेष तीन बच्चे?" मैंने पूछा। साइमन ने प्रसन्नता से गद्-गद् होकर उन सब के नाम बताने शुरू कर दिये, "जोन, सूफ़ी और गान्ट्रन।"

बैठक का दरवाज़ा खुला। मैं अन्दर गया। सामने एक कुर्सी पर धंसा हुआ, कम्पायमान लकवा ग्रस्त वृद्ध बैठा था। श्रीमती

रैडेविन ने आगे बढ़ते हुए कहा "ये मेरे बाबा हैं--इस समय इनकी आयु ८७ वर्ष के लग भग है।" और फिर वह उस कांपते हुए वृद्ध के कानों में चीख कर बोली, "बाबा! यह साइमन के एक मित्र हैं।"

मुझे नमस्कार करने का प्रयत्न करते हुए वृद्ध बड़बड़ाया, "अवो—अवो—अवो" और अपने हाथ हिला दिए।

कुर्सी पर बैठते हुए मैंने उत्तर दिया, "कृपा है आप की!"

तभी साइमन ने भीतर आते हुए हंसकर कहा, "अच्छा, तुम्हारा बाबा से परिचय हो गया ? हमारे बाबा सचमुच एक अमूल्य व्यक्ति हैं। वह बच्चों के हंसी मज़ाक का साधन हैं। लालची इतने हैं कि हर खाने पर जान तक देने को तैय्यार हो जाते हैं यदि इन्हें मनमानी करने दी जाय तो न जाने क्या खा जायं। परन्तु तुम ये सब कुछ अभी-अभी देख ही लोगे--सब कुछ! ये मिठाइयों की ओर ऐ देखते हैं मानों यह सुन्दर कन्यायें हों! तुमने इससे अधिक अद्भुत चीज़ें कभी न देखी होंगी—खैर तुम अभी स्वयं ही देख लेना।"

तब मुझे मेरा कमरा दिखाया गया, जहां मैं खाने के लिए कपड़े बदल आऊं। सीढ़ियों पर अपने पीछे की ओर देखा तो पांचों बच्चे और उनके पिता मेरे पीछे-पीछे आ रहे थे—निसन्देह मुझे पथ प्रदर्शन करने के अभिप्राय से ही।

मेरे कमरे की खिड़कियाँ बाहर खेतों की ओर खुलती थीं। सामने लम्बे-लम्बे गेहूं जौ और घास के हरे भरे खेत एक अथाह सागर से जान पड़ते थे जिन में कहीं भी ऊंचे वृक्ष अथवा ऊंचाई नीचाई न थी। वे एक ऐसा आकर्षक और शोकजनक दृश्य उपस्थित कर रहे थे—जो उस घर के जीवन का सूचक जान पड़ता था।

घंटी बजी। यह खाने की घंटी थी। मैं नीचे खाने के कमरे में गया। श्रीमती रैडेविन ने सम्मान-प्रदर्शन करने के लिए मेरा हाथ अपने हाथ में ले लिया और हम खाने के कमरे में पहुँचे। एक नौकर बाबा की पहियों वाली कुर्सी को धकेल लाया और बाबा चकित ललचाई आंखों से इधर उधर देखने लगा। उसका कांपता हुआ सिर कठिनता से एक तश्तरी से दूसरी तश्तरी पर घूम रहा था।

साइमन ने अपने हाथ मलते हुए कहा, "तुम इन्हें देखकर आज खूब हंसोगे।" सब बच्चे समझ गए कि अब मुझे बूढ़े बाबा का तमाशा दिखाया जायगा और अपने अनुमान के अनुसार वे सब हंसने लगे। उनकी मां भी ज़रा सा मुसकराई—परन्तु कंधों को हिलाती हुई चुप हो गई। साइमन ने हाथों की दुंदभी बनाते हुए बाबा से चिल्ला कर कहा: "आज मीठे चावल बने हैं बाबा!" बाबा का झुर्रियों—भरा चेहरा खिल उठा। उसका सारा शरीर कांपने लगा जिस से ऐसा जान पड़ता था कि वह साइमन की बात समझ गया है और बहुत प्रसन्न है। खाना आरम्भ हुआ।

"ज़रा देखो तो!" साइमन धीरे से गुनगुनाया। बाबा को 'सूप' पसन्द नहीं आया और वह उसे पीना न चाहता था। परन्तु उसे उसके स्वास्थ्य के हित के लिए पीने पर बाध्य किया गया। नौकर उसकी इच्छा के विरुद्ध ज़बर्दस्ती सूप के चमचे उसके मुंह में डालने लगा—बाबा ने ज़ोर-ज़ोर से चीखें मारीं ताकि सूप कहीं उसके अन्दर न चला जाय। परिणाम स्वरूप सारा सूप उसके मुंह से धार की नाईं मेज़ और उसके इर्द गिर्द बैठे लोगों पर जा गिरा। बच्चे यह दृश्य देख हंसी से लोट पोट होने लगे और उनके पिता ने प्रसन्नता से गद्गद् होते हुए कहा "क्यों, देखा

कितने विचित्र हैं हमारे बाबा ! अच्छा चुटकुला है !"

जितनी देर खाना चलता रहा—सारा परिवार—उन्हीं में उलझा रहा। बाबा मेज़ पर रखे विविध भोजनों को अपनी आंखों से निगल रहा था—और कांपते हुए हाथों से तश्तरी को अपनी ओर खींच रहा था ! वे लोग उन्हें ज़रा सा और दूर कर देते थे ताकि वे उसके हाथों की कंपकंपाती खड़खड़ाहट देख सकें—और उसके मन, आंखों—कानों व नाक की दर्द भरी प्रार्थना सुन सकें। वह उत्सुकता पूर्ण, कुछ अनभिज्ञ शब्द बड़बड़ाता हुआ मेज़ पोश के साथ हाथ पोंछ लेता था—। सारा परिवार इस भयानक भद्दे दृश्य को देख हंसता रहा।

फिर उन्होंने रोटी का एक टुकड़ा उसकी तश्तरी में रख दिया—जिसे वह बहुत लालच भरी घबराहट से निगलने लगा ताकि शीघ्रातिशीघ्र और ले सके ! मीठे चावल मेज़ पर पहुँचते ही उसे मूर्च्छा सी आ गई—और वह लालचवश कराहने लगा। प्रान्टेन ने उससे कहा : "तुम पहले बहुत कुछ खा चुके हो। अब तुम्हें ये नहीं मिलेंगे।" यह कह कर उसे चिढ़ाने लगा। बूढ़ा चिल्लाने लगा—केवल चिल्लाने ही न लगा बल्कि पहले से भी कहीं अधिक कांपने भी लगा ! सारे बच्चे हंसने लगे। थोड़ी देर उसे तंग करने के बाद उन्होंने थोड़ा सा अंश उसे दे दिया। चावलों का पहला ग्रास खाते ही बूढ़े ने एक आनन्द सूचक और ललचाई हुई ध्वनि पैदा की और गर्दन को इधर उधर ऐसे हिलाया जैसे बत्तख बड़ा ग्रास मुंह में डालने पर करती है। उसे खाकर—बूढ़ा और माँगने लगा। और ज़ोर-ज़ोर से पैर पटकने लगा'

इस भयानक भद्दे वृद्ध पर मुझे बहुत दया आई और मैंने

कहा : "इसे और चावल नहीं दोगे क्या ?"

"नहीं नहीं बिल्कुल नहीं—। यदि यह और खायेगा तो इसके स्वास्थ्य के लिए बड़ा हानिकारक सिद्ध होगा।" साइमन ने कहा।

मैं चुप हो, साइमन के इस शब्दों पर विचार करने लगा। आह तर्क ? आह बुद्धि ? आह ज्ञान ? इस आयु पर ! उसके स्वास्थ्य के लिए उसे उसकी अन्तिम अभिलाषा से वंचित रखते हैं ! उसका स्वास्थ्य ? इस वृद्ध का स्वास्थ्य ? कांपते हुए, लकवा ग्रस्त स्वास्थ्य से यह करेगा क्या ? वे कहते हैं—वे इसके स्वास्थ्य की भलाई चाहते हैं ! इसके जीवन की रक्षा ? कितने दिन ? बस, बीस, तीस, पचास अथवा सौ दिन और ? किस लिए ? स्वयं उसके लिए ? या कुछ काल और इस भद्दे दृश्य को अपने परिवार में कायम रखने के लिए ?

उसके लिए अब जीवन में रखा ही क्या था—कुछ भी तो नहीं ! उसकी एक ही लालसा शेष थी—एक ही उल्लास; क्यों न उसकी उस इच्छा की पूर्ति कर दी जाय !

काफ़ी देर तक ताश खेलने के बाद मैं अपने कमरे में चला गया और जाकर लेट गया। मेरा मन बैठा सा जा रहा था—मैं उदास हो गया—उदास—उदास। मैं खिड़की में जा कर बैठ गया ! दूर कहीं वृक्ष पर बैठे एक पक्षी के कलरव के अतिरिक्त शेष चारों ओर पूर्ण नीरवता थी। निसन्देह पक्षी धीरे-धीरे उस कोमल स्वर से अण्डों पर बैठी अपनी साथिन व प्रियतमा को बुला रहा था।

और मुझे अपने मित्र के पांच बच्चों का ध्यान आया—मैं सोचने लगा कि वह बेचारा अपनी उस मोटी भद्दी स्त्री के पास लेटा खर्राटे भर रहा होगा !